भारत काव्य पीयूष

प्रधान सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता

वैश्विक हिन्दी संस्थान

ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

भारत काव्य पीयूष

सम्पादक मण्डल

अलका प्रमोद (भारत)
आरती ‘लोकेश’ (यू.ए.ई.)
मधु गोयल (भारत)
मधु चतुर्वेदी (भारत)
विनीता मिश्रा (भारत)
शैल अग्रवाल (यू.के.)
सी. कामेश्वरी (भारत)
हरिहर झा (ऑस्ट्रेलिया)

प्रबंध सम्पादक

शिवप्रकाश अग्रवाल (भारत)

प्रधान सम्पादक

ओमप्रकाश गुप्ता (यू.एस.ए.)

प्रकाशक

वैश्विक हिन्दी संस्थान

ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

Publisher

Vaishvik Hindi Sansthan

Houston, USA

प्रथम संस्करण 2022

First Edition 2022

ISBN: 979-8-9865270-0-0

पुस्तक में निहित विषयवस्तु, तथ्य, विचार अथवा विश्लेषण के लिए उसके लेखक पूर्ण रूप से उत्तरदायी हैं। इसके समस्त अधिकार भी लेखकों के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक अथवा संपादक मंडल का विषयवस्तु के प्रति सहमति और उत्तरदायित्व नहीं है। पुस्तक या उसके किसी भी अंश का पुनर्प्रस्तुतिकरण किसी भी माध्यम से स्वीकार्य नहीं होगा; चाहे यांत्रिक माध्यम हो या इलैक्ट्रॉनिक; जानकारी का संचयन लिखित आज्ञा लिए बिना नहीं किया जाना चाहिए। केवल एक समीक्षक को समीक्षा में आंशिक उद्धरण उद्धरित करने की छूट रहेगी।

The contents, facts, views, and analysis in this work are entirely the responsibility of the authors and they reserve all rights. Neither the editorial board nor the publisher is responsible of contents by the authors. No part of this book may be reproduced in any form on by an electronic or mechanical means, including information storage and retrieval systems, without permission in writing, except by a reviewer who may quote brief passages in a review.

जय हिन्द! जय भारत!!

मित्राणि धन धान्यानि प्रजानां सम्मतानिव ।
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ॥

"मित्र, धन, धान्य आदि का संसार में बहुत अधिक सम्मान है; किन्तु माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है।"- वाल्मीकि रामायण

भारत की स्वतंत्रता के 75वें वर्ष के शुभ आगमन पर गत गाँधी जयंती (2-3 अक्टूबर 2021) पर वैश्विक हिन्दी संस्थान, ह्यूस्टन, यू.एस.ए. ने एक काव्य गोष्ठी 'मेरा भारत' का ऑनलाइन आयोजन किया। इस गोष्ठी में 13 देशों से 171 कवियों ने हमारे देश भारत पर श्रेष्ठ स्वरचित कविताओं का वाचन किया। यह गोष्ठी सतत 24 घंटों से भी अधिक समय चली। इस गोष्ठी की सफलता से यह भाव जागृत हुआ कि हम अपने देश भारत पर स्वरचित उत्कृष्ट कविताओं की एक पुस्तक का संकलन कर उसे अपनी मातृभूमि के चरण-कमलों में अर्पित करें। फलस्वरूप, भारत काव्य पीयूष की रचना हुई, जो आप के करकमलों में है।

भारत काव्य पीयूष में 171 कविताएँ हैं, जिनका चयन सम्पादक मण्डल ने बड़ी सावधानी और विवेक के साथ किया है। इन कविताओं को 8 देशों (ऑस्ट्रेलिया, क़तर, तंज़ानिया, भारत, श्रीलंका, यूनाइटेड किंगडम, यू.ए.ई. और यू.एस.ए.) में बसे 115 कवियों ने लिखा है। कविताओं का 11 विषयों में वर्गीकरण किया गया है, जो क्रमश: इस प्रकार हैं: भारत का इतिहास, भारत की संस्कृति, भारत के महापुरुष, स्वतंत्रता संग्राम, भावी भारत, भारत की गरिमा, भारत की समाज व्यवस्था, प्रवासी भारतीय, मेरा भारत, भारत के आराध्य व भारत माता।

इस काव्य-संकलन में कविता की अन्य प्रचलित विधाओं के साथ-साथ एक नव-विकसित काव्य-विधा 'ओम आकृति' विधा भी प्रस्तुत की जा रही है। आरोह-अवरोह पर केंद्रित ये कविताएँ धनुष, हीरे, षट्कोण, अष्टकोण आदि ज्यामितिक आकृतियों का निर्माण करतीं हैं। इसमें प्रत्येक पंक्ति का स्वयं में अर्थपूर्ण होना आवश्यक है; साथ ही हर पंक्ति में एक वर्ण बढ़ता और नियत वर्ण-संख्या तक पहुँच कर प्रति पंक्ति एक वर्ण घटता

चला जाता है। 'जितना चढ़ाव उतना उतार' इस विधा का मूलमंत्र है। इस नवीन विधा में रचित 11 कविताएँ पृष्ठ 1, 33, 45, 79, 81, 83, 117, 176, 188, 208 और 217 पर प्रकाशित की गईं हैं।

अनेक दिव्य आत्माओं के प्रोत्साहन और समर्थन के बिना 'भारत काव्य पीयूष' का संकलन संभव नहीं था, मैं उनका बड़ा ऋणी हूँ। उन सब कवियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस संग्रह के लिए अपनी-अपनी रचनाएँ भेजीं, और उन से क्षमाप्रार्थी हूँ जिनकी रचनाएँ शामिल करने में हम असमर्थ रहे। सब से अधिक ऋणी तो अपने संपादक मित्रों का हूँ जिन के कारण यह संकलन संभव हुआ। श्रीमती अलका प्रमोद, आरती 'लोकेश', मधु गोयल, मधु चतुर्वेदी, विनीता मिश्रा, शैल अग्रवाल, सी.कामेश्वरी, श्री शिवप्रकाश अग्रवाल व श्री हरिहर झा; आप सब के अथक परिश्रम से ही यह 'भारत काव्य पीयूष' रच पाया है। पुस्तक में आप के अमूल्य योगदान को सराहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। परमपिता आप सब पर सदैव अनुकंपा बनाये रखें, यही मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

अंत में, अपने साकेतवासी माता-पिता और सभी गुरुओं के चरणों में सादर प्रणाम करता हूँ जिनके आशीर्वाद के बिना मेरे जीवन में कुछ भी संभव नहीं। यद्यपि पूरा प्रयास रहा है कि पुस्तक में त्रुटियाँ न रहें; तथापि जो भी त्रुटियाँ रह गईं हों, उनके लिए मैं अकेला दोषी हूँ, अत: क्षमाप्रार्थी हूँ। 'भारत काव्य पीयूष' के विषय में आपके विचारों की प्रतीक्षा रहेगी। अपने सुझाव हमें bkp@vishwahindi.org पर प्रेषित करें। जय हिन्द! जय भारत!!

सादर,
ओमप्रकाश गुप्ता
प्रधान सम्पादक
भारत काव्य पीयूष
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.
15 अगस्त 2022

अनुक्रमणिका

भारत का इतिहास

गणतंत्र भारत - ओमप्रकाश गुप्ता 1
आज़ादी का अमृतपर्व - अमित कुलश्रेष्ठ 2
भारत भाग्य विधाता - अलका प्रमोद 4
मेरा भारतवर्ष - आरती ‘लोकेश’ 6
भारत हम - इन्दु गुप्ता 7
भारत के वीर सपूत - नमिता सिंह ‘आराधना’ 9
भीमबेटका गुफाएँ - नितीन उपाध्ये 10
वंदे माँ भारती - पुरुषोत्तम श्रीवास्तव ‘पुरु’ 11
भारत की दिव्य कथाएँ - मीनू पाण्डेय नयन 13
समुद्र मंथन - रूपा पारीक 15
कालभोज की गौरव गाथा - संगीता राजपूत ‘श्यामा’ 17
स्वतंत्रता दिवस - सारा हुसैन 19
तिरंगा ध्वज लहराए - हरिहर झा 21

भारत की संस्कृति

अद्भुत देश - अम्बे कुमारी 22
लिपि प्रेम - उर्मिला देवी चौधरी 24
हिंद महासागर से चंद बूँदें - कलणि विहंगा पनागॉड 25
हमारी संस्कृति हमारा अभिमान - नमिता सिंह ‘आराधना’ 26
एहन सुन्दर भारत - नीलम झा 27
भारत की संस्कृति निराली - नीलम भास्कर 29
भारतीय संस्कृति - नीलिमा तिग्गा 30
मेरा भारत - पायल गुप्ता ‘पहल’ 31
हमारी संस्कृति - पूनम मिश्रा 32
प्यारी हिंदी - मधु गोयल 33
मेरा भारत वर्ष - माणक तुलसीराम गौड़ 34
हिन्दवी - राकेश मल्होत्रा 35
अभिमान है हिन्दी - संजीव कुमार विश्वकर्मा 36

वो धरा भारत भूमि - संतोष भाऊवाला 37
भारत की महान संस्कृति - सी. कामेश्वरी 38
हिन्दी की अलख जगाऊँगी - सीमा शर्मा 39
मेरा हिंदुस्तान है - सीमा हरि शर्मा 40
पीयूष पर्व भारती - सुषमा देवी 42
भारत की संस्कृति - सुषमा 'सौम्या' 43

भारत के महापुरुष

गाँधी के राम - ओमप्रकाश गुप्ता 45
संत विनोबा भावे - नितीन उपाध्ये 46
भगत सिंह - बृजबाला गुप्ता 'अर्चना' 48
महाराणा प्रताप - मंजु शर्मा जांगिड़ 'मनी' 49
गाँधी राजघाट में जीवित है - मधु चतुर्वेदी 50
सुभाष चंद्र बोस - रेखा शर्मा 52
राष्ट्रपिता गाँधी - रेखा शर्मा 53
दानवीर कर्ण - रेणुका श्रीवास्तव 55
सूर्यवंशी महाराज अग्रसेन - सुभाष चन्द्र बन्सल 'साहिल' 56

स्वतंत्रता संग्राम

भारत के तीन लाल - अम्बे कुमारी 58
जान पुरखों ने दी है वतन के लिये - कामिनी व्यास रावल 60
वीरों को सलाम - प्राची पाठक 61
भारतीयों की देशभक्ति - ममता उपाध्याय 62
कैसे उन शहीदों का ऋण मैं चुकाऊँ - महेश चंद्र द्विवेदी 63
पहले देश, फिर शेष - राकेश मल्होत्रा 64
दास्तान-ए-आज़ादी - राम नेमा 'राज' 66
नौजवानों - वनिता शर्मा 69
राष्ट्र विभाजन - वर्षा शर्मा 70
हम सबका भारत - शालोम मेंडोंसा 71
सैनिक को सलाम - संदेश जैन संदेश 72

भावी भारत

India In My Eyes - Kaashvi Datta 73
भावी भारत - प्रेम लता कोहली 74
मेरा भारत बनाएगा नया इतिहास - राजेश कुमार मिश्रा 76
नव भारत - वनिता शर्मा 77
मेरा वंदनीय भारत - वीणा पाठक 78
चाह - शैल अग्रवाल 79
हम मतवाले भारतीय - सवि शर्मा 'सावित्री' 80
भावी भारत - सुषमा नैय्यर 81
कलम गहो हाथों में साथी - हरिहर झा 82
बढ़ते चलो - हरिहर झा 83
जो मशालें सदा से जली आ रही... - हरीश चंद्र सिंह गनोड़ा 84

भारत की गरिमा

I am Proud of India - Rajesh Kumar Mishra 85
निराला भारत - इन्दु गुप्ता 86
गरिमा - उषा अवस्थी 87
धन्य हो अतुलित भारत देश हमारा - जीवन सिंह दानू इरेश 88
हमारा प्यारा हिंदुस्तान - दुर्गा सिन्हा 'उदार' 89
हम ही हिन्दुस्तान हैं - दुर्गा सिन्हा 'उदार' 90
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा - नितेश शाह 92
मैं भारत हूँ - निहाल चन्द्र शिवहरे 93
भारत का गौरव - पिंगलेश कचौले 94
मेरे वतन - मधु गोयल 95
भारत वतन हमारा है - महेश पँचाल 'माही' 96
भारत की महिमा - माया बंसल 98
गौरव गान - रशीद ग़ौरी 101
ए देश मेरे! - रश्मि रंजन 102
हमारा प्यारा हिंदुस्तान - रामकृपाल 'कृपाल' 103
यह हिन्दुस्तान हमारा है - रेणु चन्द्रा माथुर 104
गीतांजलि - रेणुका श्रीवास्तव 105

सुभारती वसुंधरा - विजय गिरि गोस्वामी ‘काव्यदीप’ 106
ये दिल तुझ पर कुर्बान - विनीता मिश्रा 107
भारत का उद्घोष - विष्णु शास्त्री ‘सरल’ 108
गौरव गाथा भारत की - वीणा पाठक 109
अभिनन्दन - शैल अग्रवाल 111
मेरा देश - शैल अग्रवाल 113
हम सब के सभी हमारे - श्याम बहादुर श्रीवास्तव 114
तिरंगा - संदेश जैन संदेश 115
मेरा भारत देश महान - सी. कामेश्वरी 116
भारत महान - सी. कामेश्वरी 117
चिरंजीवी हो भारत भू आकाश - सुरभि दत्त 118
अखंड भारत - सुषमा नैय्यर 119
परचम अपना लहराये - हिरेन अरविंद जोशी ‘अबोध’ 120
हिंद राष्ट्र - हिरेन अरविंद जोशी ‘अबोध’ 122

भारत की समाज व्यवस्था

भारत देश एक सद्विचार है - अवधेश प्रसाद 123
भारत का किसान - उर्मिला देवी चौधरी 124
उमड़ आया है सबका प्यार खुलकर... - कमलेश भट्ट कमल 126
हिंद देश - कुलवंत सिंह 127
दीवान-ए-‘आम’ - देवयानी ‘रानी’ 128
वसंत ऋतु - मंजु तिवारी 129
त्योहारों का रेला - मधु गोयल 130
भारतीय नारी शक्ति - ममता उपाध्याय 131
आज का भारत - विनीत कुमार 132
भारत और सर्वधर्म - शुभदा भार्गव 133
गर्विता - सीमा जोशी मूथा 135
भारत की बेटियाँ - सीमा शर्मा 136
मैं कापुरुष क्यों हो गया - सुभाष चन्द्र बन्सल ‘साहिल’ 137
खादी - सोना अग्रवाल 139

प्रवासी भारतीय

प्रवासी भारतीय! सुन जाना तुम! - आरती 'लोकेश' 140
पासपोर्ट अमरीकन मेरो - ओमप्रकाश गुप्ता 142
मैं भारत हूँ भारतवंशी - कौशल किशोर श्रीवास्तव 143
प्रवासी भारतीय - कौसर भुट्टो 144
ऐ मेरी भारत भूमि - ज्योति सागर 'सना' 145
जहाज़ी बंडल - दीप्ति अग्रवाल 147
प्रवासी भारतीय - निर्मला सिंह 148
प्रवासी भारतीय - रीना काकरान 149
दिल में अपना देश लिये - रीना कुमारी 150
क्यों याद आती है आज भी वह माटी - रेखा भाटिया 152
एक भारत यहाँ भी है बसा - रेखा भाटिया 153
तिरंग फहरा लो - शैल अग्रवाल 155

मेरा भारत

भारत प्यारा - अर्चना प्रकाश 156
भारत महान - अलका प्रमोद 157
नील गगन का तारा - अलका प्रमोद 158
यूँ ही नहीं - आरती 'लोकेश' 159
भारत है क्या? है कौन? - ओमप्रकाश गुप्ता 160
बहुत खूबसूरत हमारा वतन - कामिनी व्यास रावल 161
मेरा भारत वर्ष - केदार शर्मा 'निरीह' 163
मेरा प्यारा देश - कैलाश गिरि गोस्वामी 164
मेरा भारतवर्ष - जय कृष्णा मिश्रा 'चैतन्य' 165
एक ऐसी भूमि - डी.पी. सिनालि नदीपमा पतिरण 166
महिमा का गुणगान - दीप्ति मिश्रा 167
मैं भारत हूँ - नीना छिब्बर 168
महान अजनाभवर्ष - नीलम झा 170
अखण्ड भारत दर्शन - पिंगलेश कचौले 172
अखण्ड भारत के हम वासी - मधु चतुर्वेदी 174
सर्वश्रेष्ठ भारत - ममता उपाध्याय 176

केवल जश्न नहीं आज़ादी - मीरा सिंह 'मीरा' 177
सृष्टि आरम्भ से - मोती प्रसाद साहू 178
पृथ्वी केंद्र में जंबू द्वीप - रश्मि वार्ष्णेय 179
भारत का अमृत महोत्सव - रश्मि वार्ष्णेय 180
सोने के सिंहासन बैठी - रानी श्रीवास्तव 181
भारत प्यारा देश महान - रीना काकरान 182
स्वर्ग सा सुंदर देश हमारा -विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप' 183
भारत की धरती - विनीता मिश्रा 184
मैं भारत हूँ - विष्णु शास्त्री 'सरल' 185
मेरा भारत - शुभ्रा माहेश्वरी 187
अकिंचन मैं - शैल अग्रवाल 188
वृक्षों में वट वृक्ष सदृश मैं भारत हूँ - संजीव वर्मा 'सलिल' 189
अनुपम भारत - सुलोचना शर्मा 191
राष्ट्र गान - सुषमा नैय्यर 192
मैं अपनों का भारत हूँ - सूर्यकान्त सुतार 'सूर्या' 193
उठ खड़ा हिन्दोस्तां - हरिवल्लभ शर्मा 'हरि' 195
तुझ पर है अभिमान - हरिहर झा 196
वेदने! तू क्यों न रोई - हेम चन्द्र तिवारी 197

भारत के आराध्य

हम बन सकते हैं राम! - ओमप्रकाश गुप्ता 199
घर लौटे श्री राम - कौशल किशोर श्रीवास्तव 200
महाकाल शिव - फूल चंद्र विश्वकर्मा 201
सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र - शालिनी वर्मा 'शिवा' 202
सिद्धार्थ बुद्ध हुए! - स्मृति चौधरी 204

भारत माता

मातृभूमि के कण-कण पर... - अमित कुलश्रेष्ठ 205
भारत माता - आभा मेहता 'उर्मिल' 207
मातृ भारत - आरती 'लोकेश' 208
भारत माता - चंद्रेश कुमार छतलानी 209

भारत माँ-मातृभूमि-वंदन - चन्द्रकान्त पाराशर	210
आज़ादी - रचना चतुर्वेदी	211
भारत माता की संतान - रचना चतुर्वेदी	212
देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे - शुभ्रा ओझा	213
भारत माता! कोटि प्रणाम - श्याम बहादुर श्रीवास्तव	215
भारत माँ को नमन करें - संजीव वर्मा 'सलिल'	216
भारत भूमि - सुषमा नैय्यर	217
मातृभूमि मेरी! - स्मृति चौधरी	218

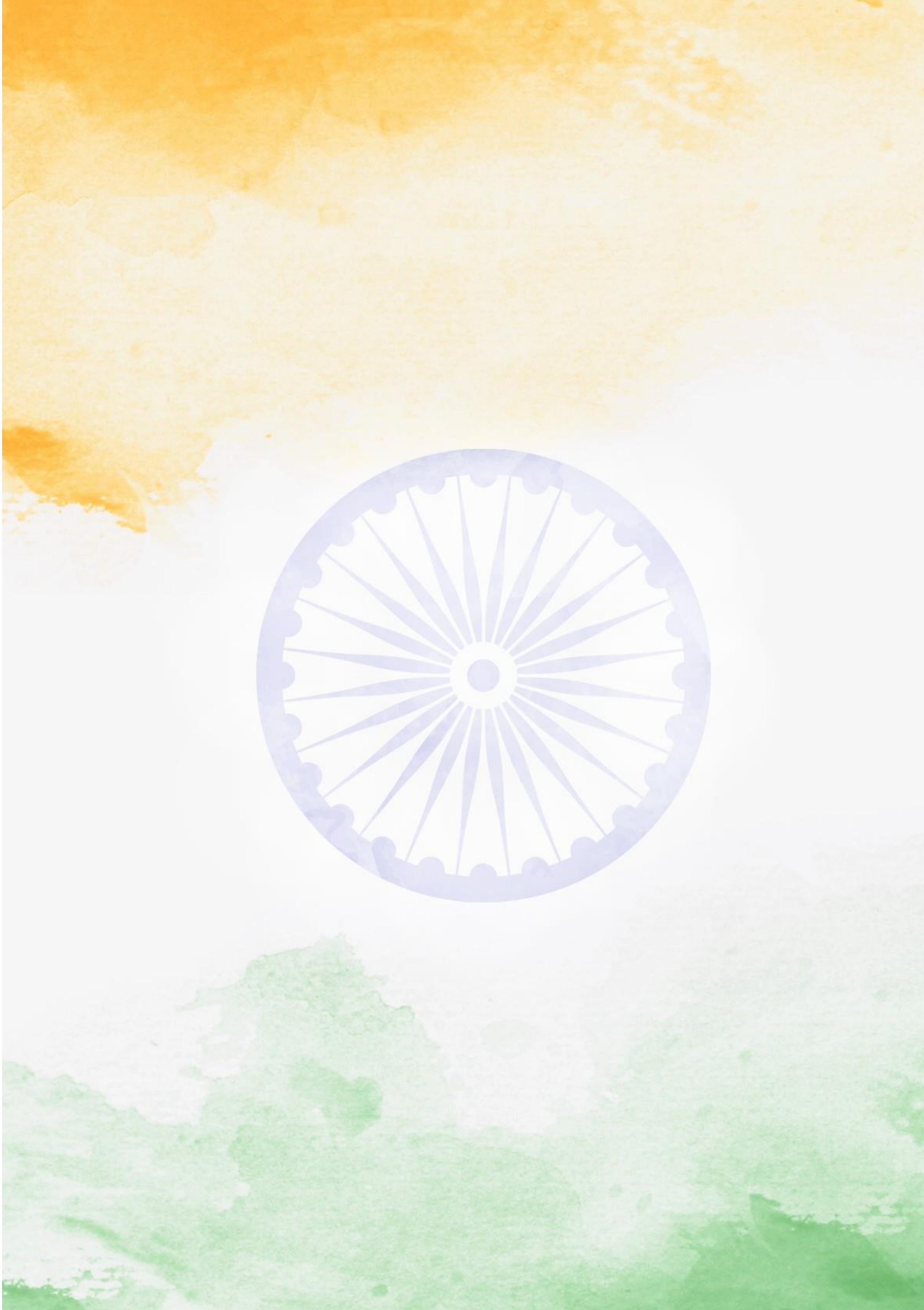

गणतंत्र भारत

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

मेरा
भारत
गणतंत्र!
जग में प्यारा
सब से है न्यारा।
धर्म, भाषा व जाति
भिन्न-भिन्न हैं सब के
रंग-रूप, वस्त्र, अनेक
हम अनेक, तो भी हैं एक।
गणतंत्र दिवस पावन
देता अधिकार समान,
नर-नारी एक वोट
समान अधिकार
एक संविधान।
जय भारत
जय हिन्द
प्रणाम
नम्य!

(यह कविता नवीनतम विकसित गहन विधा 'ओम आकृति' में रचित है। आरोह-अवरोह पर केंद्रित यह विधा धनुष, हीरे, षट्कोण, अष्टकोण आदि आकृति का निर्माण करती है। प्रत्येक पंक्ति स्वयं में अर्थपूर्ण हो और जितना चढ़ाव उतना ही उतार इस विधा का मूलमंत्र है। इस विधा में रचित अन्य कविताएँ पृष्ठ 33, 45, 79, 81, 83, 117, 176, 188, 208 और 217 पर हैं।)

आज़ादी का अमृतपर्व

अमित कुलश्रेष्ठ
तारापुर, महाराष्ट्र, भारत

पूर्ण हुए हैं वर्ष पचहत्तर, और आगे भी ले जाएँगे।
कष्टों से पाई आज़ादी का संग अमृतपर्व मनाएँगे।।

यह देश नहीं भूखंड मात्र, संस्कार की शाला है,
राम, कृष्ण, बुद्ध सभी के लहू ने जिसको पाला है।
हम ही तो हैं मौर्य, गुप्त, हम पोरस और मराठा हैं,
सिकंदर, मुगलों का दंभ हमने मिलकर काटा है।
जब अंग्रेजों ने हम पर जुर्म का रास्ता चुन लिया,
भारत के सपूतों ने पांचजन्य फिर फूँक दिया।
बूढ़ी हड्डी धधक उठी सन सत्तावन की ज्वाला में,
नाना, तात्या, जफर डूब गए आज़ादी की हाला में।
एक अकेला दीपक था वह तूफानों से लड़ गया,
अंग्रेजी सत्ता के आगे जब मंगल पांडे अड़ गया।
रणचंडिका लक्ष्मीबाई निकल पड़ी मैदानों में,
हाहाकार मचा डाला मर्दानी ने मरदानों में।
इतनी आग भरी थी दीवानों की शमशीरों में,
एक अकेला शेर था काफी, कई सैकड़ों भेड़ों में।
जाते-जाते कह गए दीपों में ज्वाला भर देंगे,
अंग्रेजी सत्ता का सूरज और चमकने ना देंगे।

आज़ादी के दीवानों की तुम को याद कराएँगे।
कष्टों से पाई आज़ादी का, संग अमृतपर्व मनाएँगे।।

एक तिलक थे जिसने रंग शोणित का दिखलाया,
एक थे लाला जिनको लाल लहू ने नहलाया।
जाते-जाते कह गए यदि खून है तो उबल पड़ो,
यूँ न बैठो धमनी में सुभाष की भाँति निकल पड़ो।
क्या मोहब्बत माटी से थी, स्वर्ग की राहें भूल गए,
फाँसी के फंदे पर वो थे हँसते-हँसते झूल गए।
जिसके मुख की यौवनरेखा तब तक फूट न पाई थी,

उस खुदीराम ने फाँसी की, वरमाला स्वयं लगाई थी।
एक दधीचि बना जतीन, अन्न-जल सब छोड़ गया,
अपनी अस्थि वज्र बनाने भारत माँ को सौंप गया।
इस माटी पे ही पण्डित बिस्मिल और अशफ़ाक हुए,
पुण्य-प्रसूता धरा के खातिर जाने कितने खाक हुए।
भगत, राजगुरू, सुखदेव ने पहना बसंती चोला था,
काँप गया फाँसी का फंदा, इंकलाब जब बोला था।
पूछ रहा है काला पानी और रो-रो पूछे सेलुलर,
कहाँ गए वे वीर सेनानी, कहाँ गए वे सावरकर।

व्यक्ति नहीं विचार है गाँधी, हर घर तक ले जाएँगे।
कष्टों से पाई आज़ादी का, संग अमृतपर्व मनाएँगे।।

सन सैंतालीस में हमको जब लुटा-पिटा सा देश मिला,
पंखनुची सोने की चिड़िया वाला हमको भेस मिला।
लहूलुहान छाती पर हमने जनतंत्र की नींव रखी,
गाँधी के आदर्शों की जिसमें हमने सीख रखी।
सपनों में पंडितजी ने देश एक खुशहाल बुना,
उद्योग, अंतरिक्ष, परमाणुयुक्त एक स्वर्ण भविष्य चुना।
लाल बहादुर खड़े हुए, युद्ध पैंसठ का जब थोप दिया,
अपने नन्हे कदमों से दुष्ट पाकिस्तान को रौंद दिया।
इंदिरा ने दुर्गा रूप धर जब भीषण विस्फोट किया,
एक कटार चला शत्रु को, दो देशों में तोड़ दिया।
धता बता अमेरिका को चला जब ब्रह्मास्त्र अटल,
एक ही झटके पे खड़ा हुआ निज कदमों पे राष्ट्र सबल।
बेबस अर्जुन के मनमोहन सारथी बनने हुए खड़े,
विकास पथ पर भारत का रथ हाँकने निकल पड़े।
अब भारत ने शत्रु को बिरयानी खिलाना छोड़ दिया,
धारा 370 की धौंस का परचम खम ठोक के तोड़ दिया।

है छप्पन इंच का सीना, आँखों को आँख दिखाएँगे।
कष्टों से पाई आज़ादी का, संग अमृतपर्व मनाएँगे।।

भारत भाग्य विधाता

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

है सौगन्ध कि हमें बनाना, भारत जग का भाग्य विधाता,
गर्व हमें भारत अपना था, सोने की चिड़िया कहलाता।

यही है पावन राम की धरती, कृष्ण यहाँ पर आये थे,
हमको भक्ति, शक्ति, गीता और नीति के मर्म बताये थे,
समृद्ध है संस्कृति अपनी, अध्यात्म से अपना नाता,
है सौगन्ध कि हमें बनाना, भारत जग का भाग्य विधाता।

ब्रह्मांड से धरती तक तब, अध्ययन कर सन्धान किया था,
आर्यभट्ट सुश्रुत नागार्जुन, चरक जैसों ने ज्ञान दिया था,
प्रचुर ज्ञान था विद्वानों की, धरती थी यह भारत माता,
है सौगन्ध कि हमें बनाना, भारत जग का भाग्य विधाता।

दृष्टि कुटिल लोलुप वैरी की, भारत पर बारम्बार पड़ी,
किया आक्रमण पर वीरों की, सेना भी उनसे खूब लड़ी,
वीर शिवाजी राणा प्रताप, लक्ष्मी बाई की यश गाथा,
है सौगन्ध कि हमें बनाना, भारत जग का भाग्य विधाता।

किया विनाश बहुत शत्रु ने, कितने वीर थे छीने हमसे,
चन्द्रशेखर सुखदेव भगत, राजगुरु हीरे धरती के,
वीर सपूतों की धरती पर, कोई शत्रु न टिकने पाता,
है सौगन्ध कि हमें बनाना, भारत जग का भाग्य विधाता।

किये अनेक षड्यंत्र शत्रु ने, करने को हमको पीछे,
पर हम फिर भी आगे बढ़, मंगल और चाँद तक जा पहुँचे,
रमन, बोस, भाभा, कलाम के, आगे मन है शीश नवाता,
है सौगन्ध कि हमें बनाना, भारत जग का भाग्य विधाता।

ओलम्पिक या अविष्कार, वैक्सीन में अपना नाम किया,
कोई क्षेत्र हो रहे तिरंगा, ऊँचा हमने ठान लिया,
आगे-आगे बढ़ते जायें, सदा यही अपना मन गाता,
है सौगन्ध कि हमें बनाना, भारत जग का भाग्य विधाता।

चलो करें प्रण हम सब मिल कर, अपने भारत का नाम करें,
बना दें फिर सोने की चिड़िया, अतीत को वर्तमान करें,
परिपूर्ण धन-धान्य शौर्य से, ज्ञान और विज्ञान का ज्ञाता,
है सौगन्ध कि हमें बनाना, भारत जग का भाग्य विधाता।
गर्व हमें है कभी था भारत, सोने की चिड़िया कहलाता।।

मेरा भारतवर्ष

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

विचरा करते जहाँ स्वर्ण मृग, और कहाता सोन चिरैया,
वेद उपनिषद मंत्र गूँजते, रसखान रचे निर्बाध सवैया।
भक्ति रंग दिया तुलसी ने, नीति ज्ञान कबीर की वाणी,
भागीरथ प्रयत्न से सुरसरि, उतरी धरा पर बन निर्वाणी।
हिन्द महासिंधु चरण पखारे, माँ पग अमृत के आकर्ष,
ताम्रपत्र पर अमिट कहानी, जो है रची वह भारतवर्ष।

यज्ञ हवन व तप की वेदी, सर्वोच्च परित्याग की मूरत,
अंतस्थ अस्थि भी दान करे, हर साधु दधीचि-सी सूरत।
पूजी जाती स्त्री जाति ज्यों, घर-घर बसी हुईं रुद्राणी,
पाहन में जो फूँके प्राण, कृषक कथा है जग कल्याणी।
प्रहरी जिसका हिमगिरि, बना है अटल सहज सहर्ष,
ताम्रपत्र पर अमिट कहानी, जो है रची वह भारतवर्ष।

शून्य भी दिया दशमलव भी, ऐसे परम गणितज्ञ जहाँ,
रमन बासु भाभा कलाम, विज्ञान जनक जन्मे हैं यहाँ।
प्रण-वचन करते निर्वाह, राजा दशरथ पितामह भीष्म,
कर्त्तव्य से न डिगते प्राणी, शीत भयंकर वर्षा या ग्रीष्म।
प्रस्तर युग से आधुनिकता, पथ बना उन्नति व उत्कर्ष,
ताम्रपत्र पर अमिट कहानी, जो है रची वह भारतवर्ष।

चक्रवर्ती राजाओं की गाथा, बालक-बाला को कंठस्थ,
सम्राट अशोक, चंद्रगुप्त मौर्य, बसे हर वासी के अंतस्थ।
पन्ना, चेनम्मा, जीजाबाई, पद्मावती, झाँसी की रानी,
पृथ्वीराज-राणा प्रताप, राजा पुरुरवा की अमर कहानी।
वीरों की धरती वीर ही जन्मे, यह संस्तुति का निष्कर्ष,
ताम्रपत्र पर अमिट कहानी, जो है रची वह भारतवर्ष।

भारत हम

इन्दु गुप्ता
फरीदाबाद, हरियाणा, भारत

हमारा भारत
सरहदों के दायरे में सिमटा
धरती का टुकड़ा नहीं
न ही
कागज़ पर खिंची लकीरों से उकेरा
एक नक्शा-मात्र
न मिट्टी सिर्फ
न नदिया, पहाड़, समुद्र।

अनगिनत चेहरे
अलग लिबास
अनगिनत रंग-खुश्बू
धर्म, देवी-देवता
जातियाँ, बोलियाँ
भाषा शैलियाँ
तरह-तरह के भोजन
खान-पान, रहन-सहन
असंख्य अनगिनत संस्कृतियाँ मिल-बन
कहलाते हैं भारत हम।

अनेकता में एकता का
सोने मढ़ा, हीरे जड़ा सिद्धांत
देते संसार को हम।
जन्म से लहू से एक हैं हम
अलग-अलग जातियाँ,
धर्म मौसम जीते हुए
अदृश्य एकता के सूत्र में पिरोए
जो स्वार्थ के झटके खा-खा कर
टूट जाता है अनेक बार
जब-जब कोई मन
हो जाता है गद्दार
ज़ख्मी होती एकता बार-बार
बँट जाते हम।

हो जाते अनेक...
रहते अनेक...
शब्दों का मरहम लगाते,
कहते-दोहराते
अनेकता में एकता
शांति के दूत हैं हम
नहीं हम जंग के देवता
नहीं करते किसी पर हमला
न पालते असलहा अमला
शांत रहते,
कहकर खुद को शांत
अहिंसावादी, धर्म-निरपेक्ष
लूटा जाता फिर-फिर
हरी-भरी धरती का श्रृंगार
फिर-फिर रँगी जाती
मिट्टी लाल...
लहू में।

देश का वट...
धवल अधखुले नयनों से देखता
बदलते रंग
भ्रष्टाचार अव्यवस्था हत्याओं घटनाओं के।

आते-जाते मौसम
लोग देसी-परदेसी
भीगे नयन कोई नहीं देखता
खुली आँखों से देखते ख्वाब...
ज़ुबान और शब्दों से चाहते
संसार को भाई-चारे में पिरोना
पर नहीं होते एक...

असलियत में हम
इसी तरह मरने के लिए...
युगों-युगों तक
रहना ज़िंदा है असलियत हमारी
समाज की...
देशवाद की...
राष्ट्रवाद की।
सदियों से सदियों तक।

भारत के वीर सपूत

नमिता सिंह 'आराधना'
अहमदाबाद, भारत

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
बचपन से यह गाया हमने,
मतलब इसका क्या समझा हमने?

तिरंगा हमारे देश की आन,
यह हम सब की पहचान।
इसके पीछे एक लंबी कहानी,
क्या किसी ने उसको जानी?

इस तिरंगे को पाने को,
वीर सपूतों ने दी कुर्बानी।
मातृभूमि की आज़ादी की ख़ातिर,
हँसते-हँसते गोली खा ली।

हमारे कितने भारत माँ के लाल,
समा गए असमय ही काल के गाल।
चेहरों पर उनके शिकन ना थी,
लहू-तिलक लगा था उनके भाल।

उन वीरों को नमन करें हम,
जिन्होंने अपनी कुर्बानी दी।
निज प्राणों की परवाह न करके,
भारत माँ को आज़ादी दी।

लेकिन कुछ गद्दारों ने की गद्दारी,
सत्ता के मद में हो गए चूर सत्ताधारी।
भारत माता को दी यातना,
नहीं सुरक्षित आजाद देश में नारी।

भ्रष्टाचार बढ़ता रहा देश में,
बढ़ती गई देश में बेरोजगारी।
हाथ हमारे बँधे हुए हैं,
हमारी यह कैसी लाचारी?

उन शहीदों की शहादत का सम्मान करें हम,
भ्रष्टाचार दूर करने का दृढ़ संकल्प करें हम।
स्वर्ग बनाना चाहा था उन्होंने भारत को,
आओ, उनके स्वप्नों को साकार करें हम।

उठो देशवासियों जागो,
फिर से देश को मुक्त कराना है।
भ्रष्टाचारियों, दुराचारियों से
भारत माँ को स्वतंत्र कराना है।

भीमबेटका गुफाएँ

नितीन उपाध्ये
दुबई, यू.ए.ई.

आओ बच्चों तुम्हे दिखाएँ भीमबेटका,
आकर तुम बतलाना तुमने क्या सीखा।

तुम्हे पता है हमने की है कितनी तरक्की,
पुरखों से सब सीखा है, ये बात है पक्की।

चंद्र और मंगल पर भी मानव जा पहुँचा,
ये तो है पहली उड़ान, अभी जाना है ऊँचा।

कहता है ये समय पीछे मुड़ के देख लो,
गौरवशाली अतीत अपने मन में रख लो।

पुरापाषाणिक काल की यह गौरव गाथा,
शैलचित्र, शैलाश्रय के आगे झुकता माथा।

मानवीय जीवन के प्राचीनतम चिह्न यहाँ हैं,
विश्व धरोहर स्थल यह घोषित किया गया है।

शुंग-गुप्त कालीन अभिलेख और लघुस्तूप,
परमार कालीन मंदिर के अवशेष अनूप।

महाभारत की घटनाओं का तो हमें ज्ञान है,
भीम जहाँ आकर बैठे, यह वही स्थान है।

विन्ध्याचल की पहाड़ियों का निचला छोर है,
सतपुड़ा की पहाड़ियाँ दक्षिण की ओर हैं।

जिसने इनको खोजा उनको भी जान लो,
बनेंगे उनके जैसा यह मन में ठान लो।

भीमबेटका गुफाएँ ढूँढीं हरिभाऊ ने,
सभ्यता की खोली कुण्डी हरिभाऊ ने।

विष्णु श्रीधर वाकणकर के मैं क्या गुण गाऊँ,
प्यार से ही सब इनको कहते थे हरिभाऊ।

उनका सारा जीवन और जो था ज्ञानार्जित,
भारत की सांस्कृतिक धरोहर को समर्पित।

सरस्वती के बहाव का जग को मार्ग दिखाया,
आर्य-द्रविड़ आक्रमण सिद्धान्त को झुठलाया।

जन्म-शताब्दी वर्ष में गाएँ उनकी आरती,
ऐसे पुत्रों पर गौरवान्वित माता भारती।

वंदे माँ भारती

पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'
जयपुर, भारत

तेरी ममता के आँचल में
पले बढ़े हम वंशज सुख में
सभी रंग के पुष्प अंक में
तेरी रज की खुशबू मन में
बसे सदा, वारती
वंदे माँ भारती

कोमल कर्मशील की काया
ओढ़े हरित वनों की छाया
छिपी गर्भ में अकूत माया
श्रम के स्वेद कणों की आभा
तेरे मुख राजती
वंदे माँ भारती

है शीश हिमालय-सा ऊँचा
हृदय मैदानों-सा विस्तृत
संस्कृतियों की गंगा-जमुना
बह रहीं, ले समता का व्रत
पद-कंज पखारतीं
वंदे माँ भारती

तुमसे उत्पन्न लाल अनंत
जिनसे शोभित सकल दिगन्त
जन जन के प्रिय कंत कुलवंत
सभी राम-कृष्ण, मुनि-भगवंत
देव करें आरती
वंदे माँ भारती

आओ हम सब मिल कर बाँचें
गाथा, भारत वर्ष महान की
कभी विश्वगुरु स्वर्ण देश की
बनते-बिगड़ते इतिहास की
प्रज्ञा भूल विचारती
वंदे माँ भारती

कपिल, गौतम, कणाद, जैमिनी
पतंजलि, बादरायण, व्यास वेद के
नमन प्रणेताओं को, जो हैं
छह शास्त्र अठारह पुराण के
थाती ज्ञान भारती
वंदे माँ भारती

बोधायन, भास्कर, आर्यभट्ट
सुश्रुत, चरक, पाणिनि, वाग्भट्ट,
रमन, खुराना, भाभा, कलाम
सभी वैज्ञानिकों को प्रणाम
जीवन वय सुधारती
वंदे माँ भारती

रामानुज, आदि शंकराचार्य
निम्बार्क, महाप्रभु, माधवाचार्य
मनु, वशिष्ठ, भगीरथ, भरद्वाज
वाल्मीकि, अगस्त्य, याज्ञवल्क्य
ज्ञान की हैं मूरती
वंदे माँ भारती

महावीर, बुद्ध, कबीर, तुलसी
मीरा, रैदास, दादू, सहजो
रसखान, रामकृष्ण, भू देवी
नानक, मरियम, विवेक, खुसरो
हिय भक्ति निखारती
वंदे माँ भारती

पंत, मुंशी, टैगोर, प्रसाद
महादेवी, दिनकर, द्विवेदी,
विश्वेश्वरैया, इकबाल, बंकिम
नीरज, तैलंग, अज्ञेय, फणी
साहित्य के पारखी
वंदे माँ भारती

अशोक, चोल, मौर्य, चाणक्य
गुप्त विक्रमादित्य, कौशाम्बी
मगध, कौशल, कुरु, पाञ्चाल
चेदि, अवन्ति, कुण्डा. विजयनगर
संस्कृति के सारथी
वंदे माँ भारती

तुर्क, तैमूर, चंगेज़, बाबर
हुमायूँ, जहाँगीर, शाहजहाँ
अकबर, औरंगज़ेब व शिकोह
शुजा, बहादुरशाह ज़फ़र
मुगल शासित भारती
वंदे माँ भारती

पृथ्वीराज चौहान, इब्राहिम
सांगा, सूरी, हेमू, संन्यासी
महाराणा प्रताप, शिवाजी
गुरु गोविंद सिंह वीर सेनानी
आक्रांता संहारती
वंदे माँ भारती

डच, पुर्त, फ्रांसीसी, अंग्रेज़
आए भारत, बन व्यापारी
खूब लड़े लक्ष्मी बाई, मंगल
गांधी, टंडन, नेहरु, शास्त्री
लक्ष्य स्वतंत्र भारती
वंदे माँ भारती

सुभाष, राज गुरु, भगत सिंह,
बिस्मिल, अशफ़ाक, चंद्रशेखर
तिलक गंगाधर, राय लाजपत
और शहीद सभी सेनानियों को
नमन करती भारती
वंदे माँ भारती

सबसे बडा अभिशाप गुलामी
जब पीढ़ियों ने संघर्ष किया
तब जा मिली आज़ादी गुमानी
खो न देना आपस में लड़कर
ऐ हमवतन भारती
वंदे माँ भारती!

भारत की दिव्य कथाएँ

मीनू पाण्डेय नयन
भोपाल, भारत

जब भी सुनाएँ दिव्य कथाएँ, उमड़े मन में हर्ष।
सारे जहाँ से प्यारा न्यारा अपना भारतवर्ष।

अशोक जैसे पराक्रमी, चाणक्य जैसे ज्ञानी।
तुलसी भक्ति भाव पगी, कबीर ज्ञान की वाणी।
टैगोर की गीतांजलि, दे भारत को उत्कर्ष।
जब भी सुनाएँ दिव्य कथाएँ, उमड़े मन में हर्ष।

यज्ञ, हवन, तप के लिए, विश्व में विख्यात।
सत्य अहिंसा के बलपर, दें दुनिया को मात।
विवेकानंद की वाणी में, महानता का उत्कर्ष।
जब भी सुनाएँ दिव्य कथाएँ, उमड़े मन में हर्ष।

शून्य का आविष्कार किया, दिया ग्रह दूरी का माप।
कोसों, मीलों, योजनों में, दिया संपूर्ण ब्रह्मांड नाप।
आर्य भट्ट हो या रामानुजन, किया खूब जीवन संघर्ष।
जब भी सुनाएँ दिव्य कथाएँ, उमड़े मन में हर्ष।

चंद्र शेखर और भगतसिंह की, सुन शौर्य गाथाएँ।
चौहान, राणा प्रताप, विक्रमादित्य साहस बढ़ा जाएँ।
रानी लक्ष्मीबाई, दुर्गावती, अवंती सा देखा न संघर्ष।
जब भी सुनाएँ दिव्य कथाएँ, उमड़े मन में हर्ष।

इंदिरा गाँधी, कल्पना चावला, किरण बेदी जैसी नारी।
लता मंगेशकर, सिंधु ताई, अवनि सब पर भारी।
सावित्री बाई फुले, आनंदीबाई जोशी, मैरीकॉम हैं नारी का उत्कर्ष।
जब भी सुनाएँ दिव्य कथाएँ, उमड़े मन में हर्ष।

विपदाओं ने हमको घेरा, जाने कितनी बार।
सूझबूझ और बल बुद्धि से हुए हमेशा पार।
संघर्षों से जीत बढ़ाती जीवन का उत्कर्ष।
जब भी सुनाएँ दिव्य कथाएँ, उमड़े मन में हर्ष।

राजीव गाँधी की सोच थी, तकनीकी भारत अपना।
अटल बिहारी, अब्दुल कलाम, विपिन रावत का सपना।
नरेंद्र मोदी को देश विदेश में मानें सब आदर्श।
जब भी सुनाएँ दिव्य कथाएँ, उमड़े मन में हर्ष।

समुद्र मंथन

रूपा पारीक
भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

विश्व को शांति, अध्यात्म, मानवता का देता सन्देश।
जीवन के चरम लक्ष्य को समझाता मेरा भारत देश।।

इस माया की चकाचौंध में धूमिल हैं,
कुछ विस्मृत हैं वेद पुराण हमने माना,
किन्तु लौटना होगा सनातन संस्कृति की ओर,
यदि जीवन के अंतिम सत्य को है पाना।

कठिन है चार वेदों, अट्ठारह पुराणों और
एक सौ आठ उपनिषदों को समझना-समझाना।
किन्तु इस बात से तुम बिल्कुल मत घबराना,
बस स्वयं अपने अंतर्मन में डुबकी लगाना।

जीवन मृत्यु का रहस्य सनातन धर्म ने समझाया,
चौदहवाँ रत्न 'अमृत' मन मंथन से किसने पाया।
मुश्किल है ज्ञान के समंदर की थाह पाना,
जरुरी है समुद्र मंथन का वृतांत सुनाना।

महादेव ने समुद्र मंथन का आयोजन करवाया,
श्री हरि विष्णु ने मंथन का प्रबंध करवाया।
सुमेरु पर्वत की मथनी, वासुकी नाग को डोरी बनाया,
समुद्र मंथन, अंतर्मन का मंथन है सबको बताया।

मंथन से प्रथम निकला हलाहल, विषय वासना त्यागो,
फिर द्वितीय आये उच्चै:श्रवा अश्व, मन की गति थामो,
मन निर्मल तो तृतीय गज 'एरावत' दृढ़बुद्धि वश में करो,
फिर चतुर्थ 'कामधेनु' पाओ, कामनाओं की पूर्ति करो,
सद्भावना हो मन में तो पंचम 'मणि कौस्तुभ' धरो,
मणि है निर्मल भक्ति अब षष्ठम 'कल्पतरु' उपजाओ।

हर इच्छा से तृप्त हुए तब सप्तम प्रगट हुई 'रम्भा',
इन्द्रिय विजय करो अब 'रम्भा' से तुम मत भरमाओ,
वासना से मुक्त होकर अष्टम 'श्री लक्ष्मी' को पाओ,
अष्ट लक्ष्मी स्थापित हो तो सुख आनंद मनाओ,
लक्ष्मीनारायण प्रिय 'पारिजात' का स्थान नवम,
किन्तु परीक्षा शेष अभी कन्या 'वारुणी' प्रगटी दशम।

कन्या को पहचाना या असुर बुद्धि से मदिरा जाना,
वारुणी मदिरा में डूबे तो जीवन सत्य नहीं पहचाना,
यदि नाद सुना अंतर्मन का, मदिरा के मद को त्यागा,
तब एकादश 'पांचजन्य शंख' से अनहद है जागा।

द्वादश रत्न 'चन्द्र' रूप में मन की शीतलता लाया,
त्रयोदश रत्न स्वयं 'धन्वन्तरी' आयुर्वेद का पाठ पढ़ाया,
किया परिष्कृत आयुर्विज्ञान से तन मन आत्मा को,
बस उसने ही रत्न चतुर्दश 'अमृत कलश' है पाया।

यह सृष्टि है खेल प्रभु का है विवेक एक साधन।
मत उलझो माया में प्यारे काटो भव के बंधन।।

कालभोज की गौरव गाथा

संगीता राजपूत ‘श्यामा’
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

राजस्थानी धरती पर थी,
अरबों की थी टेढ़ी आँख।
बिन कासिम को मन में चुभती,
राजपूतों की ऊँची साख।।

कुंदन बिखरा जिस माटी में,
सेंध लगाऊँ करके युद्ध।
रत्नों के अंबार लगे हैं,
क्षीर बहे गो माँ का शुद्ध।।

बिन कासिम ने लूट मचाई,
और खिलाफत बढ़ता राज।
घर का भेदी भेद बताए,
शस्त्र कहाँ हैं कितने साज।।

नारी का सम्मान छले खल,
छल से घेरे करके घात।
मंदिर नष्ट किये अति पावन,
चचनामा में लिख दी बात।।

जाति छली है छल से घेरे,
धान्य सभी गृह रौंदे लूट।
रत्न जड़े मंदिर जब देखे,
गिद्धों सम पड़ते हैं टूट।।

म्लेच्छ ठगे से चकित ताकते,
लूटे वैभव छाने रेत।
पोथी में हैं आग लगाते,
नष्ट किये है सारे खेत।।

युद्ध करे तब कपट से जीते,
सब नियमों को देते तोड़।
नाम नही है मानवता का,
हिंसा की लगती है होड़।।

शुष्क धरा में रक्त बहा था,
भू का मन रोता है आज।
दो नेत्रों में गर्व भरा है,
आँचल सूना बिलखे बाज।।

माँ अम्बा से करते विनती,
धरती चीखे आँखे मींच।
रक्त बहा मेरे पुत्रों का,
वीर लहू से देते सींच।।

अतुलित अनुपम वीर बड़ा जो,
आता होगा अब की वर्ष।
धीर धरे अब मन में धरती,
वट वृक्ष फैल उगे अति हर्ष।।

नृप नागादित्य गुहिल वंशी,
मार दिया भीलों ने क्रुद्ध।
भेद विचारो में जब होता,
छिड़ता तब है गृह का युद्ध।।

अति पावन शौर्य की गाथा,
मसि भी गूँज उठी हुंकार।
बप्पा रावल ने जन्म लिया,
काल डरे उठती टंकार।।

वसुधा हर्षित पावन होकर,
फूली हँस करती शृंगार।
शिव शंकर के वरदानों से,
बालक काल लिया अवतार।।

कोख धनी उस माता की है,
सुत तेजमयी जन्म प्रचंड।
नभ में लहराए केसरिया,
गर्व करे तब शत्रु का खंड।।

शिशु मेवाड़ी रुद्र लगे हैं,
नीति सही का उसको ज्ञान।
मर्यादा में कर्म करे सब,
गुरू जनों का करता मान।।

धाय करें पालन बालक का,
नाम कहें सब उसका काल।
नृप का सुत है वन में पलता,
कंज खिले ज्यों फैला ताल।।

संग रहे रावल की धात्री,
समस्त देती सुत को ज्ञान।
शोक धरा का सुत हर लेना,
देना पुनः तुम भू को मान।।

रावल नन्हा असि से खेले,
सीखे सब रजपूती कर्म।
शंकर जी का ध्यान लगा कर,
ऊँचा रखता अपना धर्म।।

भील सखा बन खेलें सारे,
तीरों संग उड़ाते धूल।
ढाल सभी रक्षा की बनते,
दूर करें पथ के सब शूल।।

गाथा चर्चित कहती श्यामा,
बप्पा को था गौ से स्नेह।
धार बहे है दुग्ध चढ़े ज्यों,
झरना झरता कंचन मेह।।

स्वतंत्रता दिवस

सारा हुसैन
दुबई, यू.ए.ई.

भारत माँ की रक्षा के लिए, अपना कर्तव्य निभाया है,
मातृभूमि के गौरव पर, न्यौछावर उनकी काया है।

जिनको परिवार से ज्यादा, ये देश, तिरंगा प्यारा है,
ऐसे उन वीर सपूतों को, शत-शत नमन हमारा है।

अपने स्वार्थ को पीछे छोड़ककर, राष्ट्र के लिए लड़ना है,
बात करे जो भेदभाव की, उसको सबक सिखाना है।

स्वतंत्रता दिवस पावन अवसर, विजयी-विश्व का गान अमर है,
देश-हित सबसे पहले है, बाकी सबका राग अलग है।

हमें हमारी मातृभूमि से इतना मिला दुलार है,
उसके आँचल की छैयाँ से छोटा ये संसार है।

हम न कभी हिंसा के आगे अपना शीश झुकाएँगे,
सच पूछो तो पूरा विश्व हमारा ही परिवार है।

देश आजाद कराने को जब, पहना केसरिया बाना है,
तिलक लगा बहनें बोली, भैया, विजयी होकर आना है।

आने वाले नए विश्व में तुमको कुछ करके दिखाना है,
भारत के उन्नत ललाट को जग में ऊँचा और उठाना है।

नारी मेरे वतन की, सीता भी है, लक्ष्मी भी है
बस बेगानी सभ्यता से, थोड़ा सा बच जाना है।

चाँद को छूने वाला दिल, क्या नहीं कर सकता है,
हर भारत वासी को, नित नया हौसला दिलाना है।

वतन से प्यार का ज़ज्बा, हर दिल में जगा देना है,
शमा स्वतंत्रता सेनानी वाली, रग-रग में जला देना है।

अब बंद करो यह नफरत जो खून बहाती है,
चुप रहें जो कहते हैं इससे जन्नत मिलती है

कोई जाकर समझाओ उनको
'जन्नत तो मानवता में बसती है'

हम लहराएँगे हर जगह ये तिरंगा
नशा ये हिंदुस्तान की शान का हैं!

तीन रंगो से रँगा तिरंगा, अपनी ये पहचान है,
हम देश के वासियों को इस पर अभिमान है।

तिरंगा ध्वज लहराए

हरिहर झा
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

जिसका गीत बहे, गंगा का झरना गाए
भारत माँ की शान, तिरंगा ध्वज लहराए।

युवा शक्ति नेता सुभाष की कसमें खाती
जिसकी धरती शस्य-श्यामला, रत्न उगाती
कबीर धर देते चादर, होती ना मैली
सरल सादगी, गहरा चिंतन किसकी शैली
गाँधी, लाल बहादुर, नज़र सामने आए
भारत माँ की शान, तिरंगा ध्वज लहराए।

राम छोड़ दें राजपाट भी हँसते हँसते
ज्ञान प्राप्त हो, बुद्ध नहीं वैभव में फँसते
बोध मिले, थोथे अभिमान का तर्क नहीं है
गिरधर को मुरलीधर कह दो, फर्क नहीं है
रानी मीरा, गिरधरदासी होना भाए
भारत माँ की शान, तिरंगा ध्वज लहराए।

वीर पन्ना धाय ने सुत बलिदान किया था
किन किन वीरों ने सर्वस्व त्याग दिया था
कटे शीश तो भी क्या? कभी न शीश झुकाता
त्याग दधीचि का अब तक है याद दिलाता
भूखों को हम खिला खिला कर, ही खुद खाए
भारत माँ की शान, तिरंगा ध्वज लहराए।

जादूगर का देश? नहीं उपहास चलेगा
शून्य दिया गणित को, बाधा-शून्य फलेगा
कंप्यूटर हाथों में, जादू खूब चलेगा
धर्म-ज्ञान भी साथ साथ में खूब पलेगा
स्तुति देवता करते जिसकी नहीं अघाए
भारत माँ की शान, तिरंगा ध्वज लहराए।

अद्भुत देश

अम्बे कुमारी
बोधगया, बिहार, भारत

ज्ञानमयी, सुपूजित धरती
धरती पर वरदान है,
आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा
भारतवर्ष महान है।

ज्ञान की गौरवमयी किरणें,
इसी देश से फूटी हैं।
इसी देश पर सबसे पहले,
वेदों की वाणी गूँजी है।

नर में ही नारायण का दर्शन,
इसी देश में होता है।
सभ्यता की प्रथम किरण,
इसी धरा पर फूटती है।

ऋषियों की संतान कहलाने पर,
हम गौरव पाते हैं।
हिंद देश की प्यारी धरती,
हम हिंदुस्तानी पुकारे जाते हैं।

त्यागपूर्वक भोग करो का मंत्र,
यह भूमि सिखलाती है।
विश्वविजयी नृप भी यहाँ,
मिट्टी के पात्र में खाते हैं।

अद्भुत है यह देश,
निष्काम कर्मयोग सिखलाता है।
यहाँ तो युद्धक्षेत्र भी,
ज्ञानक्षेत्र बन जाता है।

लोककल्याण की खातिर नृप,
यहाँ संन्यासी बन जाता है।
फिर सारे विश्व में,
अहिंसा,करुणा का सन्देश सुनाता है।

यहाँ वारांगना 'आम्रपाली' भी,
बौद्ध भिक्षुणी बन जाती है।
नारी सशक्तिकरण का वह,
नया इतिहास रच जाती है।

यहाँ नदियाँ-निर्झर बहते हैं,
जो अमृत-तुल्य जल बहाते हैं।
गंगा-यमुना में स्नान कर,
सारे पाप धुल जाते हैं।

यहाँ के कण-कण में,
एक पावनता दिखलाई देती है।
जीवन को भारतवासी,
एक उत्सव सम मनाते हैं।

धर्म, अर्थ और काम के बाद,
वे अंततः मोक्ष पा जाते हैं।
अद्भुत है यह ज्ञानभूमि जहाँ,
ईश्वर भी मानव रुप में आते हैं।

अद्भुत लीलाएँ करते हैं,
इस धरा को धन्य बनाते हैं।
मेरे भारतवर्ष की धूलि,
चंदन के समान है।

प्रातःकाल में बहती यहाँ,
मलयानिल बयार है।
छः ऋतुएँ इस धरती पर,
अपना सौंदर्य दिखाती हैं।

नर में ही देवत्व का गौरव
यही भूमि जगाती है,
मानवता का संपूर्ण बोध
यही भूमि कराती है।

लिपि प्रेम

उर्मिला देवी चौधरी
दुबई, यू.ए.ई.

रूप बदलता नित भाषा का, नया रूप नित धरती।
जैसी कल थी आज नहीं, कल न आज-सी होगी।

लिपि इतिहास यही बतलाए, पथ में मोड़ अनेकों आए।
कल-कल बहती नदी नागरी, संग लिए अनगिनत धाराएँ।

रूप पूर्णतः इसका वैज्ञानिक, शब्द निरर्थक कोई न पाए।
लिपि प्रयोग जो बदल रहे, ठोस आधार न कोई बताए।

आगम स्वर का हुआ कहीं, कहीं व्यंजन का लोप हुआ।
मान घटा चंद्रबिंदु का, हलंत का नामो निशान मिटा।

टाइपिंग की दुनिया में, वर्तनी अशुद्ध का वर्चस्व बढ़ा।
दिखें उदाहरण ऐसे ढेरों, विचार है जिन पर ज़रूरी हुआ।

रूप हो रहा विकसित या फिर, उन्मुख नागरी अन्य दिशा।
आह्वान हो रहा कलमकार का, लिपि अधूरी जिसके बिना।

एकरूप हो उपयोग वर्तनी, कोशिश यही रहे तुम्हारी।
नव नियम निदेशालय के, जन-जन को लगें व्यवहारी।

फ़र्ज़ खड़ा सामने तुम्हारे, क्यों उससे पीठ है फेरी।
प्रेम यदि तुम्हें साहित्य से, तो क्यों लिपि प्रेम से दूरी।

पीढ़ियाँ सीखें आने वालीं, कुछ ऐसा काम कर जाओ ।
अपनी कलम से युग जो बाँधा, अब लिपि रूप सजाओ।

लिखा तुम्हारा यह साहित्य, पढ़ा सदियों तक जाएगा।
इस युग के भाषा रूप का, परिचायक वह कहलाएगा।

अमर तुम्हें किया जिस रचना ने, उसका कर्ज़ चुकाओ तुम।
साहित्य को ईश्वर सम मानते, इसे पूजा-सी निभाओ तुम।

हिंद महासागर से चंद बूँदें

कलणि विहंगा पनागॉड
बण्डारगम, श्रीलंका

तड़के में ही गंगा मैया के साहिल से,
गूँजने लगती है श्लोकों की मधुर आवाज़।
भाग जाती है सुबह की ठंड भी,
सुनकर भारत माँ के वे अमृत-गाने।।

कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक,
बहता है पानी बुझाता हुआ सब की प्यास।
हिंदू, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध, सिख हर धर्म पर,
छिड़कती हैं नदियाँ अपना निर्मल जल बराबर।।

जैसे कि पूड़ी, पोहा, इडली, डोसा,
बनते हैं एक ही कड़ाही में,
अनेक जातियों के फूल भी,
खिलते हैं भारत माँ की गोद में।
पूरब से उगता सूरज भी,
प्रकाश देता हर एक जाति को बराबर,
बिन थके सब हित के लिए सदानंद।।

अनेकता में एकता औ' एकता में अनेकता भरा,
यह वतन महान है दुनिया जहाँ में सबसे ज़्यादा।
इस जन्म में न हुआ तो क्या,
प्रार्थना करती हूँ भगवान से सदा,
कि अगले जन्म में हो जाए जन्म मेरा,
भारत माँ की ही गोद में भला।।

भारत माँ की जय।।

हमारी संस्कृति हमारा अभिमान

नमिता सिंह 'आराधना'
अहमदाबाद, भारत

जहाँ ज्ञान का प्रथम दीप जला
आलोकित सारा जग हुआ।
ज्ञान-सूर्य की स्वर्ण रश्मियाँ
बिखेर विश्व में, भारत धन्य हुआ।

हमारी भारतीय संस्कृति महान
हम भारतीयों का है यह अभिमान।
सदाचार और शिष्टाचार
हमारी संस्कृति के मूल आचार।

वेद, उपनिषद, रामायण, गीता, पुराण
भारतीय संस्कृति के हैं ये प्रतिमान।
शंखनाद, मंत्रोच्चारण और हवन
भारत में ही मिलता ये अनूठा संगम।

हमारी महान भारतीय संस्कृति
विविधताओं की अनूठी समीकृति।
भिन्न-भिन्न भाषाएँ,जाति और धर्म
सब मिल मनाते एक दूजे के पर्व।

अतिथि देवो भवः का ज्ञान
आथित्य में भर देता प्राण।
ऐसे अनूठे संस्कार रखता
है हमारा भारतवर्ष महान।

नदियाँ भी हैं पूजी जातीं
माँ समान सम्मान हैं पातीं।
चंद्र देव,सूर्य देव, धरती माता
ऐसे संबोधन कहाँ जग पाता।

वायु, अग्नि, वृक्ष, जल, धरा
सभी माने जाते पूजनीय।
इनके बिना जीवन नहीं
निधियाँ ये हमारी अतुलनीय।

माता-पिता का चरण-वंदन
गौओं का भी होता पूजन।
बुजुर्गों, गुरुओं का आदर सम्मान
हमारे देश की यह पहचान।

भारतीय संस्कृति है सदियों पुरानी
हमारे पुरखों की है ये अमूल्य थाती।
खो न जाए आधुनिकता की दौड़ में
इसे अक्षुण्ण रखना, है हमारी जिम्मेदारी।

ऋषि-मुनियों की तपोभूमि है भारत
अध्यात्म की अद्भुत मिसाल है भारत।
विश्व को दिया योग का अद्भुत ज्ञान
विश्व भी करता इसका गुणगान।

नृत्य कला और गायन, वादन
देते भारत को अलग पहचान।
ऐसी पावन संस्कृति का वर्णन
शब्दों में कैसे करूँ मैं बखान?

एहन सुन्दर भारत

नीलम झा
हैदराबाद, भारत

अपन सुन्दर भारत,
अपन अभिनव भारत,
अछि अति विशाल औ’ महान यौ,
उत्तरमे बैसल छथि शिव कैलाश यौ,
दक्षिणमे कन्याकुमारी अछि सागरक संगम स्थान यौ,
पूरबमे गंगासागर करैत छथि मोक्ष प्रदान यौ,
पश्चिममे द्वारिका नगरिमे छथि कृष्ण विराजमान यौ।

अहि माटिक मिथिलांचल नगरी अछि, सीता मैय्या कऽ धाम यौ।
एतय भेटलैन रामके अपन प्रेम यौ,
रामायण कथा रहत अपूर्ण बिनु अई सुताके नाम यौ’
अपन अभिनव भारतवर्ष, अछि अति महान यौ ।

अपन भारतमे अछि मिथिला सन-सन अगणित नगरी यौ’
अपन भारत, अछि बहुविधि संस्कृति कऽ समन्वय स्थान यौ’
गंगाक पावन जल करैत छथि, एतय सबहक कल्याण यौ,
दधीचि, सुश्रुत, चाणक्य, विवेकानंद, बुद्ध, महावीर
भेला अवतरित एतय औ’ कयलाह विश्वक कल्याण यौ।
गार्गी, मैत्रेयी, उर्मिला, अनुसूया, शबरी सन पुत्री छलथि
भारतमे आदिकाल यौ,
हिनक बल, बुद्धि-विद्या देखि अचंभित भेल संसार यौ।
सुनि हिनकर गाथा चलू आब, आगू यौ।

अपन अभिनव भारत,अछि दुनिया कऽ सिरमौर यौ,
चलू चली, भारत कऽ समृद्धिमे करै लऽ किछु योगदान यौ,
जाहि सँ कहाबय भारत फेर सँ जगतगुरु यौ,
नालंदा सन विश्वविद्यालय बना, रोकू प्रतिभा पलायन यौ।
जौँ हमरा अहाँके धिया–पुता कऽ भेटतैन

अपने देशमे हावर्ड, स्टेनफोर्ड, वार्टन, ऑक्सफ़ोर्ड सन संस्थान यौ,
नञि जयताह पेट पालय ओ परदेश यौ,
चलू एतय करि आब शिक्षा कऽ उत्तम प्रावधान यौ
अपन भारत माता करैत छथि इएह आह्वान यौ।।
प्रवासी बनी बड्ड मोन पड़ैत अछि अपन खान – पान यौ
नञि बिसरैत छी अपन लोक-संस्कृति औ' माटि कऽ सुगंध यौ
आऊ–आऊ, आगू आऊ! मिलि-जुलि करी देश कऽ विकास यौ,
अपन अभिनव भारत अछि सबहक़ अभिमान यौ।
अपन अभिनव भारत अछि अति महान यौ,
अपन सुन्दर भारत अछि महान यौ।

भारत की संस्कृति निराली

नीलम भास्कर
बागपत, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत की संस्कृति है निराली,
सबसे अनोखी जानी पहचानी।
बड़ों की सेवा और छोटों को दुलार।
हमारी सुख समृद्धि का यही आधार।
सबका करती यह मान सम्मान।
इसीलिए हम गर्व से कहते हैं,
मेरा भारत देश महान।

सद्गुणों से भरी हर बालिका है यहाँ,
सदाचारी हर बालक भी है जहाँ,
मर्यादित हर नारी है यहाँ,
पुरुष है प्रबल आदर्शों की खान।
संस्कारों की यह भूमि कहलाती
सबका करती यह मान सम्मान।
इसीलिए हम गर्व से कहते हैं,
मेरा भारत देश महान।

वेद पुराणों ने जो बतलाया।
करते नहीं हम किसी का अपमान।
भिन्न-भिन्न हैं भाषाएँ हमारी।
जिनसे महकता हमारा हिंदुस्तान।
संस्कारों की यह भूमि कहलाती।
सबका करती मान सम्मान।
इसीलिए हम गर्व से कहते हैं,
मेरा भारत देश महान।

माँ है ईश्वर, गुरु है भगवान,
करते हैं हम सभी उनका गुणगान।
त्योहार मनाते हैं मिलजुल कर,
परिवार की रीति है महान।
सबका होता मान सम्मान।
इसीलिए हम गर्व से कहते,
मेरा भारत देश महान।

भारतीय संस्कृति

नीलिमा तिग्गा
अजमेर, राजस्थान, भारत

विलोभनीय हमारी भारतीय संस्कृति
समृद्ध शिक्षा और नारी महति
ऋषियों की अविरत तपस्या
ज्ञान कुंड चार वेद निर्मिति।

ब्रह्माण्ड हुँकार ओमकार
अज्ञान तिमिर शरसंधान ज्ञान तत्पर
ब्रह्माण्ड ब्रह्मा, विष्णु भू-जल
शून्य से शिव चैतन्य अंगीकार।

बाल्यावस्था, युवावस्था गुरुकुल अध्ययन
पठन, चिंतन, मनन, वेद विद्या ज्ञान
ब्रह्मा,विष्णु, महेश परब्रह्म
सर्वोच्च मान गुरु महान।

सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमद:
गुरु मंत्र शिष्य को ये सर्वदा
गुरु प्रति मन में सम्मान
एकलव्य अंगुष्ठ द्रोणाचार्य समर्पित:।

मातृ देवो भव: पितृ देवो भव:
आचार्यदेवो भव: अतिथि देवो भव:
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्
भारतीय जीवन दर्शन, जागतीक प्रेम भाव।

नारी शक्ति नव रूप धारिणी
दुर्जन संहार हेतु बने शस्त्राणी
श्वेत वसन हंसवाहिनी शारदा
शिक्षा, विद्या, कला, वीणाधारिणी।

आर्यभट्ट शून्य खोज जगत वरदान
भगवद्गीता दे संसार आचार नियमन
सर्वे सन्तु निरामय:
रामायण सदाचार वचन जतन।

हर क्षेत्र में हर गुणों में महान संपदा
शठे शाठ्यम समाचरेत दुर्जन आपदा
सदाचार, भक्ति, प्रीति, शौर्य, त्याग
शस्त्र, शास्त्र, नीति अलंकृत ज्ञानदा।

मेरा भारत

पायल गुप्ता 'पहल'
अजमेर, राजस्थान, भारत

खुद के चेहरे से पहले
देखती ईश्वर में अपनी नई सुबह को
भागती हुई मशीन सी खुद
इंसान सा प्यार लुटाती सब पर
रसोईघर में मसालों को चुनकर
उन्हें खाने के साथ पकाकर
बिखेरती रंग और स्वाद
ये रंग भारत ही तो है।

अपनों को देती
अपने बच्चों की तरह दुलार
करती बचत यूँ
पैसों को देती बरकत
देती बच्चों को ज्ञान और संस्कार
लड़ जाती अपनों के लिए
लेकर दुर्गावतार
ये अवतार भारत ही तो है।

खुद को दरकिनार करके
अपनों की पसंद को
अपने पहले रखना
खाने के समय
कम सब्ज़ी देख कहना
अचार मुझे आज खाना
ये परवाह भारत ही तो है।

हो घर से दूर
जब कोई मोर्चा
सँभालेगी वह बड़ी शिद्दत से
पर आत्मा अपनी कहीं
जोड़ आएगी उसी घर से
ये समर्पण भारत ही तो है।

भारत के मानचित्र-सा
विशाल हृदय
विविध वेशभूषा संस्कृति-सा
भाव वैचित्र्य
हर पल दिखाती
भारत का एक रूप
उसके दामन की छाँव
रोकती है तीखी धूप
आरती वाली सुबह उससे
लोरी वाली रात उससे
ये धूप-छाँव भारत ही तो है।
ये सब मेरा भारत ही तो है।।

हमारी संस्कृति

पूनम मिश्रा 'पूर्णिमा'
नागपुर, महाराष्ट्र, भारत

हमारी संस्कृति...
जहाँ बहती गंगा-यमुना,
जहाँ खड़ा हिमालय,
जहाँ बसती है जन्नत,
ऐसा मेरा देश महान।

जहाँ है काशी-ऋषिकेश,
जहाँ जन्मे राम-कृष्णा,
जहाँ होती देवी पूजा,
ऐसा मेरा देश महान।

जहाँ गीता, कुरान, बाइबल,
जहाँ नानक, कबीर, ज्ञानेश्वर,
जहाँ गाते भजन-कीर्तन,
ऐसा मेरा देश महान।

जहाँ खेले रंगो की होली,
जहाँ जलते नेह के दीपक,
जहाँ बाँटे ईद सेवइयाँ
ऐसा मेरा देश महान।

जहाँ होती रास-लीलाएँ,
जहाँ खेले गरबा-भाँगडा,
जहाँ है बिहू, भरतनाट्यम
ऐसा मेरा देश महान।

प्यारी हिंदी

मधु गोयल
लखनऊ, भारत

है
मेरी
दुलारी,
भाषा हिंदी।
सजती जैसे,
अखिल विश्व के,
माथे पर हो बिंदी।
सारे जहाँ में नाम है,
अपना बनाना काम है।
मेलजोल का इसे है चाव,
रखती न किसी से बैरभाव।
'ग़ैरों' के शब्द है अपनाती,
जल्दी घुल-मिल है जाती।
इससे मेरा मान है,
देश की ये शान है।
मानते हैं सभी,
विश्वभर में
हिंदी प्यारी,
सबसे
न्यारी
है।

मेरा भारत वर्ष

माणक तुलसीराम गौड़
चूंटीसरा, नागौर, भारत

भरतखण्ड यह महादेश है
त्योहारों से करता शृंगार,
हरी-भरी संस्कृति यहाँ की
स्नेह परस्पर इसका आधार।

उत्तर दिशा में हिमगिरि साजे
जिसमें कैलाशपति का वास,
सागर दक्खिन चरण पखारे
करता माँ की पूजा अरदास।

ऋषि-मुनि यहाँ आदर पाते
नारायण से है गुरु बड़ा,
संस्कार-संस्कृति पूँजी है
जिनके कारण जन लड़ा।

विन्ध्याचल मध्य का पर्वत
वन सघन मनमोहक है,
अन्न-धन देती धरा हमारी
जन-जन की जो पोषक है।

स्वयं प्रकृति पोषित करती है
भरती यहाँ का जल भण्डार,
भाँति-भाँति की ऋतुएँ यहाँ पर
सुन्दर-सुन्दर पर्व-त्योहार।

स्वेद बहाते कृषक यहाँ पर
प्राणियों का भरते पेट,
नर-नारी यहाँ करते मेहनत
खनिज सम्पदा है यथेष्ट।

पर्वत-नदियाँ पूजी जातीं
अर्घ्य देते दिनकर को,
आदर देते गो माता को
करते नमन सुधाकर को।

हर ऋतु और हर माह में
भिन्न-भिन्न आते पर्व हैं,
रंग-रंगीली, भाँत-भँतीली
श्रेष्ठ संस्कृति पर गर्व है।

सहिष्णुता यहाँ की थाती
दया-ममता है पुरजोर,
इन्द्र-धनुषी संस्कृति हमारी
इसकी प्रशंसा करूँ क्या और।

हिन्दवी

राकेश मल्होत्रा
लिंकनशायर, इलिनॉइ, यू.एस.ए.

सभ्यता और संस्कृति की नदिया है हिन्दी,
देश विदेश मे बहती यह अविरल धारा है।

संपर्क और संवाद का सेतु है यह अनुपम,
सहजता और सरलता का है अद्भुत संगम।

स्वर और व्यंजन हैं सुन्दर इसके आभूषण,
देवनागरी लिपि में वर्णो का सुन्दर मिश्रण।

जितनी प्रकार की ध्वनियाँ उतने ही हैं अक्षर,
एकरूपता ऐसी परिलक्षित होती और किधर।

पूर्वजों की धरोहर को यदि संजो कर रखना है,
तो हिन्दी का उपयोग गर्व से हमको करना है।

संकल्प हमको केवल इतना ही करना है,
हस्ताक्षर अपना अब हिन्दी में करना है।

अभिमान है हिन्दी

संजीव कुमार विश्वकर्मा
दमोह, मध्य प्रदेश, भारत

हिन्दी है मातृभाषा, हिन्द देश की प्यारी,
माँ के समान ही लगती है सबको प्यारी।
सभी भाषाओं को अपने में समेट लेती,
सहज, सरल, अभिव्यक्ति हिंदी हमारी।।

देवभाषा संस्कृत से जन्मी हिन्दी हमारी,
रस, छंद, अलंकारों से सजती है हरदम।
खुसरो की पहेली, कहावतों से भरी हुई,
प्यार, दुलार सिखाती है हिन्दी है हमारी।।

सम्मान संस्कारों का होता पालन-पोषण,
भावों से भरी है देववाणी हिन्दी दुलारी।
माँ के आँचल सी करती वाणी की छाया,
भारतीय संस्कृति के प्राण हिंदी हमारी।।

हिन्दी जन-जन की भाषा मेरी अभिलाषा,
संगम की तरह मिलती नदियों-सी है हिंदी।
मूल्यों का बोध कराती प्रेम सुधा बरसाती,
सभी लेते ज्ञान जगत में ऐसी हिंदी हमारी।।

बिंदी बनकर चमक रही भारत माता की,
हम वंशज हैं इसके हिन्दी वाणी है हमारी।
संचय कोश ज्ञान की अमृतधारा सी चंचल,
'संजीव' भारत का अभिमान हिंदी हमारी।।

वो धरा भारत भूमि

संतोष भाऊवाला
बैंगलोर, भारत

सागर से जलकलश भर मेघमाला,
प्यास धरती की बुझाती है।
जहाँ हिमशिखरों से ओम की,
प्रतिध्वनि गूँजा करती है।
वो धरा भारत भूमि कहलाती है।

जहाँ अथाह सागर की गरजती लहरों में,
नदियों की कलकल ध्वनि में,
महासिन्धु के गहन गम्भीर उद्घोष में,
मंत्रो की प्रतिध्वनि गूँजती है।
वो धरा भारत भूमि कहलाती है।

जहाँ सूर्य की प्राणदायिनी किरणों में,
चन्द्रमा के शीतल प्रकाश में,
कोटि तारों की झिलमिल में,
राम कृष्ण की छवि दिखती है।
वो धरा भारत भूमि कहलाती है।

जहाँ पौधों की नई कोंपलों में,
फूलों की खिलती पंखुड़ियों में,
पृथ्वी-अम्बर के कण-कण में,
ईशकृपा की झलक दिखती है।
वो धरा भारत भूमि कहलाती है।

जहाँ का बच्चा-बच्चा सिपाही है,
तिरंगे की आन पर लुटा दे प्राण है,
जहाँ हर धड़कन मे बहता प्यार है,
वसुधैव-कुटुंबकम की भावना खिलती है।
वो धरा भारत भूमि कहलाती है।

भारत की महान संस्कृति

सी. कामेश्वरी
हैदराबाद, भारत

भारत-भू की संस्कृति महान,
महान है इसका साहित्य,
साहित्य की अनेक विधाएँ हैं,
हैं गाथाएं भी अनंत,
अनंत है इसका इतिहास,
इतिहास के वीर-वीरांगनाएँ महान,
महान आत्माएँ भी हैं अनुकरणीय,
अनुकरणीय महापुरुष-स्त्री,
स्त्री-पुरुष रथ के चाक,
चाक ये चलते निरंतर,
निरंतर बहते नद-नाले,
नाले बिजली का बने स्रोत,
स्रोत पहुँचे ये घर-आँगन,
आँगन हुए प्रकाशित,
प्रकाशित हुआ यह वतन,
वतन हमारा कहलाए हिंदुस्तान।

हिन्दी की अलख जगाऊँगी

सीमा शर्मा
दिल्ली, भारत

कसम मुझे है इस हिन्द की
हिन्दी को अपनाऊँगी
हिन्दी में ही कलम चलेगी
हिन्दी की अलख जगाऊँगी।

मेरे देश की मातृभाषा हिन्दी
मेरे देश की राजभाषा हिन्दी
मेरे देश का सम्मान हिन्दी
राष्ट्रभाषा के लिए आवाज उठाऊँगी
हिन्दी में ही कलम चलेगी
हिन्दी की अलख जगाऊँगी।

पंत, प्रसाद, महादेवी वर्मा ने
हिन्दी काव्य को चमकाया खूब
मन्नू भंडारी, प्रेमचंद, महावीर ने
हिन्दी गद्य को महकाया खूब
इनकी रचनाएँ खूब पढ़ूँगी
और सब को पढ़वाऊँगी
हिन्दी में ही कलम चलेगी
हिन्दी की अलख जगाऊँगी।

माना अंग्रेज़ी है मजबूरी
पर देश में हिन्दी बोलना हो जरूरी
घर के हो या बाहर के कार्य
सब हिन्दी में ही करेंगे हम
हिन्दी बिन कोई कार्य न हो
हिन्दी को पहचान दिलाऊँगी
हिन्दी में ही कलम चलेगी
हिन्दी की अलख जगाऊँगी।

हिन्दी मेरी प्यारी है
सबके मन को भाती है
जब भी इसको अपनाते हैं
सरल सहज बन जाती है
जम्मू से कन्याकुमारी तक
परचम इसका लहराऊँगी
हिन्दी में ही कलम चलेगी
हिन्दी की अलख जगाऊँगी।

आने वाली नई पीढ़ी को
ज्ञान हमें ही देना होगा
वे भी सम्मान करें हिन्दी का
पहले सम्मान हमें करना होगा
नन्हे-मुन्ने बच्चों को मैं
हिन्दी से प्रेम करना सिखाऊँगी
हिन्दी में ही कलम चलेगी
हिन्दी की अलख जगाऊँगी।

एक दिन हिन्द में गूँजेगा
जय हिन्दी का नारा
विदेशों में भी बोलेंगे हिन्दी
जो भी होगा देश का प्यारा
चहुँओर उद्घोष हिन्दी में
एक दिन मैं करवाऊँगी
हिन्दी में ही कलम चलेगी
हिन्दी की अलख जगाऊँगी।

मेरा हिंदुस्तान है

सीमा हरि शर्मा
भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

यूँ ही जय-जयकार नहीं है,
मेरा देश महान है।
है विशेष इस माटी में यह,
मेरा हिंदुस्तान है।

वन्दित, पूजित भू माता है,
हिमगिरि पिता कहलाता है।
सूरज, चन्दा, पावक, समीर,
अम्बर भी पूजा जाता है।
बरगद, पीपल, औ' माँ तुलसी,
गुण खोजे नीम के अंदर भी।
नदियों को पूजा सदियों से,
पूजा है देव समुन्दर भी।
जिनसे तृण भर भी पाया है,
करता यह सम्मान है।
मेरा हिंदुस्तान है।
यह मेरा हिंदुस्तान है।

गायों को कहते हैं माता,
नागों को भी पूजा जाता।
पशु-पक्षी सबका आदर है,
तोता भी रामधुन है गाता।
पशु, देवों के भी वाहन हैं,
पंछी भी पूजित पावन हैं।
सम्बंध प्रकृति से, जीवों से,
हम मानव के मन भावन हैं।
आत्म-शक्ति में देश सुनो यह
दुनिया से धनवान है।
मेरा हिंदुस्तान है।
यह मेरा हिंदुस्तान है।

नव वर्ष चैत्र में आता है,
जी भर किसान मुस्काता है।
धरती सज-धज कर इठलाती,
मधुमास रंग बरसाता है।
संयम-नियमों का चातुर्मास,
रिश्तों को सावन गाता है।
जग से जो चले गये; आश्विन,
पुरखों की याद दिलाता है।
विश्लेषण वैज्ञानिक है,
मन-दर्शन का विज्ञान है।
मेरा हिंदुस्तान है।
यह मेरा हिंदुस्तान है।

आक्रांता जो भारत आये,
सबने माटी के गुण गाये।
कितने प्रहार झंझा सहकर,
आदर्श न अपने बिसराये।
सभ्यता बचाने को अपनी,
क्या कुछ न सहा इस माटी ने।
जो बसा यहाँ अपनेपन से,
दूजा न कहा इस माटी ने।
जन्मे ईश्वर भी बार-बार
देवों का प्रिय स्थान है।
मेरा हिंदुस्तान है।
यह मेरा हिंदुस्तान है।

आदर्श वीर इस तरह जिये,
टूटे न वचन तज प्राण दिये।
नारी की आत्मशक्ति देखो,
सम्मान रहे, जौहर भी किये।
संस्कारों में शामिल विवाह,
संविदा नहीं तन-बन्धन का।
गठ-बंधन पावन अन्तस् का,
माथे रोली, कुल वंदन का।
सप्तपदियाँ ये सात जनम तक,
सात वचन का मान है।
मेरा हिंदुस्तान है।
यह मेरा हिंदुस्तान है।

हैं वेद, उपनिषद, गीता है,
यहाँ राम, कृष्ण हैं सीता है।
संस्कार, त्याग, तपस्या है,
रामायण मानव जीता है।
है मन अगुआ सब कर्मों का,
जीवन का मतलब सीधा है।
है 'वसुधैवकुटुम्बकम' भाव,
पर 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा' है।
नचिकेता के प्रश्नों का भी,
यम ने दिया निदान है।
मेरा हिंदुस्तान है।
यह मेरा हिंदुस्तान है।

पीयूष पर्व भारती

सुषमा देवी
हैदराबाद, भारत

पीयूष पर्व भारती,
उतारे तेरी आरती।
सुवर्ण अक्षरों में लिखा,
संस्कृति गौरवमय दिखा।

अतीत के खोह में भूले,
भविष्य की टोह में चले।
वर्तमान को सँवार लो,
स्वयं को तुम सुधार लो।

उत्कर्ष भारत वर्ष का,
कारण हमारे हर्ष का।
कर्म पुनर्जन्ममयी वसुंधरा,
सतत अग्रसर धरा।

मेरुदंड भारती सपूत,
कृषक को कलंकित करें कपूत।

वाणिज्य का विस्तार हो,
निर्धनता का निस्तार हो।

क्षत्रिय बन सेना सदा,
रक्षण में निरत सर्वदा।
राजा-प्रजा होकर निशंक,
जीवन बने सुंदर शशांक।

जब घात शत्रु के लगे,
प्रचंड भानु से दिखे।
अमृत छके हुए हैं हम,
गरल पचा लिये हैं हम।

स्वतंत्रता के अमृतवर्ष में
आर्यावर्त के प्रकर्ष में।
संस्कृति समन्वित संकल्प हो,
न और कोई विकल्प हो।

भारत की संस्कृति

सुषमा 'सौम्या'
लखनऊ, भारत

राजा बलि ने कर दिया, तीन लोक का त्याग।
भले तिमिर पाताल का, मान लिया निज भाग।।

महावीर ने बुद्ध ने, त्यागा सुख का राज।
पद लोलुपता हो नहीं, यही जरूरी आज।।

कवच कुण्ड़लों को दिया, दानवीर थे कर्ण।
अंतिम क्षण तक कृष्ण को, दान दाँत का स्वर्ण।।

गुरू को देता दक्षिणा, एकलव्य अंगुष्ठ।
काट दिया निज ज्ञान ही, गुरू को कर संतुष्ट।।

चन्द्रगुप्त राजा बना, सहयोगी चाणक्य।
निर्विकार सत्ता विमुख, पूर्ण किये कर्तव्य।।

सदा सत्य ही बोलते, धर्म राज का देश।
सच के पथ पर ही चलें, सहें युधिष्ठिर क्लेश।।

हरिश्चन्द्र सर्वस्व ही, कर देते हैं दान।
महलों से श्मशान तक, करें सत्य का मान।।

वचन पूर्ण करना रही, रघुकुल दशरथ रीत।
आड़े आ पायी नहीं, राजपुत्र की प्रीत।।

महलों का सुख त्यागकर, लखन गये वनवास।
भारत का आदर्श है, वरण किया संन्यास।।

भरत सिंहासन छोड़कर, धरे पादुका पूज
त्याग देश आदर्श है, रखना यह महफूज।।

विजयी हो श्रीराम ने, पहनाए थे ताज।
स्वयं नहीं नृप बन गये, करना इस पर नाज़।।

कृष्ण कंस को मारकर, बने न स्वयं नरेश।
अग्रसेन को सौंप बृज, गये स्वयं परदेश।।

भारत की गौरव कथा, भारत का यशगान।
संस्कृति की समृद्धि को, सादर नमन प्रणाम।।

यही जगद्गुरू देश था, फिर पा सकता मान।
विश्व शक्ति बनकर सबल, पाए फिर सम्मान।।

कर्मठ होकर हम करें, नव भारत निर्माण।
रहें समर्पित देश पर, वारें इस पर प्राण।।

अक्षत भारत भू रहे, हिन्दुस्तान अखण्ड।
बसे इण्डिया हृदय तक, धरती का मार्तण्ड।।

सोन चिरैया फिर बने, प्यारा भारत वर्ष।
पुरा सभ्यता देश की, गुरुता गहे सहर्ष।।

गाँधी के राम

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

हे
राम!
केवल
दो अक्षर!
अंतिम पाठ
मानवता हेतु,
तुमने सिखाया था।
किन्तु हम कुछ सीखे?
'राम' मानवता का रूप,
प्रेम आत्मीयता का स्वरूप।
आओ, गाँधी के राम को जाने
सत्य, शांति-स्वरूप माने।
सत्य के वाहक गाँधी,
शांति के दूत गाँधी।
दीन हितकारी
अजातशत्रु
राष्ट्रपिता।
महात्मा
बापू
ॐ

संत विनोबा भावे

नितीन उपाध्ये
दुबई, यू.ए.ई.

सुनो सुनो तुम कथा सुनो भारत के संत महान की,
अलख जगा के राह दिखाई जिसने है भूदान की।

नाम विनायक रखा, नरहरि शम्भू का वो लाल था,
निर्लिप्त रहना सीखा माता रुक्मणि का ही कमाल था,
चाह सभी के मन में हो भगवन ऐसी संतान की,
सुनो सुनो तुम कथा सुनो भारत के संत महान की।

प्रिय विषय था गणित और रचता था कविताएँ भी,
भगवद गीता को भी पढता, संस्कृत की ऋचाएँ भी,
चिंतन और मनन से उसने अपनी ही पहचान की,
सुनो सुनो तुम कथा सुनो भारत के संत महान की।

निकल पड़ा भारत को खोजने जा पहुँचा वो बनारस को,
गाँधी जी के भाषण ने फिर हंस बना दिया सारस को,
गुरु-शिष्य की अमर यह जोड़ी थाती हिन्दोस्तान की,
सुनो सुनो तुम कथा सुनो भारत के संत महान की।

गांधी बाबा बोल उठे कि मैंने हीरा पाया है,
लेने को आते हैं सब यह तो देने आया है,
गूँज उठी मन में सरगम स्वाधीनता के जय गान की,
सुनो सुनो तुम कथा सुनो भारत के संत महान की।

अंग्रेजों ने जेल जो भेजा गीता पर व्याख्यान दिये,
अपने साथी कैदियों के मन में माँ भारती के लिए,
स्नेह जगाया, लौ जलाई मानवता-सम्मान की,
सुनो सुनो तुम कथा सुनो भारत के संत महान की।

अहिंसा के थे सच्चे पुजारी युद्ध की थे निंदा करते,
लड़ने वाला और न लड़ने वाला दोनों ही मरते,
समझाते थे सब को बातें मानव के उत्थान की,
सुनो सुनो तुम कथा सुनो भारत के संत महान की।

देश हुआ स्वतंत्र तो जनसेवा में जीवनदान दिया,
भूमिपुत्रों की देख दुर्दशा सेठों से आह्वान किया,
जो जोतेगा वह पायेगा है ये भूमि किसान की,
सुनो सुनो तुम कथा सुनो भारत के संत महान की।

भगत सिंह

बृजबाला गुप्ता 'अर्चना'
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सजा मिली जब भगत सिंह को
फाँसी का फरमान सुनाया।
हँसते-हँसते झूम उठा वह
तनिक नहीं घबराया।

"इंकलाब जिंदाबाद"
बार-बार पुकार रहा था।
आज़ादी का आए सवेरा
शेर हमारा दहाड़ रहा था।

भारत माता के बेटे हैं हम
काम उसी के हम आए।
जीवन कर बलिदान उसी पर
उसका स्वाभिमान बचाएँ।

भारत माँ पर हो न्योछावर
हँसते-हँसते झूले हम।
तन मन धन अर्पण कर दे
आज़ादी के दीवाने हम।

भारत माँ का वीर सपूत
आज़ादी का दीवाना था।
हँसते-हँसते झूला फाँसी पर
आज़ादी का परवाना था।

भारत माता ने आज
वीर सपूत को खोया था।
जिसकी याद में उस दिन
बच्चा बच्चा रोया था।

हम भी मिलकर याद करें
भगतसिंह की कुर्बानी।
देश के खातिर जिसने
कर दी बलिदान जवानी।

महाराणा प्रताप

मंजु शर्मा जांगिड 'मनी'
जोधपुर, राजस्थान, भारत

वीर महाराणा प्रताप की,
गाथा गाता यह जग सारा।
शौर्य पराक्रम स्वाभिमान,
का वह चमकता सितारा।

चेतक जैसे वीर अश्व संग,
महाराणा करते शत्रु मर्दन।
होते उस पर सवार राणा,
लहरा लहरा करता वर्धन।

मुगलों संग जो युद्ध किया,
हल्दीघाटी का वह संग्राम।
भीषण नरसंहार हुआ तब,
रण में मच गया हाहाकार।

खून का प्यासा मानसिंह,
व्यूह रचना रच घेर लिया।
खूब चली राणा की असि,
मुगलों को कई ढेर किया।

घायल हुई राणा की आँख,
पवन-वेग हय ने बचा लिया।
स्वाभिमानी राणा का मान,
खुद्दार चेतक ने बचा लिया।

झुका न पाया मरते दम तक,
अकबर को ललकार गया।
घास की रोटी खाकर भी,
वनवास जंगल में काट लिया।

तज दिये राज प्रासाद भी,
पर मेवाड़ की प्यास जारी।
स्वाभिमानी महाराणा ने पर,
हिम्मत कभी नहीं हारी।

बदली राणा ने रणनीति,
फिर की युद्ध की तैयारी।
गोरिल्ला युद्ध के सहारे,
मेवाड़ की जीत अब प्यारी।

सिरमौर बनाया दिवेर को,
पछाड़ने की फिर ठानी।
पिता पुत्र के कदम बढ़े,
काम आया भामाशाह दानी।

मुगलों को दे पटकनी,
मेवाड़ फिर हासिल हुआ।
मेवाड़ की गद्दी पर तब,
महाराणा फिर काबिज़ हुआ।

ऐसा था वीर अभिमानी,
इस माटी का यह लाल।
स्वाभिमानी की अमर गाथा,
हर जन गाकर होता निहाल।

गाँधी राजघाट में जीवित है

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

गाँधी राजघाट में अब भी जीवित है,
उनको जीवित रखना मजबूरी है,
आने वाली पीढ़ी कैसे विश्वास करेगी,
ऐसा भी कोई हो सकता है,
वैसा भी कोई हो सकता है,
हथियार बिना लड़ सकता है,
घरबार बिना रह सकता है।

कैसा बनिया व्यापारी था,
बिना मोल बिक सकता था,
समष्टि के निर्माण में,
व्यष्टि को अर्पण कर सकता था।

अंतिम गरीब तक रोटी पहुँचे,
अपना सब कुछ त्याग दिया,
बलशाली ने घुटने टेके,
कहीं कोई अभिमान न था।

हर टूटन से आहत था जो,
हर बिखराव से जो बिखरा था,
बिखरे को समेटने की कोशिश में,
हर धर्म के आगे झुका हुआ था।

हर मजहब को सहलाने में,
अपने को घायल कर डाला,
अन्तिम रक्त की बूँद भी देकर,
'हे राम' के साथ देह को त्याग दिया।

जीवन की तो बात है क्या,
उनकी मौत का भी व्यापार किया।
ऐसा गाँधी कभी हुआ था
बस यह बतलाने को,
गाँधी अब भी जीवित है।

फ्रेम में जड़ी तस्वीर है गाँधी,
आने वाली पीढ़ी को दिखा सकें,
उनकी करनी को बता सकें,
इसीलिए राजघाट में गाँधी अब भी जीवित है,
गाँधी को जीवित रखना मजबूरी है।

सुभाष चंद्र बोस

रेखा शर्मा
बूँदी, राजस्थान, भारत

जब त्राहि-त्राहि करते जन-गण, जीवन को भार समझ बैठे,
चींटी से मसले कुचले जाते, आक्रांता वहशत में ऐंठे।

लावा सा धधक रहा मन में, और खून खौलता रग-रग में,
आबाल-वृद्ध क्या नर-नारी, चिंगारी सुलगी नस-नस में।

ऐसे में भारत धरती पर, एक अंकुर फूटा कोमल सा,
वो पौध पल्लवित पुष्पित हो, महकी जग में निज गौरव पा।

संस्कारित शिक्षा उच्च कुल, मेधा विवेक परिपूर्ण ज्ञान,
माता की करुण पुकार सुनी, त्याग दिया सम्मान शान।

गाँधी से प्रेरित हो ठानी, जन सेवा करने की मन में,
कूद पड़े रण-प्राँगण में, भर अदम्य साहस मन में।

पर देख देश की उथल-पुथल, मृदु हृदय धैर्य खो चीख उठा,
"दो खून मुझे, आज़ादी लो", सुप्त सिंह हुंकार उठा।

सुन 'सुभाष' की वो दहाड़, मदचूर सिंहासन डोल पड़ा,
जाल फेंक, कस लो बंधन, दुश्मन डर-भय से बोल पड़ा।

तलवारों पर चलना सीखा,साक्षात वीर प्रतिमूर्ति थे,
थे 'सु-भाष' वाणी दहकी, 'चंद्र' अंगार धधकते थे।

आज़ाद हिंद की फ़ौज बना, यौवन को ज्वाल बना डाला,
देश-यज्ञ, मर मिटने को, प्राणों को आहुति सा डाला।

पर क्रूर काल की विधना ने उसको छीना आघात किया।
जिंदा इंकलाब की प्रतीक, जलती मशाल को बुझा दिया।

मातृ भूमि प्रति द्रवित हृदय, जाज्वल्यमान नक्षत्र ललाम,
वारें तुझ पर शत-शत जीवन, कण-कण माटी का तुझे सलाम।।

राष्ट्रपिता गाँधी

रेखा शर्मा
बूँदी, राजस्थान, भारत

परतंत्र बेड़ियों में जकड़ी जब भारत माँ चीत्कार उठी
रुण्ड मुण्ड कट लुढ़क रहे युद्ध भीषण शोणित धार बही।

मन विचार आबद्ध हुए करबद्ध खड़े झुके मस्तक
आठ प्रहर दिन रात धड़क दहशत और भय देते दस्तक।

तन पीड़ा का छोर नहीं आहत मन आत्मा अपमानित
थे शोकमग्न संतप्त हृदय कैसे हो माता सम्मानित।

सुन भारत माता का क्रंदन आक्रोश ज्वाल जब धधक उठे
तब 'गाँधी' की लाठी को पकड़े कोटि कोटि पग स्वयं उठे।

कृष-काया संकल्प-वचन दृढ़, किंकर्तव्यविमूढ हर क्षण
देख देश की करुण दशा विचलित विगलित था अंतर्मन।

सत्य,अहिंसा, धर्म गूँथ छोटी धोती से तन को ढँका
राम नाम की बजी बाँसुरी, मोहन से कोई बच न सका।

सुदूर देश के अँचल तक हर ग्राम शहर को पहचाना
निर्धन किसान या कामगार एक-एक समस्या को जाना।

'सोने की चिड़िया' का वैभव लौटाने दांडी मार्च किया
चरखा काता फिर सूत बुना भारत पैरों पर खड़ा किया।

आक्रांताओं की हठधर्मी लाठी हाँकी और जेल, सज़ा
'भारत छोड़ो' का नारा दे कर करो-मरो का बिगुल बजा।

गाँधी की आँधी ऐसी चली सब ध्वस्त शत्रु के किले हुए
सूरज न अस्त हुआ जिनका वो घुटनों के बल पड़े मिले।

हरिजन ‘हरि का जन’ माना नारी का सम्मान किया
कोई कर्म नहीं छोटा या बड़ा उच्च कोटि प्रतिमान दिया।

गीता क़ुरान, ईश्वर-अल्लाह, मनुज-मनुज समदृष्टि हो
संवेदना मज़हब न आंके धर्म से न यह सृष्टि हो।

राष्ट्रपिता तुम हिन्द देश प्यारे बापू सब कहते हैं
स्वतंत्र धरा के पंछी हम सब मुक्त गगन में उड़ते हैं।

देश-काल बंधन से परे चहुँ ओर तुम्हारा अभिनंदन
हों पुष्ट आत्मबल,सत्य, धर्म, शीश झुके और हो वंदन।

दानवीर कर्ण

रेणुका श्रीवास्तव
जोधपुर, राजस्थान, भारत

उन्नत भाल, सुदृढ़ बाहु में,
भृगुकुल शीर्ष प्रदत्त
‘विजय’ नामे गाण्डीव
तुम योद्धा दुर्धर्ष, अजेय,
अतुलनीय, सर्वश्रेष्ठ, प्रबल,
सूर्य-कुंती पुत्र
उच्चकुलीन तुम,
पर कहलाये सूतपुत्र तुम।

क्यों चुप रहे तब दिनकर,
क्यों न किया उनका प्रतिकार,
धरा रही चुप, गगन रहा चुप,
देख सूर्यपुत्र का अपमान।
फिर भी रहे सदा मर्यादित,
स्थितप्रज्ञ, महादानी तुम।

छले गये प्रतिपल तुम सबसे,
कभी भाग्य कभी अपनों से।
वचनबद्ध हो किया समर्पित,
दिया प्राणों का बलिदान।

छला तुम्हें कभी देवराज ने,
छला तुम्हें अपनी ही माता ने,
माँगे किसी ने कवच व कुंडल,
की याचना अपनी ही माँ ने,
पाण्डुपुत्र के जीवन की।

कितने उद्विग्न हुए होंगे तुम,
कितना आहत हुआ होगा मन।
माँ को दिए वचन के कारण,
दे दी प्राणों की आहुति।

कितने महान योद्धा तुम राधेय,
महावीर महादानी तुम।
तुम सा कोई न होगा जग में,
न भूतो न भविष्यत्,
शत शत नमन दानवीर कर्ण।

सूर्यवंशी महाराज अग्रसेन

सुभाष चन्द्र बन्सल 'साहिल'
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

सुनो-सुनो ऐ भारत वासी, अग्रसेनजी की स्वर्णिम गाथा,
धनपालजी की छठी पीढ़ी में, सूर्यवंशी थे वल्लभ राजा,
वल्लभ राजा के कुल में जन्मा, अग्रवंश का भाग्यविधाता,
माँ माधवी संग ब्याह कर, राजा विशाल के हुवे जमाता।

युवाकाल मे राजा बनकर, जिसने लोकतंत्र को अपनाया,
अपनी बुद्धि विवेक शक्ति का, यश तिहुँलोक में फैलाया,
अग्रसेन की ख्याति सुन, इन्द्र का मन ईर्ष्या से भर आया,
प्रताप नगर की बारिश पर, उसने तुरन्त अंकुश लगवाया।

अनावृष्टि के कारण राज्य में, पड़ गया था भीषण अकाल,
जन-धन, पशु-धन, फसल सभी को, लील गया था काल,
संग्राम इन्द्र से किया अग्रसेन ने, अपनी सेना ले विशाल,
घबरा कर भागे इन्द्र और जीत गये वल्लभजी के लाल।

कैलाशपति शंभू का तप कर, उनका आश्वासन पाया,
फिर उमापति की प्रेरणा से, माँ महालक्ष्मी को ध्याया,
नाग वंश से मैत्री करने का, माताजी ने आदेश सुनाया,
कोल्हापुर पहुँच माँ सुन्दरावती से, दूजा ब्याह रचाया।

ऐसी शुभ सम्बन्धों को सुन देख, इन्द्र बहुत पछताया,
नारदजी को मध्यस्थ बना कर संधि प्रस्ताव भिजवाया,
देव ऋषि नारदजी की इच्छा पर बाबा ने शीश झुकाया,
अग्रसेनजी की विनय देख, इन्द्र दरबार मे दौड़ा आया।

महालक्ष्मी की घोर तपस्या करने का सुझाव बतलाया,
प्रजा हित तप करने राजा, फिर, यमुना पार वन आया,
सदा तेरे वंश के साथ रहूँ, माँ लक्ष्मीजी से वर यह पाया,
कर आर्य भूमि का भ्रमण फिर, अग्रोक नगर था बसाया।

अग्रसेनजी ने किया अट्ठारह गणपदों मे राज्य विस्तार,
हर गणपद के अधिशासी बनाये अट्ठारह अग्र कुमार,
ऊँच-नीच का भाव कहीं नहीं, सब में था प्यार दुलार,
रुपया ईंट पा नवागंतुक का, बस जाता घर-व्यापार।

किये बहुत से यज्ञ, कीर्ति को दसों दिशा मे फैलाया,
अट्ठारहवें यज्ञ की बलि पर, बाबा का मन भर आया,
पशुबलि बंद करवा, शाकाहारी भोजन को अपनाया,
हाँ वंश व्यवस्था हेतु, अट्ठारह गोत्रों को स्तम्भ बनाया।

गर्ग बने गोयल बने, बने बन्सल, कन्सल और मंगल,
गोयन, कुच्छल, एरण, जिंदल, मधुकुल, तायल, बिंदल,
सिंहल, नांगल, मन्दल और धारण, मित्तल, तिंगल,
नही केवल यह गोत्र अट्ठारह, ये है समाज के सम्बल।

युग बीता सदियाँ बीती, अग्रोक तो खंडहर हो गया,
सृष्टि के झंझावातों को, भारत का अग्रबंधु सह गया,
भारत के अतीत का गौरव, इतिहास बनकर रह गया,
पर जो था कभी अग्रोक, आज अग्रोहा धाम हो गया।

भारत के तीन लाल

अम्बे कुमारी
बोधगया, बिहार, भारत

वह आज़ादी की दुल्हनिया का दीवाना,
भगतसिंह कहलाता था।
मुख पर जिसके तेज़ था,
'इंकलाब ज़िंदाबाद' जिसका नारा था।

भारत को आज़ाद कराने की,
उसने कसमें खाई थीं।
उस मतवाले शहीद-ए-आज़म ने,
हँस-हँसकर जान लुटाई थी।

सुखदेव-राजगुरु भी,
उसके संग सहबाले बने थे।
अद्भुत थे वे वीर जो,
फाँसी का फंदा चूमने चले थे।

जब वे फाँसी के तख्ते की ओर चले,
आकाश ने भी विस्मित हो देखा था।
भारत के जाँबाज़ों को देखकर,
अपनी ऊँचाई पर शर्मिंदा हुआ था।

यह धरती माता भी अपने लालों को देख,
फूली नहीं समाती थी।
मेरे ऐसे लाल बार-बार जन्में,
यही वह मंगल गाती थी।

जब चले फंदा चूमने वे,
जेल में इंकलाब के नारे लगे थे।
सब कैदियों में उत्साह था,
मानों वे जंग जीतकर लौटे थे।

पूरा जेल 'इंकलाब ज़िंदाबाद' के,
नारों से गूँज गया था।
फंदे पर भगतसिंह का इंकलाब का नारा,
बाहर तक सुनाई दे गया था।

फंदा चूमने के पहले,
तीनों अंतिम बार गले मिले थे।
उस पर आसमान भी रोया था,
जेलर की आँखों में भी आँसू थे।

भारतमाता के इन तीन लालों ने,
हँसकर फाँसी का फंदा चूमा था।
मानो विवाह की वरमाला पहनी हो,
ऐसा वह अद्भुत क्षण था।

ऐसे हुतात्माओं की महानता,
समझना सचमुच आसान नहीं है।
इनके हृदय की गहराइयों को नापना,
किसी के वश की बात नहीं है।

जब अंग्रेज़ों ने इनके शवों को,
चुपके-चुपके अधजला फेंक दिया।
भारतवासियों का जुलूस उमड़ा,
ससम्मान उन्हें कन्धा दिया।

ऐसा अद्भुत दृश्य आज तक,
आसमां ने न देखा होगा।
तीन वीर हों काँधे पर,
पीछे भारतवर्ष चला होगा।

भारतमाता आज भी राह देखती,
मेरे लाल फिर कब आयेंगे।
जब मुझ दुखियारी के खातिर,
वे हँस-हँसकर जान लुटायेंगे।

यहाँ के वातावरण में वे,
संजीवनी घोल जायेंगे।
महकेगी फिर भारत की माटी,
युगों तक इसके गीत,
पंचम-स्वर में गाये जायेंगे।

जान पुरखों ने दी है वतन के लिये

कामिनी व्यास रावल

उदयपुर, राजस्थान, भारत

जान पुरखों ने दी है वतन के लिये
याद रखना है अहल-ए-चमन के लिए

आपसी प्रेम दिल में सभी के रहे
हम सभी की दुआ है अमन के लिए

लौट कर आज तक वो न आये मगर
देखती राह सजनी सजन के लिए

छोड़ सब आपसी भेद मिलकर रहें
बात इतनी सी है बस मनन के लिए

गुनगुनायें तराने सभी देश के
यूँ सजाना है अब अंजुमन के लिए

फ़र्ज़ सबका है इनको पावन रखें
बेहतरी है ये गंग ओ' जमन के लिए

'कामिनी' शीश अपना झुकाती है बस
वीर पावन धरा के नमन के लिए।

वीरों को सलाम

प्राची पाठक
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

दुश्मनों को सदा माटी में मिला देते हैं,
वीर भारत के हैं दुनिया को बता देते हैं।

तुम शहादत का कोई मोल इन्हें क्या दोगे,
देश के वास्ते सर अपना कटा देते हैं।

वीरों की वीरता ऐसी है मेरे भारत की,
संगदिल को भी शहादत पे रुला देते हैं।

नाम इनका रहे जब तक ये रहेगी दुनिया,
हाथ दोनों उठा कर हम ये दुआ देते हैं।

हौसलों से ही वो परवाज़ करें है ऊँची,
ख़ारजारों में भी गुलशन को खिला देते हैं।

मुल्क ही प्यार है ईमान है इनका यारो,
जान की बाज़ी वतन पर ये लगा देते हैं।

जर्फ़ इनका तो है 'प्राची' किसी सागर जैसा,
अज़्म से अपने मुसीबत को हरा देते हैं।

भारतीयों की देशभक्ति

ममता उपाध्याय
वाराणसी, भारत

जब देशद्रोहियों की टोली,
मदमस्त हो आगे बढ़ जाए।
सारी मर्यादा खंडित कर,
उत्तुंग शिखर पर चढ़ जाए।
जब महा शक्तियाँ कायर होकर,
मूक, बधिर बन जाएँ तो,
जब देशद्रोह और देशभक्त में,
अति रार ठन जाए तो,
तब किसी को लक्ष्मी, किसी को राणा,
बन तलवार उठानी है,
भारत की शान बचानी है।

जब एक प्यारी नवजात कहीं,
मिट्टी में दबाई जाए तो,
जब बूढ़ी माँ घर से बाहर,
आश्रम पहुँचाई जाए तो,
जब प्रतिभाशाली बहुओं को,
जंजीरों में बाँधा जाए,
जब पंख खोल उड़ती बेटी पे,
तीक्ष्ण बाण साधा जाए,
तब किसी को ऊँचे सिंहनाद में,
एक आवाज उठानी है।
भारत की शान बचानी है।

जब सबलों के कुशासन में,
अबलों का सिर काटा जाए।
जब धर्मयुद्ध में भक्तों का घर,
लाशों से पाटा जाए।
जब इष्ट देव का देवालय,
टुकड़े-टुकड़े तोड़ा जाए।
जब देशद्रोहियों को संसद में,
पूर्ण स्वतंत्र छोड़ा जाए।
तब दृष्टि पटल की लौहपट्टिका,
त्वरित ही खींच हटानी है।
भारत की शान बचानी है।

अपनी धर्म-संस्कृति का आओ,
हम मिलजुल कर सम्मान करें।
क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर,
का बढ़-चढ़कर गुणगान करें।
सभ्यता-वृक्ष को निज स्नेह के,
जल से आओ हम सींचें।
निज संबंधों की नौका को,
एक दिशा में हम खींचें।
'ममता' की बस इच्छा है,
यह वसुधा स्वर्ग बनानी है,
भारत की शान बचानी है।

कैसे उन शहीदों का ऋण मैं चुकाऊँ

महेश चंद्र द्विवेदी

लखनऊ, भारत

उनके अरमानों की मैं इक कड़ी,
भविष्य के स्वप्नों की मैं इक लड़ी।
जिसके लिये दी वीरों ने प्राणाहुति,
मैं उस कली के पुष्प की पाँखुड़ी।

कैसे उनके त्याग को मैं भूल जाऊँ,
कैसे उन शहीदों का ऋण मैं चुकाऊँ?

पराधीनता थी एक गहन अंधकूप
जो हमको बनाती थी कूप-मंडूक,
अधोन्मुखी था जीवन उलूक सम
उन्नति कैसे करे वह जो मरे भूख?

जिन्होंने निज स्वेद और प्राण देकर,
उबारा हमें, क्यों न उनके गीत गाऊँ!
कैसे उनके त्याग को मैं भूल जाऊँ,
कैसे उन शहीदों का ऋण मैं चुकाऊँ!

अमृत वर्ष है - अमृत पी रहा हूँ,
स्वतंत्र देश में स्वतंत्र जी रहा हूँ।
प्रगति पथ पर हूँ उन्नत है मस्तक,
मातृभूमि के स्वाभिमान से भरा हूँ।

स्वमस्तक कटाया झुकाया न मस्तक,
आज मैं उन वीरों को मस्तक नवाऊँ।
कैसे उनके त्याग को मैं भूल जाऊँ,
कैसे उन शहीदों का ऋण मैं चुकाऊँ?

पहले देश, फिर शेष

राकेश मल्होत्रा
लिंकनशायर, इलिनॉइ, यू.एस.ए.

ना जाने लहू की कितनी नदियाँ हमनें बहाई हैं,
कितनी सूनी माँगों ने सुहाग की भेंट चढाई है।
सीने पर अपने खाकर दुश्मन की गोलियाँ,
शूरवीरों ने आन हमारी मातृभूमि की बचाई है।

सूनी गोदों और बुढापे की लाठी ने,
आज़ादी की भारी कीमत,
अपनी संतान के बलिदान से चुकाई है।
सदियों तक हमने लहू से किया है,
मातृभूमि का अभिषेक,
तब जाकर स्वतंत्र हुआ है भारत देश।

कोटि कोटि नमन उन अमर शहीद जवानों को,
प्राण देकर जिन्होंने आन तिरंगे की बचाई है।
जिन माताओं ने अपने सपूतों की आहुति चढ़ाई है,
उनका सपना पूरा करने की बारी अब आई है।
शूरवीरों की शहादत का ऋण हमको चुकाना है,
देश के लिए जीना और देश के लिए मर जाना है।

आओ मिलकर हम कुछ नेक क़दम उठायें,
कि निशान जिसके आँधियाँ भी ना मिटा पायें।
गूँजे ललकार धरती और आकाश में ऐसी,
कि दुश्मन आँख उठाने की जुर्रत न कर पाये।

वो जीवन ही क्या जो केवल स्वयं के लिए जिया,
एक बार तो सोचो देश के लिए तुमने क्या किया।
हम सबको आज मिलकर यह सोचना है,
कि आने वाली पीढ़ी को कैसा भारत सौंपना है।

केवल मनाना आज़ादी का उत्सव एक दिन,
पर्याप्त नहीं है देश को आगे ले जाने के लिए।
संकल्प एकता का करना होगा प्रत्येक दिन,
एकजुट होना पड़ेगा अधर्म के पतन के लिए।

वसुधैव कुटुंबकम् सदैव से परम्परा है हमारी,
निभाना होगा हमें उसे सुख व शांति के लिए।

गौतम बुद्ध का मार्ग हमें चुनना होगा,
शांति और अहिंसा से जीने के लिए।
सामना हर चुनौती का करना होगा,
आने वाले सुनहरे कल के लिए।

कृष्ण बनकर रोकना होगा दुःशासन को,
नारी की सुरक्षा और सम्मान के लिए।
समस्याओं के रावण से लड़ना होगा,
राम राज्य का सपना पूरा करने के लिए।

आइये! एक नई सोच का सृजन करें,
अपने दायित्व का निर्वाह हम मन से करें।
भय मुक्त समाज के निर्माण का संकल्प,
आज हम सब मिलकर करें।
नई पीढ़ी के सुनहरे भविष्य के लिए,
सर्वश्रेष्ठ भारत का नवनिर्माण करें।

दास्तान-ए-आज़ादी

राम नेमा, 'राज'
भोपाल, भारत

क्या तुमको इल्म है अपने, तिरंगे की इबारत का?
बड़ा दिलचस्प है ये किस्सा, मेरे आज़ाद भारत का।

संघर्ष किया जो भारत माँ ने, 100 साल से लंबी कहानी है।
आज के बच्चे भूल न जाएँ, ये दास्ताँ सबको सुनानी है।
गौरवशाली इतिहास मेरा, पराक्रम की ये कहानी है,
सोने की चिड़िया मुक्त हुई, बात सभी को सुनानी है।

सन 1612 था, मेरे देश फिरंगी थे आए,
विक्टोरिया का मंसूबा था, कि भारत में व्यापार चलाए।
नीयत और नियति को देखो, मेरे वतन पर घात किया,
कारोबार से शुरू किया, टुकडों में इसे बाँट दिया।

सोने की चिड़िया मुल्क मेरा, देखो पिंजरे में कैद हुआ|
एक जान से रहने वाले,भाई-भाई में मतभेद हुआ।
नीति रीति पर चलने वाला, हर मासूम अब छला गया,
मोहरा बनकर अंग्रेज़ों का, उनके टुकडों पर पला गया।

अब दौर दमन का शुरू हुआ, और मुल्क मेरा बेजार खड़ा,
फसलें भी लहुलुहान हुई, गोरों का अत्याचार बढ़ा।
सोना लूटा, चाँदी लूटी, न छोड़ा मेरी माटी को,
बद से बदतर हालात किए, रौंदा मेरी माँ की छाती को।

भारत माँ की आह लगी, अंग्रेजों की मति मार गई,
चर्बी वाले कारतूसों से, फिरंगी चालें हार गई।
अठरह सौ सत्तावन आया, मंगल पांडे बलवान उठा,
न खौफ किया अंग्रेजों का, चट्टान के मानिंद आन डटा।

'मंगल' से मंगलमय बनकर,गोरों का विजय रथ थाम दिया,
धधक रही अंतर ज्वाला में, चिंगारी का काम किया।

मई 1857, मेरठ से क्रांति, बिगुल बजा,
वीर बहादुर सेनानी का, दस्ता दिल्ली की ओर चला|
बहादुर शाह जफर, बख्त खाँ, दिल्ली सेना लेकर निकले,
नाना साहिब, तात्या टोपे, कानपुर से संग चले।

लखनऊ से हजरत बेगम ने, एलान-ए-जंग आगाज़ किया,
हुँकार लक्ष्मी की सुनकर, अब झाँसी ने भी नाज़ किया।
लियाकत अली इलाहाबादी, कुँवर सिंह जगदीश पूरे,
खान बहादुर बरेली वाले, फतेहपुर से अली मिले।

ये दौर अट्ठारह सौ सत्तावन, इन वीरों का अभिमान जगा,
गोरों का शासन खत्म करो, भारत का स्वाभिमान जगा।

19वीं सदी आई, फैला गोरों का दमन नया,
जलियाँवाला बाग की आग में, मेरा हिन्दोस्ताँ झुलस गया।
अब आज़ादी और आज़ादी, ये शब्द बड़ा 'आज़ाद' हुआ,
भारत की गलियों-गलियों से, विद्रोह का शंखनाद हुआ।

असलहा बारूद जुटाने को, मतवालों ने वो काम किया
साल 1925 था, जिसे काकोरी कांड का नाम दिया,
बिस्मिल, शेखर और भगत सिंह का, सब्र का बाँध टूटा,
खजाने भरी रेल गोरों की, उसे जाकर काकोरी में लूटा।

फिर सन 1929 था, अंग्रेजों का शासन डोला,
जब भगत सिंह ने बटुकेश्वर संग, संसद पर धावा बोला।
बम छोटा, पर बड़ा धमाका, ये खबर बनी चौपालों की,
हर गाँव-शहर से टोली निकली, भारत माँ के मतवालों की।

भगत, राज, सुख आगे आए, माँ की आन बचाने को,
फाँसी का फंदा चूमा, वतन आज़ाद कराने को।

खून मुझे दो, आज़ादी लो, नारा लेकर वे आए थे,
गुलाम हिन्द को मुक्त कराने, हिन्द की फौज बनाए थे।
बाबू सुभाष ने ये ज्वाला, हर दिल में यूँ धधकाई थी
सिंगापुर, बर्मा से होकर, वह मेरे भारत आई थी।

मुट्ठी भर सैनिक लेकर, पूरब से हमला बोला था,
अंग्रेजों के लश्कर ने भी, हौसला हिन्द का तौला था।
दे कुर्बानी, शहीद हुए, फौज़ ए हिन्द के मतवाले,
मौत का आलिंगन कर खुश थे, आज़ाद हिंद के रखवाले।

तोड़ दिए वे भरम सभी, अग्रेंजों ने जो पाले थे
शांतिदूत बन आगे आए, वे बापू चरखे वाले थे।
चंपारण, खेड़ा में जाकर, हिंसा त्याग, विद्रोह किया,
की खिलाफत अग्रेंजों की, शांति से प्रतिशोध लिया।

एहसास दिलाया, अपने जन को, मत अंग्रेंजों का काम करो,
असहयोग आंदोलन लाओ, इनका काम तमाम करो।
अलख जगाने, नमक बनाने, चल पड़े मार्च पर, दांडी को,
देश मुक्त कर, भागो गोरों, छोड़ो भारत की माटी को ।

47 के दौर में जनता, जुट गई आँख दिखाने को,
बापू का चरखा चला तेज़, गोरों की अकल ठिकाने को।

14 अगस्त की रात बड़ी, इक नई रोशनी लायी थी,
बरसों से जंजीरों से जकड़ी, भारत माँ की आज रिहाई थी|
लगा 15 अगस्त का दिन, इतिहास ने अपना रुख मोड़ा,
हुआ आज़ाद ये मुल्क मेरा, अंग्रेजों ने भारत छोड़ा|

नया सबेरा, नया उजाला, मेरे मुल्क में आया था,
आज हमारे लाल किले पर, 'तिरंगा ध्वज' लहराया था।

विश्वगुरु है हिन्दोस्ताँ, ये सफर अनवरत जारी है,
रहे अमर आज़ादी अपनी, अब 'राम-राज' की बारी है।

नौजवानों

वनिता शर्मा
दिल्ली, भारत

सुनो देश के भावी युवको,
भारत गौरव सम्मान करो
अथक संघर्षों से मिली आज़ादी
उस पर तुम अभिमान करो।

माँ भारती के वरद पुत्र तुम
पथ नव क्रांति का वरण करो
धरती से ले अम्बर तक ऊँची
निज आशाओं की उड़ान भरो।

त्याग, दया, बलिदान करो तुम
निज संस्कारों का मान करो
पुरा संस्कृति और सभ्यता का
अखिल विश्व गुणगान करो।

सन् अठारह सौ सत्तावन में
स्वराज्य प्राप्ति की अलख जगी
भड़क उठी चिंगारी क्रांति की
घर-घर वीरों ने हुंकार भरी।

आज़ादी हित फिर रचा स्वयंवर
जलियाँवाले बाग में
दुल्हन सी फिर सजी थी धरती
वीरों के अमर बलिदानों से।

भ्रमित हो गए, थाह ना पाई
अंग्रेजों की निष्ठुर घातों से
भड़का ओज युवाओं का तब
सिलसिला चला प्रतिशोधों का।

राज गुरु बिस्मिल, भगतसिंह
फिर झूले फंदों पर आन से
लहरा गर्व से स्वच्छन्द तिरंगा
निज भारत भूमि पर शान से।

खोई हुई आज़ादी मिल गई
दृढ़ संकल्पों के प्रयासों से
जन-जन मानस में खुशियाँ छाईं
दीप जले नव आशाओं के।

स्वतंत्र राष्ट्र के बने जननायक
भावी भारत के तुम कर्णधार
खोए सपनों को पंख तुम देना
नव निर्माण के नव आधार।

नई प्रगति और नई उन्नति से
राष्ट्र का तुम पुनः उत्थान करो
राग-द्वेष घृणा और नफरत का
भारत में अब कोई स्थान न हो।

आदर्श संस्कार निज सुकृत्यों से
उन्नत भारत का आगाज़ करो।
प्रगति की उत्तम उपलब्धियों से
माथे पर 'विश्व गुरु' का ताज धरो।

राष्ट्र विभाजन

वर्षा शर्मा
हैदराबाद, भारत

यक्ष प्रश्न था एक खड़ा,
विभाजन का वक्त कड़ा।
अखंड हिंदुस्तान व्यथित था,
मजहब की तलवार से करना,
भारत पाक विभक्त पड़ा।

सत्याग्रह से गांधी के,
भगत, बोस की आँधी से,
जब काँपा अंग्रेजी शासन,
मजबूरी था देना तब तो,
हाथ हमारे देसी शासन।

लेकिन बड़ी हुई एक भूल,
आज़ादी का लगा रहे थे,
जिस पौधे के ऊपर फूल,
ख़ुदगर्ज़ों की सत्ता लालच,
मजहब का भी लगता शूल।

शतक लाख का गया बसेरा,
दसों लाख हुई हत्याएँ।
अस्सी हज़ार अस्मत के दुखड़े

एक देश के हुए दो टुकड़े,
बँट गए हिंदू-मुस्लिम मुखड़े।

सरसों मक्का के खलिहान,
ओम, अल्लाह सब वीरान।
जान बचाओ छुपा पहचान,
कौन मौत को इज्जत बख्शे,
लाशों के भरते मैदान।

घरवालों से अपने बिछड़े,
खोया जो भी कमाए थे।
नहीं बने स्मारक उनके,
निरपराध भोले भालों ने,
दंगों में प्राण गँवाये थे।

हिंदू मुस्लिम राष्ट्र अलग हो,
गीता कुरान अलख-अलग हो
क्या इसीलिए बाँटा था देश,
कि बरसों के बाद भी रहे,
धर्म नाम पर झगड़ा शेष।

हम सबका भारत

शालोम मेंडोंसा
दुबई, यू.ए.ई.

वीर शहीदों के बलिदान से,
लाखों के संघर्ष से,
गाँधी की अहिंसा से,
भगत सिंह के जोश से,
एकता के बल से,
मिली है जो आज़ादी यह,
हर भारतीय के सर का ताज है।

न गिरने दो इस ताज को,
न मरने दो सत्य अहिंसा को,
न टूटने दो इस एकता को,
न भूलो उन वीरों के त्याग को,
न मिटने दो इस देश के अस्तित्व को।

न कभी भूलो इस बात को,
यह भारत हम सब का है,
सब साथ हैं तभी यह भारत है।
जयहिंद! जय भारत!

सैनिक को सलाम

संदेश जैन संदेश
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

मेरी यह आन मेरी शान मेरी यह जान तुम से है,
अना मेरी जो जिन्दा है मेरा सम्मान तुम से है|

तुम्हारी शाहदत का क्या कोई भी मोल दे पाए,
मिला है जो हमें आज़ाद हिन्दुस्तान तुम से है।

कोई मुश्किल कभी राहें न तेरी रोक है पाई,
तुम्ही से है ये हिन्दुस्तान वतन की शान तुम से है।

सूना आँगन भीगा आँचल सूनी बिन्दी औ राखी ने,
बहाया है जो आँसू में वह गौरव गान तुम से है।

तुम्हारे शौर्य की गाथा कहे इतिहास भारत का,
भगत शेखर के सपनों का ये हिन्दुस्तान तुम से है।

बुलंदी पर रहे संदेश ये तस्वीर भारत की,
बने जो विश्व गुरु भारत तो यह यशगान तुम से है।

India In My Eyes

Kaashvi Datta

Gurugram, Haryana, India

My country is diverse and colorful
With different religions and festivals too
Filled with ancient history
And beautiful monuments to see for me and you.

With classical singing and tremendous dances,
With ethnic dresses which have a pretty design.

With festivals of colors and lights
This beautiful country is mine.

The beauty in India is amazing
With rivers, mountains, valleys and lakes.

We all love each other dearly
We may be different in language and states.

But we respect each other more purely.
I see India filled with equality and diversity
Not filled with hunger and poverty.

I see my India with peace and love, no fears
Instead, the war happening today which has brought me tears.

My India with no littering, no trash on street
My India being clean and green.

With equal rights for all and prosperity
My India being brave, standing tall.

My India having a home for the houseless
Having food for the hungry
Having schools for poor kids
Having everything we need .

The India of my dreams.

भावी भारत

प्रेम लता कोहली
नई दिल्ली, भारत

आओ नव भारत निर्माण करें,
सब मिलकर कुछ कल्याण करें।
निष्प्राणों में हम नव प्राण भरें,
अपनी संस्कृति का परित्राण करें।

पुनः वेदों की हम ऋचाएँ पढ़ें,
आओ ऋषियों की कथाएँ पढ़ें।
चलो नीति का दामन थाम लें,
और प्रीति की राह पकड़ चलें।

मन में विश्व बंधुत्व की भावना लिए,
आओ संस्कृतियों का मिलान करें।
राष्ट्र के सम्मान व उत्थान के लिए,
उत्साह पूर्वक समन्वित प्रयास करें।

आदर्श समाज के निर्माण में बढ़ें,
और उत्तम दायित्व का निर्वाह करें।
आर्थिक संपन्नता प्राप्त करने के लिए,
आओ हम सब आज आत्मनिर्भर बने।

हर क्षेत्र में नई टेक्नोलॉजी का दौर चले,
जिससे खेत-खलिहान भी सब फूले-फले।
नए उत्पाद, नए बाजार, नव रोजगार पनपे,
और प्रतिक्षण देश प्रगति विश्व के साथ बढ़े।

बड़ी कठिन है डगर, उन्नति की मगर,
आओ श्रम से तोड़ दें पाषाण सब अभी।
हम बने दीन-हीन के सहायक सदैव,
प्रतिपल करें दूर निर्बल के त्राण सभी।

प्रदूषण रहित, प्रफुल्लित, विकसित,
स्वच्छ भारत का हम निर्माण कर सकें।
प्रभु दो आशीष हमें, झुके न कभी शीश,
प्रलयों को मोड़ने का हम, दम भर सकें।

है वीरों की धरा ये मेरी प्यारी जन्मभूमि,
आओ हम सब इसे शत-शत प्रणाम कहें।
मिले जब भी सुअवसर देश की रक्षा हेतु,
हम उनके साथ मिलकर जाँ कुर्बान करें।

जाति और धर्म से हम सब बने भारतीय,
भारत के सब जन का जीवन समान हो।
सोने जैसी मिट्टी में जब श्रम की बूँदें चमकें,
तो वहाँ खुशहाल देश का प्रत्येक किसान हो।

मेरा भारत बनाएगा नया इतिहास

राजेश कुमार मिश्रा
मुंबई, भारत

मेरा भारत, पूरे विश्व में आशाओं का दिव्य प्रकाश फैलाता,
विकास की यात्रा पर अनवरत अग्रसर, नयी उम्मीदें बढ़ाता,
दसों दिशाओं में, नयी नयी उपलब्धियों को हासिल करता,
नयी ऊँचाइयों के लक्ष्य के साथ, नयी मंजिलों को सँजोता।

कोरोना महामारी के दौर ने जब विश्व चुनौती लायी,
तब कई देश हुए, अपने विकास के पथ पर धराशायी,
मेरे भारत ने चुनौती के समय, अद्भुत एकजुटता दिखलायी,
चुनौतियों को जीत में बदलकर, विश्व में नयी उम्मीदें जगायीं।

विश्व साक्षी है मेरे देश के संघर्षपूर्ण उतार-चढ़ाव का,
संघर्ष के पलों को ताकत में बदलने के हमारे संकल्प का,
नेतृत्व का अद्भुत नमूना जो पूरे देश ने ऐसे समय में दिखाया,
विपरीत समय में वैश्विक आशा की नयी किरणों को जगमगाया।

पूरा विश्व बड़ी उम्मीद से देख रहा एक उभरते भारत को,
युवा शक्ति के साथ बढ़ते, एकजुट मेरे समृद्ध भारत को,
योग और आध्यात्मिकता की स्वर्णिम धरोहर जगाने की आस,
मेरा भारत अब श्रेष्ठ युग पुनः लाकर, बनाएगा नया इतिहास।

नव भारत

वनिता शर्मा
दिल्ली, भारत

नवयुवको! आह्वान करो नव भारत का
भावी प्रयास तुम्हारा है,
संकल्प हो, आत्मनिर्भर उन्नत देश का
सारा आकाश तुम्हारा है।

माना पथ अगम अगाध सिंधु है,
संघर्षो से पार नहीं है,
बढ़ कर रुकना मझधार भँवर में
नवयुवकों को स्वीकार नहीं है।

भावी पीढ़ी की नव संरचनाओं से
नव नीतियों का आगाज़ करो,
माँ, माटी और निज मनुज कर्म से
स्वदेश भारत का उद्धार करो।

डिजिटल इंडिया की नई क्रांति में
नव सृजन नव अविष्कार करो,
नव संभावनाओं के परम उत्कर्ष में
नूतन सम्भावनाओं में चमत्कार करो।

हो सबका साथ, सबका विकास
शास्त्र नीति संज्ञान रहें,
उन्नत तकनीकी की नई दुनिया में
निज बल-श्रम से प्रयाण करें।

गर्व करें हम आदि संस्कृति का
नैतिक मूल्यों पर अभिमान करें,
आदि संस्कृति नालंदा की शिक्षा का
पुन: नव आदर्शों से उत्थान करें।

साहित्य, संगीत विविध कलाएँ
आदि पुराणों का अनुसरण करें,
"वसुधैव कुटुंबकम" की भावना से
सदवृत्तियों का सदा अनुसरण करें।

भारत प्रगति की नई दिशा में
उन्नत कर्म चरित्र निर्माण न भूलें,
निज स्वार्थ धन साधना की चाह में
लोकहित मानवता कल्याण न भूलें।

कर जटिल समस्याओं का समाधान
हो उद्यत नूतन अनुसंधान करो,
स्व श्रम निर्मित कृत्रिम संसाधनों में
पूरा धरोहर ज्ञान विज्ञान न छोड़ो।

शुचिता शील विनय आदर्श विद्वता
उदारता के तार बिना झंकार नहीं है,
निश्चित लक्ष्य सिद्धि के बिना ठहरना
कर्मवीरों के संस्कार नहीं हैं।

धरा गूँजती उनकी सजीव सुकीर्ति से
जो प्रबल प्रवाह को सहते हैं,
कठिन संघर्षों की पावक सह कर
स्वर्णिम आभा में दमकते हैं।

हो उत्साहित, कर्मवीर सुदृढ़ सशक्त
भावी भारत का उत्कृष्ट निर्माण करो,
निज दृष्टि बल बुद्धि विवेक श्रम से
भारत विश्वगुरु राष्ट्र परिमाण करो।

युवको! आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण करो
नव आत्मनिर्भर राष्ट्र निर्माण करो।

मेरा वंदनीय भारत

वीणा पाठक
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

तेरे चरण पखारूँ निस दिन, ऐ मेरे अतुल्य भारत।
तेरी गरिमा के गीत गढ़ूँ मैं, ऐ मेरे अनुपम भारत।
पलकों के झूलों में झूले, मेरा भावी स्वर्णिम भारत।
विश्व का सिरमौर बनेगा, यह मेरा अप्रतिम भारत।

गाँव-गाँव में होगी खुशहाली, कृषकों का होगा भारत।
शहर-शहर में गूँजेगी गीता, कर्मरत होगा पूरा भारत।
संस्कृत की फिर गूँज सुनेंगे, उपनिषद पढ़ेगा फिर भारत।
संस्कृति का जयघोष करेगा, दुनिया में मेरा भारत।

घर-घर गाएँगे रामायण, राम राज सा होगा भारत।
विविधता में एकता की, पहचान बनाएगा फिर भारत।
सत्य, अहिंसा, त्याग, सहिष्णुता विश्व को सिखाएगा भारत।
नदियों में निर्मल जल लेकर, इतराएगा फिर भारत।

नए-नए बाँधों के जल से, सींचेगा धरती को भारत।
स्वच्छता का कीर्तिमान, विश्व में बनाएगा मेरा भारत।
उत्तम स्वास्थ्य सेवाओं का, ध्वज फहराएगा मेरा भारत।
शिक्षा और अभियांत्रिकी का, अधिष्ठाता होगा भारत।

नालंदा और तक्षशिला की, गुणवत्ता फिर पाएगा भारत।
विश्व गुरु बन दुनिया में, सम्मानित होगा मेरा भारत।
तेरे चरण पखारूँ निस दिन, ऐ मेरे अतुल्य भारत।
तेरी गरिमा के गीत गढ़ूँ मैं, ऐ मेरे वंदनीय भारत।

चाह

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

हाँ
तभी
संभव
विकास भी
देखा करतीं
आखें वतन को
आतुर हृदय से
मापती रहतीं सदा
इस के बढ़ते कदम
अत्याचार और भ्रष्टाचार
पसारें न यहाँ पर पाँव
असंतुष्ट ना हों निर्बल
बेबस और बेकार
भूखा ना सोए कोई
हो छत सिर पर
सबके पास
खुशहाल
हो देश
सदा
ही...

हम मतवाले भारतीय

सवि शर्मा 'सावित्री'
देहरादून, उत्तराखण्ड, भारत

मिली जो आज़ादी कुछ हम भी कर जाएँ,
सुखदेव आज़ाद के सपनों का भारत बन जाएँ।

कितनी कोख उजड़ीं कितने सिंदूर माथे से बहे,
मिली तब चंदन माटी उसका तिलक माथ कर जाएँ।

अभी नही पूरी आज़ादी अभी तो जश्न अधूरा है,
भारत के बच्चे-बच्चे को अमृतोत्सव में अन्न खिलाएँ।

संविधान गौरव का संकल्प हृदय से आह्वान हो,
प्रेम शांति एकता के पाठ से तन-मन सुवासित कर जाएँ।

बाँट ना पाए रिपु कोई भारत की अखंडता को,
नैनों की ज्वाला हम कुछ और मुखर कर जाएँ।

अधिकारों कर्तव्यों के संगम का महापर्व हो सजा,
हिंदी गौरव की कीर्ति पताका विश्व आँचल लहरा जाएँ।

ऐ वतन! तेरी क़सम न मिटने देंगे तेरा चमन,
कोई विदेशी हुकूमत फिर धूल आँख में झोंक न जाए।

ये तेरा है ये मेरा हम सबका है प्यारा वतन,
जाति-पाँति भ्रम को हटा शिक्षा की अलख जगा जाएँ।

भावी भारत

सुषमा नैय्यर
लखनऊ, भारत

अब
संसार
साक्षी होगा।
अब भारत
सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र
महत्वाकांक्षी होगा।
उत्तर और दक्षिण
पूरब से पश्चिम तक
भारत का परचम होगा।
जग का सिरमौर होगा
विकास का जोर होगा
शिक्षा का दौर होगा।
सत्य का संज्ञान
नव निर्माण
चहुँ ओर
संपन्न
होगा।

कलम गहो हाथों में साथी

हरिहर झा
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

कलम गहो हाथों में साथी
शस्त्र हजारों छोड़।

तूलिका चले, खुले रहस्य तो, धोखों से उद्धार
भेद बताने लगे आसमाँ, ज़िद छोड़ें गद्दार
पड़ाव हर मंजिल के नापें, चट्टानो को तोड़
मोड़ें बादल बिजली का रूख
शयन सैंकड़ों छोड़।

कीचड़ ना हो, नदियाँ निर्मल, दूर हो भ्रष्टाचार
कोयल खुद अंडे सेये, निर्मल कर दे आचार
श्रम को स्वर दे बाग-बगीचे, घर आँगन हर मोड़
खुशियों के सिक्के बाँटे हम
लोभ पचासों छोड़।

प्रयोगशाला रणभूमि है, परखनली हथियार
'कुञ्जी पट' से नभमण्डल की, खेवेंगे पतवार
किरण मिले भारत प्रतिभा की, 'विश्व-गाँव' में होड़
'होरी' दूहे धेनु
खनकते सिक्के लाखों छोड़।

बढ़ते चलो

हरिहर झा
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

है
बिंदु
शीतल,
चोटी पर
हिमालय की,
मंजिल स्वरूप
खड़ा आँधी-पानी में,
ललकारता तुमको,
आगे बढ़ो, बढ़ते चलो।
"क्लैब्यं मा स्म गम:", जरा सोचो!
हिरन नहीं घुस जाता,
सोये सिंह के मुख में।
सफलता मिलेगी,
देखते देखते
फैल जाएगी,
दुनिया में,
प्रतिभा
देश
की।

जो मशालें सदा से जली आ रही...

हरीश चंद्र सिंह गनोड़ा
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

जो मशालें सदा से जली आ रहीं,
उन मशालों को अब तुम उठाओगे क्या?
जो अँधेरे से लड़ती चली आ रही,
दीपशिखा सा खुद को जलाओगे क्या?

बज रहा शंख मर्यादा संस्कार का,
ग्रन्थ सारे यहाँ पर भरे हैं पड़े।
जग में था जो वृहद भूमण्डल कभी,
उसको पाने यहाँ पर हम किससे लड़े।
जो हमें बाँध दे एकता सूत्र में,
ऐसा भगवा यहाँ फिर फहराओगे क्या?
जो मशालें सदा से जली आ रही,
उन मशालों को अब तुम उठाओगे क्या?

आर्यावर्त नाम से विश्व का था गुरू,
अपना सम्मान कैसे पुनः लाएँगे?
लौट आएँगे दिन वे पुराने सभी,
धर्म की जीत को राम फिर आएँगे।
बन सको तो बनो तुम भगीरथ यहाँ,
फिर धरा पर माँ गंगा को लाओगे क्या?
जो मशालें सदा से जली आ रहीं,
उन मशालों को अब तुम उठाओगे क्या?

ज्योत जलती रही सबके मन मे सदा,
उस लौ से स्वयं को तपाएँगे हम।
करने विषपान भोले शंकर सा बनें,
फिर अमृत सभी को पिलाएँगे हम।
त्याग करके कलुषता अब मानव सभी,
जग ये स्वर्ग सा सुंदर सजाओगे क्या?
जो मशालें सदा से जली आ रहीं,
उन मशालों को अब तुम उठाओगे क्या?

I am Proud of India

Rajesh Kumar Mishra
Mumbai, India

I am proud of India, my lovely country,
unparalleled unity, despite its diversities,
Inspiring the world, with new possibilities,
Aiming global oneness, with holistic purity.

In this era of growing tension and anxiety,
Promoting friendliness with powerful face,
Through Yoga, educating to be healthy,
Elevating consciousness of human race.

Leading the path of sustainable development,
To effectively control environmental degradation,
With responsible actions towards overall betterment,
"Sabka Saath Sabka Vikas" to 'climate upgradation'.

Empowerment for all the sections,
Striving to bridge the digital-divide,
Growth & Prosperity for all citizens,
Spreading this blue-print worldwide.

Leading for World peace & security,
Serving humanity as the Prime duty,
'Vasudhaiv Kutumbakam', for the unity,
Synergizing technology with Spirituality.

I am proud of India, my lovely country.

निराला भारत

इन्दु गुप्ता
फरीदाबाद, हरियाणा, भारत

एक टुकड़ा
स्वर्ग से काटकर
धरती पर भेजा
देवताओं ने
सुन्दर, ज्यों जन्नत, नाम दिया भारत!

हिम-मंडित
रजत-सी धवल
पर्वत श्रृंखलाएँ
बन प्रहरी
खड़ीं चहुँ दिशाओं में, पासबाने
भारत।

मिठास घोले
फिज़ाओं में नूरानी
हर नदी का पानी
बन अमृत
बहे अनवरत, शहदीला भारत।

दिव्य सौंदर्य
सँजोए कण-कण
लुभाए क्षण-क्षण
फूलों का देश
रंगीन परिवेश, खुशहाल भारत।

चरागाहों में
पर्वतों के साये में
ज्यों दूर तक बिछे
हरी घास के
मखमली कालीन, हरियाला भारत।

शंखों की ध्वनि
मंगलाचार स्वर
मंदिरों से आ रहे
बच्चे तैयार
देखो, स्कूल जा रहे, बढ़ रहा भारत।

श्रमपूर्वक
बुन लेती उमंग
कुदरत के रंग
परिधानों में
नारियाँ खिली-सजीं, है निराला
भारत।

हुए शहीद
जाँबाज़ शूरवीर
अनेक अनगिन
हज़ारों बार
हुई रक्तरंजित, वीरधरा भारत।

शांति एकता
अहिंसा मानवता
धर्म निरपेक्षता
सारे विश्व में
संस्कारों की खुश्बू, बिखराता भारत।

भिन्न भाषाएँ
खान-पान, जातियाँ
धर्म-पर्व, शैलियाँ
एक है रक्त
संस्कृति अविभक्त, है हमारा भारत।

गरिमा

उषा अवस्थी
लखनऊ, भारत

भारत की गरिमा विपुल
सकल विश्व में व्याप्त
प्राच्य विभूति, सुयश अतुल
पुनः करेगा प्राप्त।

रामराज्य की कल्पना
फिर होगी साकार
जहाँ न कोई दीन,और
न होगा लाचार।

विस्मित देखेगा जगत
भारत की सामर्थ्य
दिव्य शक्ति, अभिवृद्धि यश
विमल कीर्ति, उत्कर्ष।

पौरातनिक नवीनता
का अद्भुत संयोग
भव्य, अमल, रचना सुघट
शुभ वैज्ञानिक शोध।

भ्रष्टाचार, मिलावट,
पाप कर्म का अन्त
फैलेगा सत्कर्म का
सौरभ देश-दिगन्त।

दृढ़ विश्वास, विवेक की
सुदृढ़ नींव मजबूत
सब वर्गों में आपसी
सुखद प्रेम उद्भूत।

विहँसेगी सारी प्रकृति
जन सब मुदित विभोर
लौटेगा फिर स्वर्णयुग
सत्य, शान्ति चँहु ओर।

धन्य हो अतुलित भारत देश हमारा

जीवन सिंह दानू इरेश
बागेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत

जिसके शीश हिम मुकुट विराजे,
जिसके चरण नित जलधि पखारे।
धन-धान्य, ज्ञान-विज्ञान से शोभित,
अनुपम संस्कृति-सभ्यता जिसकी।
धन्य हो अतुलित भारत देश हमारा।।

ऋषि मुनि जन के ज्ञान-विज्ञान से,
मेरे देश भारत का कण-कण महके।
वसुधैव कुटंबकम का सन्देश दे कर,
विश्व को मानवता का पाठ पढ़ाए।
धन्य हो अतुलित भारत देश हमारा।।

पंथ धर्म भाषा भिन्नता के बावजूद,
देश मेरा फुलवारी बन महके।
युगों से पल्लिवत पुष्पित सभ्यता,
विश्व जनों को शांति की राह दिखाए।
धन्य हो अतुलित भारत देश हमारा।।

खगोल, भूगोल, गणित व चिकित्सा,
योग, ज्योतिष और दिया आत्मज्ञान।
सबके कल्याण की मंगल कामना कर,
भारत जगत गुरु कहलाया।
धन्य हो अतुलित भारत देश हमारा।।

आओ फिर से जागृत करें गौरव हमारा,
पथ भ्रमित दुनिया को नई राह दिखाएँ।
सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया,
का नारा दे खुद को विश्व गुरु बनाएँ।
धन्य हो अतुलित भारत देश हमारा।।

हमारा प्यारा हिंदुस्तान

दुर्गा अशोक सिन्हा 'उदार'
फ़रीदाबाद, हरियाणा, भारत

हमारा गौरव और अभिमान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान
भारत को भारत ही बोलें
ये अपनी आन-बान और शान।

नदी पर्वत झरने सागर
भरी है ज्ञान से गागर
विश्व भी गुरु मानता है
सिखाते प्रेम-योग आखर
चलाते सतत् नया अभियान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।

हमारी जान है गंगा
गर्व सम्मान है तिरंगा
छा रहा नभ पर केसरिया
हरा और श्वेत रंग रँगा
यही तो है अपनी पहचान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।

विविधता भरी एकता है
अलग है, पर समानता है
धर्म के रूप अनेरे हैं
परख पहचान मान्यता है
सभी का करते हैं सम्मान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।

नहीं हम भी किसी से कम
दिखा दें अपना असली दम
जान लेना देना आता
दुश्मनों पर भारी हैं हम
बने रहते 'उदार' इंसान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।

हम ही हिन्दुस्तान हैं

दुर्गा अशोक सिन्हा 'उदार'
फ़रीदाबाद, हरियाणा, भारत

हम से ही है बना देश यह,
हम ही हिन्दुस्तान हैं
देश का बच्चा-बच्चा अपने,
देश पे ही क़ुर्बान है।

हम प्रहरी हैं हम सेवक हैं,
हम ही पहरेदार हैं
बाल न बाँका कर सकता है,
हम सब चौकीदार हैं
मातृभूमि के लिए समर्पित,
हम भारत की जान हैं
हम से ही है बना देश यह हम ही हिन्दुस्तान हैं।

हम सेना हैं,
हम हैं नेता,
कर्णधार भारत के हम
करें सुरक्षा सीमा की,
भारत के रखवाले हम
जन्मभूमि है जान हमारी,भारत अपनी शान है
हम से ही है बना देश यह, हम भारत की जान हैं।

हमें न कोई छू सकता है,
तीरों से तलवारों से
हम ही करते सदा सुरक्षा,
आतंकी हत्यारों से
कर्मभूमि है प्राण हमारी, भारत अपनी आन है
हम से ही है बना देश यह, हम ही हिन्दुस्तान हैं।

दुश्मन ताकतवर होगा,
अपनी ताक़त में कमी नहीं
दुर्गम राहों की बाधाएँ,
रोक सकेंगी कभी नहीं
हम 'उदार' हम ही भारत की,आन-बान और शान हैं
हम से ही है बना देश यह, हम ही हिन्दुस्तान हैं।।

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा

नितेश शाह
दुबई, यू.ए.ई.

सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा।
अलगाव की घटाएँ हमको नहीं डिगाएँ,
भाषा अनेक रंग भी हम एक हो मर जाएँ,
पर मरते मरते गायें एक गीत यही प्यारा,
इस पुण्यमयी धरा की तुम एक ही हो धारा,
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा ...

मंदिर में क्यों हैं दंगे, मस्जिद में क्यों हैं ताले,
क्यों बन रहे खुदा को नीलाम करने वाले,
कसमें कुरान की हैं गीता ने फिर पुकारा,
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा...

मस्जिद भी हमको प्यारी, मंदिर भी है प्यारा,
है प्राणों से भी प्यारा, सिक्खों का गुरुद्वारा,
आवाज़ दे रहा है झेलम का वो किनारा,
इस पुण्यमयी धरा की तुम एक ही हो धारा,
सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा...

मैं भारत हूँ

निहाल चन्द्र शिवहरे
झाँसी, उत्तर प्रदेश, भारत

यहाँ मोक्षदायिनी पुण्यसलिला गंगा की अविरल धाराएँ हैं
अनेकता बनाम एकता की अनगिनत अनुपम गाथाएँ हैं।
अर्जुन के गांडीव की टंकार व वेदों की ऋचाएँ हैं
कबीर की वाणी, सूर के पदों में सूफी मान्यताएँ हैं।

शिवालय में हर हर महादेव के स्वर मस्जिद में अजान है
सत श्री जो बोले सो निहाल गिरजे में बाइबिल गान है।
सभी धर्मों का है आदर जहाँ यही भारत की पहचान है
वृक्ष, सागर व नदियाँ पूजी जाएँ जहाँ वह देश महान है।

राणा का अश्व चेतक वीरों में राजस्थान की शान है
रानी लक्ष्मीबाई के अश्व बादल ने भी रखी आन है।
अहिंसा के हम हैं पुजारी विश्व में हमारा भी मान है
विश्व बन्धुत्व के रखवारे हम हमको इसका अभिमान है।

भारत का गौरव

पिंगलेश कचौले
इन्दौर, मध्य प्रदेश, भारत

आर्यों ने ही नभ में जाकर नक्षत्रों को जाना है।
शून्य दशमलव धराभ्रमण सदियों पहले पहचाना है।
त्याग तपस्या के बल से लाए भू पर गंगा पावन।
कोटि कोटि जन तारे जिसने शुद्ध किया है अन्तर्मन।

पाषाणों को तैराकर सागर-सेतु निर्माण किया।
है कोई दूजा हनुमत् सा जिसने सागर को पार किया।
जिस भूमि पर ध्रुव प्रह्लाद तप भक्ति पर अड़े रहे।
उनके आगे लाखों कुबेर याचक बनकर के खड़े रहे।

वन में जाकर के राघव ने दानव दल का संहार किया।
उसी धरा पर माधव ने प्रेम भक्ति उपहार दिया।
गीता वेद पुराण उपनिषद शास्त्र मूल समरसता हो।
गीत नृत्य मधु काव्य सुधारस जहाँ सतत बरसता हो।

वीर शिवाजी राणा प्रताप इस माटी का मान हैं।
रूपमती पद्मिनी दुर्गा लक्ष्मी मीरा अभिमान हैं।
जहाँ विविध मत पंथ धर्म की घर-घर बहती गंगा है।
हम सब भारतवासी की असली पहचान तिरंगा है।

भारत के गौरवशाली इतिहास को रगों में भरना होगा।
विश्वगुरु होगा भारत बस जन-जन को जगना होगा।

मेरे वतन

मधु गोयल
लखनऊ, भारत

ऐ वतन मेरे! तू है बहुत ख़ास, घुली है तुझमें संस्कृति की मिठास।
सोचूँ भी अगर जाने को दूर कभी, आ जाता तू चलके ख़ुद ही मेरे पास।
ऐ वतन मेरे! तू है बहुत ख़ास...

ताजमहल या स्वर्णमंदिर हो, सूर्यमंदिर या लालकिला।
वास्तुकला के क्षेत्र में तेरा, स्वर्णाक्षरों से नाम लिखा।
क्या जामामस्जिद, क्या चारधाम! कुतुबमीनार औ' अक्षरधाम।
विश्व-फ़लक पर कई अजूबे, चमका रहे हैं तेरा नाम।

नृत्य-गीत-गायन-वादन, कलाओं का तू संगम है।
हस्तशिल्प-मेहमाननवाज़ी, में तो अव्वल हरदम है।
ज्ञान और विज्ञान-जगत की, सदियों से तू शान है।
परमाणु-तकनीक दिलाती, सारे जग में मान है।

व्यंजन और पकवान यहाँ के, सब का मन ललचाते हैं।
स्वाद-सुगंध के दीवाने तो, ख़ुद ही खिंचे चले आते हैं।
पहनावे से अदब झलकता, बोली में मिसरी सी घुलती।
त्योहारों में तुझ सी रंगत, सारे जहाँ में कहीं न मिलती।

छः ऋतुएँ आ समय-समय पर, करती हैं वंदन-नर्तन।
इनके माफ़िक ही होता है, खान-पान में परिवर्तन।
पुरवा-पछुवा का है अपना, अलग-अलग अंदाज़।
हरे-भरे वन-उपवन तेरे, देते सबको श्वास-प्रश्वास।

'वसुधैव कुटुम्बकम' का तूने, पहना है मखमली लिबास।
'विविधता में एकता' की मिसाल, बनाती तुझे विश्व भर में ख़ास।
हर-एक को अपना बनाने का, विशिष्ट हुनर है तेरे पास।
भारत! मेरे दिल-मेरी जान! मुझे तुझ पर है बहुत नाज़।

ऐ वतन मेरे! तू है बहुत ख़ास, घुली है तुझमें संस्कृति की मिठास।
सोचूँ भी अगर जाने को दूर कभी, आ जाता तू चलके ख़ुद ही मेरे पास।
ऐ वतन मेरे! तू है बहुत ख़ास...

भारत वतन हमारा है

महेश पँचाल ‘माही’
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

यह धरती है पावन जिस पर, अंबर भी इठलाता है,
इतिहास कीर्ति यश का हमको, हर पन्ना बतलाता है।
शूरवीर, सूरमा ने जिसको, शीश होम सँवारा है,
पूजित वंदित देव भूमि यह, भारत वतन हमारा है।

कन्याकुमारी पावन पगतल मस्तक कश्मीर घाटी,
लहू मिला कर बूँद-बूँद, है कण-कण गूँथी माटी,
लगी जिन्हें जयमाला जैसी, बंदूकों की हर गोली,
उन वीरों की हुंकारों से, गोरों की सत्ता डोली,
बाल-अबाल सब रम गए थे, इंकलाब के नारों में,
घोष वंदे मातरम गूँजे, गली-गली चौबारों में,
सूर्य उदय हो स्वागत करता, वह तो चमन हमारा है,
पूजित वंदित देव भूमि यह, भारत वतन हमारा है।

राम रमें हैं इस के कण में, वाल्मीकि जी बताते हैं,
मुरलीधर भी यहीं हवा में, रमते हैं हर्षाते हैं,
शिवा कृष्ण महावीर गौतम, से दीप्तमान धरती है,
मीरा नानक कबीर तुलसी, रसखान से सरसती है,
मेकल गंगा देवसुता औ, हिमगिरि पर कैलाश जहाँ,
हुई निछावर प्रकृति जहाँ हो, केसर रंग पलाश यहाँ,
सींचा लहू पिला के कण-कण, इसको नमन हमारा है,
पूजित वंदित देव भूमि यह, भारत वतन हमारा है।

त्याग तपस्या स्वाभिमान है, प्रीत हृदय निष्काम जहाँ,
अवनी जिस पर देव रमण है, बसे हैं चार धाम जहाँ,
नर में दर्शन नारायण के, नारी देवी समान है,
यहीं जनम हो मनुज रूप में, केवल यही अरमान है,
वासंती है हवा जहाँ की, फागुन की महकान सदा,

चूम-चूम कर फंदे गाया, रंग दे बसंती गान सदा,
जन गण मन से है अर्पित यह, तन और धन हमारा है,
पूजित वंदित देव भूमि यह, भारत वतन हमारा है।

विंध्य अरावल हिम शिखरों से, गूँजा हर-हर नारा था,
प्राण भले ही जाएँ लेकिन, रग-रग में अंगारा था,
सुलग उठी जब ज्वाल क्रांति की, कूदे सच्चे नायक थे,
मंगल भगत सुभाष सरीखे, आज़ादी के गायक थे,
शेखर, बिस्मिल, बोस, तिलक भी, जन-जन के अधिनायक थे,
शेष सहित संकल्प सभी के, स्वतंत्रता के दायक थे,
इस पर आँच न आने देंगे, सुन लो वचन हमारा है,
पूजित वंदित देव भूमि यह, भारत वतन हमारा है।

भारत की महिमा

माया बंसल
ऑरेंज, कनेक्टिकट, यू.एस.ए.

महिमा यदि कहने लगूँ
स्वदेश भारत देश की
किस पक्ष को मैं छोड़ सकूँ?
जिससे परम विभूति उसकी।

संस्कृति हो, इतिहास हो
भूगोल, साहित्य,धर्म हो
फैली विविध भाषाएँ हों
या फिर सामाजिक ढाँचे हों।

जिस देश की भूमि माता है
हिमालय मुकुट जैसा सोहे
गंगा यमुना अरु बहु नदियाँ
बन रक्तवाहिनी तन सींचे।

सागर चरण पखारे जिसके
भाग्यवान वो धरती है
मंदिर कलात्मक ऐसे साजें
उपमा कहीं ना मिलती है।

उज्ज्वल अतीत पर खड़ा हुआ
गौरवशाली इतिहास लिए
सुख-सम्पत्ति से भरा हुआ
आकर्षण का ही केन्द्र बने।

यह ऋषि-मुनियों की धरती है
उपजे हैं वेद पुराण यहाँ
उपनिषदों की मशाल तेज
जो भस्म करे कर्मों को सदा।

वाल्मीकि तुलसी के राम
जीवन की कला सिखाते हैं
अपने निज हित से भी ऊपर
जो राष्ट्रधर्म बतलाते हैं।

गीता जीवन की कुंजी है
कर्मों का पाठ पढ़ाती है
भक्ति, ज्ञान, संन्यास सहित
कर्मठ बनना सिखलाती है।

रामायण, गीता गाई जातीं
जीवन जीने की सब विधियाँ
नानक, कबीर अध्यात्म मार्ग से
खोल गए अन्तर्निधियाँ।

पथ खोल दिया महावीर ने
तुम आत्मा, परमात्म बनो
बुद्ध मिटा गये उस अहम् को
आत्मा मिटाकर शून्य बनो।

विश्वासों की अटल ज्योति
जहाँ सदा प्रज्ज्वलित रहती है
ईश्वर पर पूर्ण समर्पण करके भी
कर्मों की मशाल जहाँ जलती है।

जहाँ गनपति सर्वकल्याणक हैं
माँ शारदा के स्वर गूँजें
शक्ति की पूजा होती है
नटराज नृत्य में थिरक उठें।

अरविन्द महर्षि, रमन महर्षि
कृष्णमूर्ति और ओशो जैसे
धर्मगुरुओं के उपदेशों से
आत्मा भारत की सिंचित है।

इस देश के ऋषि मुनियों ने
अन्तर्चक्षु से देख लिए थे
जो ग्रह-नक्षत्र और सौरमंडल
उनको वैज्ञानिक अब खोज रहे।

विवेकानन्द योगी ऐसे थे
भाईचारे का मन्त्र दिया
देश विदेश भ्रमण करके
विश्वबंधुत्व जगा दिया।

कालीदास और रवीन्द्रनाथ
काव्यों का सौन्दर्य बढ़ा गए
अपने पीछे कविता, साहित्य की
शृंखला ही बना गए।

राणा, शिवाजी, पटेल, गोखले
गाँधी, अटल की भूमि यह
सुखदेव, भगतसिंह, राजगुरु के
बलिदानों की मिट्टी यह।

अपनी कलात्मक निधियों से
जगभर में जाना जाता है
सपना हर मानव का जग में
भारत भ्रमण का होता है।

अतिथि देवतुल्य होता है
हँसकर आलिंगन करते हैं
अपना पराया कोई नहीं
सबके संग घुलमिल जाते हैं।

व्यंजनों की सोंधी महक जहाँ
सबको आकर्षित करती है
उसपर भी कला खिलाने की
मन को गद् गद् कर देती है।

बोली, परिधान, तीज, त्यौहार
प्रत्येक प्रदेश के अलग अलग
रंगों से रँगा देश भारत
नृत्यों की थिरकन अलग-अलग।

सीमाओं पर बसे देशों से
भाईचारा ही रखते हैं
अहिंसा भाव मन में रखते
आक्रमण की पहल न करते हैं।

मातृभूमि के गौरव में
मृदु वंदनाएँ गाते हैं
शत्रु की आँख उठे उस पर
तो झंझावात बन जाते हैं।

सदा निकट के देशों की
आतातायी झेली है
सदा लूटते रहे विदेशी
फिर भी शान घनी ही है।

भारत के इतिहास में
वीरों की कुछ कमी नहीं
मातृभूमि की रक्षा में
बलिदानों की कमी नहीं।

अब भी शांति नहीं सीमा पर
नित्य नए संघर्ष हैं
नये विवादों के घेरे में
भारत अडिग अजेय है।

भाषा, धर्म, जाति, राजनीति के
विरोधों ने संतप्त किया है
किन्तु इन्हीं अन्तर्द्वन्द्वों ने
भारत को मजबूत किया है।

जिस देश में गौरव का प्रतीक
तिरंगा सदैव लहराता है
त्याग, शांति, सम्पन्नता का प्रतीक
मानव गुणचक्र धारता है।

आधुनिक युग में भी भारत
निरन्तर विकासशील है
अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में
सोने-सा ही प्रदीप्त है।

नित्य निकलती नई प्रतिभाएँ
भारत के उच्च शैक्षिक स्तर से
देश विदेश में उच्च पदों पर
भारतीय आरूढ़ हैं।

अपनी कुशल नीतियों से ही
विश्वभर में जाना जाता भारत
हम कहीं जाएँ और कहीं बसें
झलके भारत जय-जय भारत।।

गौरव गान

रशीद ग़ौरी
सोजत सिटी, राजस्थान, भारत

वंदे मातरम की सदाओं को भुलाना ना कभी,
माँ-भारती के फ़र्ज़ को भूल जाना ना कभी।

वंदना माटी की यूँ हो के फ़ज़ाएँ गूँजे,
कौमी जज़्बात तरानों को भुलाना ना कभी।

कर दो कुर्बान खुद को शहीदों की तरह,
माँ-भारती के सम्मान को लजाना ना कभी।

दिलों में जिन के उजाले ही उजाले हैं,
श्रद्धा के उन चरागों को बुझाना ना कभी।

देशभक्ति की राह पर चलना है सदा,
नमन उस राह को भूल जाना ना कभी।

नित्य नमन-वंदन उन वीर शहीदों को,
अमर बलिदान को भूल जाना ना कभी।

हम सभी बंदे माँ-भारती के बेटे हैं जाये,
अवसर कर्ज़ चुकाने का गँवाना ना कभी।

है हमें गर्व आज़ादी के उन मतवालों पर,
गौरव-गान को उनके भुलाना ना कभी।

ऐ देश मेरे!

रश्मि रंजन
वड़ोदरा, गुजरात, भारत

ऐ देश मेरे
क्या कहूँ तुझे
तेरी आन लिए विचरता हूँ।
कण-कण तेरा
मुझमें शामिल
मैं रंग तिरंगा लिए फिरता हूँ।
यूँ धूमिल है अस्तित्व मेरा
पहचान मेरी है तुझसे
मैं तुझमें खुद को लिखता हूँ।
मैं किस भारत की बात करूँ
तुम विस्मित ही रह जाओगे
सदियों का गौरव है जो मुझमें
मैं आज कथा वो लिखता हूँ।

इक सोने की चिड़िया इठला कर जब
अफगानिस्तान से उड़ान भरती थी
वे पंख सुनहरे क्या पूछो
म्यांमार जा कर भी न थकती थी।

मैं उस भारत की बात करूँ
जिसने संघर्ष भी झेला है।
जिन्हें शरण दी हमने झुक कर
हर बार उसी ने लूटा था।

अब बात सुनो इस भारत की
सर फख्र से मेरा उठता है।
या बात सुनाऊँ उन वीरों की
श्रद्धा से मस्तक झुकता है।

विस्तार कम हुआ लेकिन
इस आन को झुका न पाएगा।
तुम आँख उठा कर देखो चहुँ ओर
शान से तिरंगा लहराएगा।

प्रताप, शिवाजी, लक्ष्मी जैसे वीरों ने
अपना कर्तव्य निभाया था।
यह स्वतंत्रता है देन उनकी
जिसमें सेनानियों ने रक्त बहाया था।

वह गया जमाना जब हम
तेरी आँखों में चुभ जाते थे।
अब नज़र उठा कर देख भी लो
हम आँख निकाल कर आते हैं।

ये धैर्य हमारा ही है जो
तुम सीना ताने चलते हो।
हैं वीर हमारे जो क्षण में
तुमको नतमस्तक कर सकते हैं।

दुर्ग हिमालय की शान है तो
कन्याकुमारी सागर पाँव पखारे है।
गंगा-यमुना की कल-कल ध्वनि
तन पावन कर मन को निखारे है।

है पावन धरती उन महापुरुषों की
जहाँ वीरांगनाओं ने भी पुरुषार्थ किया।
हम भारत के वासी माँ तेरी खातिर
अपने रक्त समर्पण का भाव लिया।

नवल स्वप्न नव भारत का अब
हम विश्व इतिहास रचाएँगे।
फिर कहलाएँगे सोने की चिड़िया
हम भारतवासी कुछ भी कर जाएँगे।

हमारा प्यारा हिंदुस्तान

रामकृपाल 'कृपाल'
जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत

सागर जिसके पाँव पखारे,
हिमगिरि मुकुट समान,
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।।

सुशोभित सरिताओं के हार,
प्रकृति ही करे स्वयं शृंगार।
आरती करते सूरज-चाँद,
लगाती प्राची तिलक लिलार।
कानन चँवर डुलावे खगकुल करता मंगल गान,
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।।

यहाँ की माटी परम पवित्र,
भिन्न भाषाएँ वेश विचित्र।
भिन्नता में भी है एकत्व,
शान्तिप्रिय पावन राष्ट्र चरित्र।
किन्तु क्रांति के अग्रदूत हम दे सकते हैं जान,
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।।

पूर्वज राम-कृष्ण बलवीर,
संत श्री नानक-बुद्ध-कबीर।
भरत ने गिने सिंह के दन्त,
अनोखी भारत की तस्वीर।
मातृभूमि की बलि वेदी पर हम होते बलिदान,
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।।

सुधा सम गंगा-यमुना नीर,
धूलि भी चन्दन और अबीर।
बही थी रण प्रांगण के मध्य,
अलौकिक ज्ञान कथा गंभीर।
ऋषियों मुनियों की यह धरती पावन स्वर्ग समान,
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।।

यह हिन्दुस्तान हमारा है

रेणु चन्द्रा माथुर
फ्रेमोंट, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

यह देश है मेरा सतरंगी
प्रेम भाव से धरती भीगी
रंग-रंगीली धरती का
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

यह देश निराली रीतों का
कल-कल बहती नदियों का
विकास की राह पर निकला
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

भिन्न-भिन्न यहाँ जातियाँ
हैं तरह-तरह की बोलियाँ
अनेक विषमताओं से भरा
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

यह देश बड़ा अलबेला है
यह ओढ़े हुये दुशाला है
समृद्ध सभ्यता-संस्कृति का
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

इस देश का उन्नत मस्तक
खड़ा हिमालय देता दस्तक
रक्षा करने को रहता तत्पर
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

सीने पर हरा-भरा आँचल
पाँवों में जिसके है पायल
हिन्द महासागर लहराता
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

यह राम-कृष्ण की है धरती
यहाँ गंगा जमुना हैं बहतीं
देवालयों में बजते घन्टे
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

यहाँ प्रताप शिवाजी थे जन्मे
पद्मिनी पन्ना धाय के किस्से
इसकी अमूल्य धरोहर हैं
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

यहाँ मीरा के भजन गूँजते हैं
जन-जन के मुँह पर रहते हैं
यहाँ कबीर रसखान के दोहे
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

यहाँ त्योहारों से मौसम हैं
यहाँ गरबा, घूमर भँगड़ा हैं
यहाँ उत्सव रंगीले होते हैं
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

ना जाति-पाँति इसकी पूछो
ना भाषा में इसको बाँधो
अद्भुत प्राकृतिक दृश्यों वाला
यह हिन्दुस्तान हमारा है।

गीतांजलि

रेणुका श्रीवास्तव
जोधपुर, राजस्थान, भारत

समृद्ध देश की भाषा अपनी,
समृद्ध विपुल वाङ्मय।
रचे गए अनेक रूपों में,
करते प्रज्ञा का विस्तार।
देशकाल सीमा परे से,
सात समुंदर पार तक।
मार्ग प्रशस्त कर रहे अग्रणी,
उच्च कोटि कविवर 'गुरुदेव'।
सांस्कृतिक चेतना के युगदृष्टा,
दिया गीतों का अद्भुत उपहार।
प्रकृति प्रेम, अध्यात्म व दर्शन,
विशिष्ट रहस्यवाद परिपूर्ण।
गीत लयात्मक, छन्दोबद्ध अनुपम,
भावप्रवण कालजयी धरोहर।
हुआ देख हतप्रभ सारा जग,
दिया विश्व का सर्वोच्च सम्मान।
करता गौरवान्वित सान्निध्य उनका,
अहर्निश करता उत्प्रेरित।
अपूर्व,अमूल्य,अतुलनीय निधि
धन्य हुआ ये देश सकल जन
धन्य धरा, सारा संसार।

सुभारती वसुंधरा

विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

सुभारती वसुंधरा, मनोहरा-मनोहरा।
लगे छिटक के आ गई, सुदिव्य लोक से धरा।।

सुद्वार व्योम खोल भानु लाल रश्मि घोलकर।
लगा रहा तिलक धरा, सु आगतम् बोलकर।।
खिली-खिली हुई धरा, सुदिव्य रूप सुनहरा।
लगे छिटक के आ गई, सुदिव्य लोक से धरा।।
सुभारती वसुंधरा।

सुक्षेत्र अन्न उपजते, सुबाग फूल-फल खिलें।
नदी-नदी सुनीर और शैल-शैल नग मिलें।।
सुरम्य रेणु थल पड़ा, अथाह संपदा भरा।
लगे छिटक के आ गई, सुदिव्य लोक से धरा।।
सुभारती वसुंधरा।

पुरुष यहाँ प्रवीर धीर नेक और साहसी।
सनेह-प्रीत पतिव्रता सुनारियों-हृदय बसी।।
अहो सुपुत्र पुत्रियाँ, गृहे मनो कनक खरा।
लगे छिटक के आ गई, सुदिव्य लोक से धरा।।
सुभारती वसुंधरा।

हिमाद्रि शीश एक ओर आसमान से अड़ा।
सुनील सिंधु तीन ओर से सिपाहियों खड़ा।।
सुसैन्य बल निहार कर, अराति दल डरा-डरा।
लगे छिटक के आ गई, सुदिव्य लोक से धरा।।
सुभारती वसुंधरा।

ये दिल तुझ पर कुर्बान

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

ऐ देश! तुझे हम क्या देंगे,
तू बस जान हमारी है।
हम रहें कहीं भी दुनिया में,
ये दिल तुझ पर कुर्बान है।

मिट्टी से तेरी तन पाया,
और मिट्टी में ही खेल बढ़ा।
जब चढ़ा तुम्हारी गोदी में,
संसार में तब मैं आगे बढ़ा।
ऐ देश! यही बस जज्बा है,
तुझसे ही अपनी शान है।
हम रहें कहीं भी दुनिया में,
ये दिल तुझ पर कुर्बान है।

बाघ हमारा राजा है,
और मोर हमारी शान है।
कमल हमारी सुन्दरता और
हीरे-पन्नों की खान है।
धर्म हमारा परहित है और
पुण्य हमारा दान है।
हम रहें कहीं भी दुनिया में,
ये दिल तुझ पर कुर्बान है।

अवधपुरी में राम बसे जो,
करते राज का त्याग हैं।
पाप की लंका जब-जब बढ़ती,
लगती उसमे आग है।

काँधे राम धनुष है सोहे,
और तरकश में बान है।
हम रहें कहीं भी दुनिया में,
ये दिल तुझ पर कुर्बान है।

ग्वाला एक बसा गोकुल में,
धेनु चराता फिरता है।
कालिनाग का नाश करे,
जब गेंद नदी में गिरती है।
सुध-बुध सबकी भूली जाये,
जब छेड़े मुरली तान है।
हम रहें कहीं भी दुनिया में,
ये दिल तुझ पर कुर्बान है।

घाट-घाट तेरे सुन्दर मंदिर,
गाँव गाँव में खेत हैं।
सोने जैसी लगती है जो,
मरुधर की ये रेत है।
गंगा का है पानी अमृत,
और खेतों में धान है।
हम रहें कहीं भी दुनिया में,
ये दिल तुझ पर कुर्बान है।

तीन रंग का झंडा अपना,
शांति दूत सा लगता है।
चक्र अशोक का चले निरंतर,
गति देश को देता है।
वही तिरंगा प्यारा अपने,
अस्तित्व की पहचान है।
हम रहें कहीं भी दुनिया में,
ये दिल तुझ पर कुर्बान है।

भारत का उद्घोष

विष्णु शास्त्री 'सरल'
चम्पावत, उत्तराखण्ड, भारत

मैं भारत हूँ सत्यमार्ग का राही,
नव विकास के लिए सदा उत्साही।

मानवता को मैंने है अपनाया,
नहीं कभी मैं हूँ विचलित हो पाया।

सत्य-अहिंसा मूलमंत्र है मेरा,
सबके प्रति इस मन में प्रेम घनेरा।

शिष्ट-विशिष्ट विनत मैं परहितकारी,
जीवन-शैली भी अपनी है न्यारी।

जग में मैंने भ्रातृभाव पनपाया,
शरणागत को अपने गले लगाया।

नहीं मृषा के आगे मैं झुकता हूँ,
पथ पर कंटक देख नहीं रुकता हूँ।

बाधाओं से तनिक न मैं घबराता,
झूम-झूमकर गीत खुशी के गाता।

सर्वधर्म समभाव-ध्येय अपना है,
विश्व-शांति संस्थापन का सपना है।

निश्चित अपना आयुर्वेद निराला,
जड़ से सारे रोग मिटाने वाला।

मेरी मौलिकता सबने स्वीकारी,
भूल-चूक निज बिगड़ी दशा सुधारी।

त्याग-तपस्या से सीखा है जीना,
कदम-कदम पर कालकूट को पीना।

कितने संकट आये, हुए किनारे,
शीतल होते गये जले अंगारे।

कोई कुछ कर ले न हार पाऊँगा,
मैं अविरल आगे बढ़ता जाऊँगा।

शीर्षासीन न मेरी हिन्दीभाषा,
अन्तर्मन में टीस, न पूरी आशा।

पराधीनता की है अभी निशानी,
गत जीवन की जिससे जुड़ी कहानी।

काश! अभी भी चेतें मेरे प्यारे,
द्वार खुशी के खुल जाएँगे सारे।

बने शीघ्र अब हिन्दी राजदुलारी,
खिलकर सुरभित हो आशा-फुलवारी।

लोग आज फिर सोचें और विचारें,
कर सर्वस्व समर्पित मुझे उबारें।

आत्मोन्नत अक्षत शुभ भाव जगाएँ,
आमय-भय दुनिया से दूर भगाएँ।

ऋषि-मुनियों की रीति-नीति पहचानें,
दिव्य सूत्र जीवन-शैली के जानें।

विश्व एक दिन मेरी जय बोलेगा,
तब सहर्ष मेरे पीछे हो लेगा।

गौरव गाथा भारत की

वीणा पाठक
इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

भारत की धरती का कण-कण, गाता हर दिन वेद-पुराण।
वेदों की अनमोल ऋचाएँ करती हैं, इसका पावन गुणगान।
हड़प्पा, मोहन-जो-दाड़ो,चान्हू-दाड़ो गाते गौरव गाथा।
ढोलावीरा, लोथल, कालीबंगन,बनवाली से है ऊँचा माथा।

भूगर्भ सुनाता सभ्यता की, गाथा विकसित और पुरानी।
रामायण की पावन कहानी, दुनिया में सबने पहचानी।
दिव्य गीत है भगवत गीता, जिसे कोटि हृदयों ने पाया।
निष्काम कर्म का पाठ पढ़ाकर, दुनिया को जीना सिखाया।
जैन धर्म ने खूब पढ़ाया, आत्मा की शुद्धि का उत्तम पाठ ।
पुरु के साहस ने सिखाया, आत्मसम्मान ही है सर्वश्रेष्ठ।

चंद्रगुप्त, चाणक्य ने समझाया, राजनीति हो उत्तम।
बौद्ध धर्म को अपनाकर, सम्राट अशोक बन गए महान।
जीवन मूल्यों का प्रसार कर, किया भारत का कल्याण।
सातवाहन ने उपहार दिया; भाजा,कान्हेरी और कारले।
अजन्ता, ऐलोरा की कारीगरी के, काम हैं उत्कृष्ट निराले।
समुद्रगुप्त और विक्रमादित्य के शासन का अमिट सम्मान।
सुश्रुत, चरक, आर्यभट्ट की शिक्षा को, सब मिल शीष नवाते।

इसकी माटी है अनमोल, अनूठी वीरों की है जननी महान।
वीर शिवाजी और प्रताप के जन्म से पाया इसने सम्मान।
वीर मराठों और सिक्खों ने अत्याचारियों को धूल खूब चटाई।
झाँसी की वीरांगना रानी 'लक्ष्मी देवी' बन सम्मुख आई।
अंग्रेजी शासन ने उसके साहस के आगे मानो मुँह की खाई।

भक्ति की गाथा भारत की अनुपम दुनिया ने है जानी।
मीरा, सूर, कबीर, दादू, नरसी मेहता, या हो चैतन्य महाज्ञानी।

दक्षिण के राजा-धर्मात्माओं ने, रचे सदा उत्तम इतिहास।
बद्रीनाथ, पुरी, द्वारिका और तीर्थ श्रृंगेरी बने श्रद्धा के वास।
गुरु नानक जी ने भी सिखाया, कण-कण में है ईश्वर का वास।

जाग उठा फिर भारत हमारा, विवेकानंद के जाग्रत नारों से।
असंख्य, अनाम देशभक्तों के त्याग ने, खोले भारत के भाग।
कट गईं गुलामी की ज़ंजीरें, भारत को मिला पूर्ण स्वराज।
आओ मनाएँ आज़ादी का, अमृत महोत्सव सब मिल जुलकर।
विश्व में फहराएँ तिरंगा भारतवासी, गर्व से प्रतिपल इतराकर।
जय हिंद, जय भारत!

अभिनन्दन

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के

मेरे देश की आज़ादी की
साल गिरह पर
लोगों ने खूब गाया
जी भर जश्न मनाया
फिर मेरे मस्तिष्क में ही क्यों
आज एक तूफान-सा उठा है
जो मेरे हृदय को लपेटता
अस्तित्व तक को ले उड़ा है
दूर बहुत दूर नदी-नाले
समुंदर पहाड़ सब पार करता
उस देश, उस धरती की ओर
जो मेरा घर था, घर है
मेरा अपना भारत देश!

माना कि धीरे-धीरे
मेरे सब निशान
मिटते जा रहे हैं
और बंजारे सी अपनी
इस नई पहचान के संग
खड़ी मैं सोच रही हूँ -
कैसे तुम मुझे भला
इससे दूर-दूर रख पाओगे
मैं तो इसी मिट्टी से बनी हूँ
और यह मिट्टी कण-कण ही
मेरे पूर्वजों के खून सिंची है
इसी ने तो मुझे सर्वस्व दिया है
और इसी ने मेरा हर सुख चैन
सब कुछ लिया है

मैं इसकी पहचान हूँ
यह मेरा अभिमान
क्या हुआ जो दूर
मुझसे बहुत दूर
मेरा देश महान!

स्वराज लेकर भी
सुराज का सपना देखने वाली
हर आँख क्यों आज भी
बस खून के ही आँसू रो रही है
क्यों गरीबी और
भ्रष्टाचार के बिस्तर पर लेटी
मेरे आजाद भारत की किस्मत
आज तक सो रही है
क्यों दुराचारी दशानन के
दसों सर कट-कटकर
बार-बार उग आते हैं
देखो विभीषण के संग
राम, लक्ष्मण और हनुमान
जाने कब कहाँ और कैसे
वापस मिल पाते हैं।

सफेद हरे और वसंती रंग में
लिपटा यह तिरंगा
शान्ति, सौहार्द और संयम का
प्रतीक है हमने माना
अमन हमे प्यारा है
यह भी हमने जाना

भटके तो यदा-कदा
पर भूले नहीं
बसंती चोले पर जब-जब
खून के छींटे पड़े
हजारों प्राण आज भी तो
कर्तव्य-पथ पर ही
साथ-साथ आगे बढ़े।

शस्त्रों के बल लड़ने वाले
माना वे सेनानी वीर हैं
पर सिर्फ आत्म-बल पे
जो लड़े, मेरे देशवासी
वीर ही नहीं महावीर हैं
राम, कृष्ण, बुद्ध और नानक जैसे
महात्मा और पैगम्बर पीर हैं

मेरे हाथों में श्रद्धा के फूल
और आँखों में कर्तव्य का पानी है
मेरे प्यारे देश बता आज मैं तुझ पर
कौन-सा फूल चढ़ाऊँ?

देश-परिवेश की परिधियों से परे
हम-तुम तो सदा
अभिन्न और अविच्छेद हैं
जो कुछ भी मेरा तन-मन-धन
सब तुझको ही अर्पण
आशीष यही चाहूँ अब तो
जब भी जन्मूँ
भारती बनकर ही मैं आऊँ
मैं तेरी पहचान हूँ
तू मेरा अभिमान
क्या हुआ जो दूर
मुझसे बहुत दूर
मेरा देश महान!

मेरा देश

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

मेरा देश बस साँप-सपेरे
और मदारियों का देश नहीं,
जहाँ जादू से रस्सी चढ़
साधु गायब हो जाए।
ना ही यह पुनर्जन्म
और अंधविश्वासों की कोई
लम्बी रोमांचक गाथा है।

मैने तुमसे कब कहा था
कि तुम सिर मुंडा कर,
राम-नामी दुपट्टा ओढ़े,
किसी नदी किनारे जा बैठो,
तभी सच्चे हिन्दू बन पाओगे,
ज्ञानी कहलाओगे।

मेरा धर्म कोई विधिवत्
संन्यास नहीं, जीवन है,
जीने की एक आदत है,
जो 'जिओ और जीने दो'
का मूलमंत्र सिखलाता है।

अन्दर से जो जगे
वही बुद्ध है,
वरना समस्त ज्ञान लेकर भी
ज्ञानी नेति-नेति चिल्लाता है।
यह किसी प्रभु द्वारा लिखा
पराधीनता का दस्तावेज नहीं,
निष्कर्म बनाकर मानव को
जो अपना ही नाम रटवाए।

कर्म-धर्म है यह
हर कर्मयोगी का,
बादल, पवन, पक्षी-सा,
हवा में उड़ता बस
एक खयाल नहीं।

हिन्दू, मुसलमान
सिख, ईसाई क्या!
तुम पक्षी-पौधे तक
कुछ भी बनकर
आ सकते हो।
जैसे कर्म करोगे
वैसी ही योनि पाओगे।

सीधे-सादे मेरे देश की
हर बात ही बड़ी सीधी है।
जो गोदी में बिठलाए,
भूख, प्यास मिटाए,
वह धरती, नदिया, गैया
आज भी तो बस,
माता ही कहलाये।

हम सब के सभी हमारे

श्याम बहादुर श्रीवास्तव
जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत वसुधा जननी अपनी,
हम इसके लाल दुलारे हैं।
माँ के रक्षक सपूत प्रहरी,
हम सारे जग से न्यारे हैं।।

हो जाति-धर्म कोई भी पर
है भिन्न नहीं अपनी माता,
खेले सब एक गोद में हम,
अपना भाई-भाई नाता,
गगनांगन में जैसे जगमग-
हिलमिल रहते सब तारे हैं।।

मानवता धर्म हमारा है,
है मानव मात्र जाति अपनी,
है छोटा-बड़ा नहीं कोई
सत्ता है एक प्रकृति अपनी,
सबकी ही सुख-समृद्धि लक्ष्य,
सम्मिलित दुख-दर्द हमारे हैं।।

श्रम में विश्वास हमारा है,
हम श्रम पथ प्रेम बटोही हैं,
जो भारतीय संस्कृति-च्युत
मानो भारत माँ के द्रोही हैं,
सादा जीवन उत्तम विचार-
के हम दैदीप्य सितारे हैं।।

है श्रेष्ठ संस्कृति-संस्कार-
का शुभ संगम भारत अपना,
त्यौहार-पर्व, शुभ परम्पराओं-
का उद्गम भारत अपना,
'वसुधैव कुटुम्ब' ध्येय अपना,
हम सबके सभी हमारे हैं।।

तिरंगा

संदेश जैन संदेश
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

तिरंगा आन बन जाए तिरंगा शान हो जाए।
वतन के वास्ते तन मन सभी कुर्बान हो जाए।

मिले गर जन्म फिर मुझको मुझे सैनिक बना देना।
मेरा ईमान मेरी जान ये हिन्दुस्तान हो जाए।

खड़े हैं सरहदों पर जो हमारी आन की खातिर।
सपूतों के लिए दिल से चलो सम्मान हो जाए।

नहीं बाँटें वतन को हम सियासी दाँव पेंचों से।
भगत शेखर के सपनों-सा ये हिन्दुस्तान हो जाए।

करे सम्मान नारी का नहीं दुष्कर्म हो कोई।
रखे इंसानियत जिंदा चलो इंसान हो जाए।

करें हम कर्म सब ऐसे दिखे तहज़ीब भारत की।
बने फिर विश्व गुरु भारत सफल अभियान हो जाए।

मेरा भारत देश महान

सी. कामेश्वरी
हैदराबाद, भारत

सुसज्जित सम्पन्न राज्य हमारे,
समृद्ध प्रदेश, खेत-खलिहान हमारे,
पर्वत-पहाड़, तट, तड़ाग हमारे,
अप्रतिम सुंदर प्रान्त हमारे।

धन्य हुई 'भारत माता' संज्ञा पाकर,
उत्तुंग हिमालय का मुकुट लगाकर,
पूरब-पश्चिम सशक्त भुज पाकर,
कुमारी अंतरीप पाँव पखारकर।

शस्य-श्यामला भूमि इसकी,
अद्वितीय जलवायु षट्ऋतुएँ इसकी,
पवित्र धाम, पावन नदियाँ इसकी,
करते तीर्थ उन्नत भाल इसका।

सभ्यता-संस्कृति का अनूठा संगम,
समृद्ध साहित्य का अनोखा समागम,
रामायण-महाभारत की श्रेष्ठता,
बौद्ध-जैन ग्रन्थों की नैतिकता।

शिलालेखों में चिह्नित स्वर्ण लेख,
सप्तस्वर सप्त-सिंधु में उठते पेंग,
'सोने की चिड़िया'-सी मीठी तान,
आओ गाएँ भारत का गौरव गान।

प्रात:नमन, राम-राम करते जन,
योग-साधना, संध्या-वंदन का अभ्यास,
'गायत्री-मंत्र' अनोखी शक्ति की पहचान,
जगत-कल्याण का होता आभास।

पीली सरसों, केसर लहराये
कमलिनी युक्त सरित-सरोवर रेखाएँ,
बंदनवार शोभित घर-आँगन अल्पनाएँ,
कामना 'विश्व गुरु' का पूर्व वैभव पाएँ।

भारत महान

सी. कामेश्वरी
हैदराबाद, भारत

देश
भारत
महान रे!
संस्कृति गान
सभ्यता अक्षुण्ण
शिलालेख मंडित
इतिहास महान है
आराध्य हैं देवी देवता
खान पान वेष-भूषा भाषा
पत्र-पुष्प विटप सरि
सौंधी मिट्टी की खूशबू
विहंग पशुधन
पावन संगीत
ससम्मानित
आदर से
करते
हम।

चिरंजीवी हो भारत भू आकाश

सुरभि दत्त
हैदराबाद, भारत

खड़ा हिमालय प्रहरी बनकर,
बढ़ा रहा आर्यावर्त की शान!
उमंग की प्रथम किरण से
उगा सवेरा नई आशा के साथ!
अभ्युदय का थामे तिरंगा,
आया अमृत त्यौहार!
विकास पथ पर दमक रहा
सफलता का प्रकाश!
संघर्षों में से तुम निखरे
स्वर्णिम गाथा कहता इतिहास!
अभिनन्दन तुम्हारा आरोहित भारत
यशोगान करता राष्ट्र मन
रख मन विश्वास!
अभिलाषा यही, हो फलीभूत
मनोकामना सभी की
पथ सुगम हो मिलन हो सुखी!
अम्बर से अवनि तक रहे बहती;
मनुजता पीयूष रसधार!
दिनकर से रहे मिलता
जन-जन को आरोग्य वरदान!
पयोधर छलकता रहे
आयुष आशीर्वाद!
खेतों में फसल रहे लहराती;
खुशहाल हो;
देश का हर किसान!
पर्यावरण शुद्ध रहे
हो हर प्राणी संतुष्ट,
धन-धान्य से पूर्ण हो
जननी का अक्षय पात्र।
स्रोतस्विनी मिटाती रहे
हर जीव की प्यास
घृणा द्वेष का अंत हो,
मिटे अहंकार का भाव!
भय अभाव से मुक्त हों
बढ़े आत्मविश्वास!
सीमा पर डटे असंख्य सैनिक
सैनिक कई चिकित्सक
वैभवशाली भारत के;
राष्ट्र भक्त रक्षक!
विश्व में फहरा रहा वसुधैव कुटुंबकम;
संस्कृति वैभव परचम!
गूँज रहा वेद स्वर ब्रह्माण्ड,
चिरंजीवी हो; भारत-भू-आकाश!!

अखंड भारत

सुषमा नैय्यर
लखनऊ, भारत

अखंड भारत अखंड भारत, सुंदर प्रबल प्रचंड भारत,
विश्व शीर्ष पर तटस्थ शीर्षस्थ नव धवल नवल भारत।

प्राण चेतना रूप प्रभा सम प्रदीप्त प्रबल सबल भारत,
हिमाच्छादित हिमखंडों से शीतल शांत सुखद भारत।

वेद-गीता ज्ञान से प्रदीप्त प्रगल्भ शुद्ध प्रबुद्ध भारत,
साहस सम्मान से सुसज्जित सदैव सारगर्भित भारत।

उच्च गौरवान्वित तिरंगा हर्ष गर्व से गर्वित भारत,
'वसुधैव कुटुंबकम' मर्यादा से सर्वत्र सम्मानित भारत।

शुद्ध चेतना ब्रह्मांड की, मंत्रोच्चार से अभिमंत्रित भारत,
स्वस्थ सबल मन, बुद्धि, योग, ध्यान से पल्लवित भारत।

नवीन मानक विकास के प्रगति पथ पर अग्रसर भारत,
शांत सहज सरल, वज्र सा कठोर,जल सा तरल भारत।

हृदय, प्राण, ज्ञान, ध्यान में सदैव भारत, सर्वत्र भारत,
अखंड भारत अखंड भारत, सुंदर प्रबल प्रचंड भारत।

परचम अपना लहराये

हिरेन अरविंद जोशी 'अबोध'
वड़ोदरा, गुजरात, भारत

स्वर्णिम संस्कृति है भारत की, विश्वगुरु सदा कहलाये।
इतिहास लिए गौरवशाली, परचम अपना लहराये।।

नभमंडल को छुए तिरंगा,
स्वाभिमान यह दिखलाता।
विजयी पताका बनकर के,
शौर्यगीत नभ में गाता।
दिव्यता यहाँ बिखरी कण-कण में, तपोभूमि यह कहलाये।
इतिहास लिए गौरवशाली, परचम अपना लहराये।।

स्वतंत्रता मिल गई हमें तो,
सुराज्य स्थापित करना है।
हम सबको अनुशासित रहकर
अविरत आगे बढ़ना है।
राष्ट्र प्रेम की अलख जगाकर, कर्मनिष्ठ हम बन जायें।
इतिहास लिए गौरवशाली, परचम अपना लहराये।।

जाति-धर्म का भेद नहीं हो,
सद्भाव सदा रखना है।
संकल्प प्रगति का लेकर,
कदम मिलाकर चलना है।
कदम-कदम पर मिले चुनौती, फिर भी कदम न रुक पायें।
इतिहास लिए गौरवशाली, परचम अपना लहराये।।

वेद-उपनिषद का ज्ञान यहाँ,
प्रेम अनुराग सिखलाता।
वैज्ञानिक है धर्म हमारा,
सत्य दिशा यह दिखलाता।

ज्ञान यहाँ बहता है अविरल, यह बात न भूली जाये।
इतिहास लिए गौरवशाली, परचम अपना लहराये।।
योग साधना का केंद्र यहाँ,
उर में चैतन्य जगाता।
कैसे काया बने निरोगी,
यह आयुर्वेद सिखाता।
सदा रहें तन-मन से निर्मल, बात यही तो समझाये।
इतिहास लिए गौरवशाली, परचम अपना लहराये।।

अमृतरस लिए पावन गङ्गा,
बहती यह निर्मल धारा।
नद यमुना है श्याम स्वरूपी,
भक्तिसार जिसमें सारा।।
गङ्गा-जमुना की संस्कृति है, उर में अनुराग जगाये।
इतिहास लिए गौरवशाली, परचम अपना लहराये।।

उत्तर में निर्भीक हिमगिरि,
दक्खिन में उदधि चरण पखारे।
पश्चिम में अरब महासागर
अरुणिम रवि पूर्व निहारे।
अरावली विंध्याचल पर्वत, समृद्ध सौंदर्य दिखायें।
इतिहास लिए गौरवशाली, परचम अपना लहराये।।

हिंद राष्ट्र

हिरेन अरविंद जोशी 'अबोध'
वड़ोदरा, गुजरात, भारत

हिंद राष्ट्र की गुहार, विश्व शांति का विचार,
त्रास पे करे प्रहार, राष्ट्र धैर्यवान है,
है पराक्रमी अनीक, धैर्य शौर्य के प्रतीक,
और वो रहे अभीक, देश शक्तिमान है।

ज्ञान का बहे बहाव, है उदार प्रेम भाव,
रोज है यहाँ उमाव, नीति मूल्यवान है,
अंत को अनंत जान, शून्य का दिया प्रमाण,
कर्मचक्र का विधान, सृष्टि विद्यमान है।

श्वेत शीत है कपाल, आर्यखण्ड है विशाल,
तीन ओर है उछाल, भूमि दीप्तिमान है,
औषधीय गङ्गधार, रोग पे करे प्रहार,
धान्य संपदा अपार, राष्ट्र अर्थवान है।

योग, साधना व ध्यान, कर्म है सदा प्रधान,
लोग भी यहाँ सुजान, राष्ट्र ज्ञानवान है,
भिन्न-भिन्न, भाँति-भाँति, धर्म, पर्व और ज्ञाति,
सभ्यता सदा विभाति, एकता प्रधान है।

भारत देश एक सद्विचार है

अवधेश प्रसाद
कैनबेरा, ऑस्ट्रेलिया

भारत देश एक सद्विचार है,
मूर्त सत्य का घोष, उद्गार है,
मानवता को वर, उपहार है,
ज्ञान-ऋणी उसका संसार है।

उच्च हिमालय से दक्षिण सागर,
सिंधु-ब्रह्मपुत्र मध्य उसका आगर,
हरित क्षेत्र, वन धन हैं उसके, पर;
जन करते उसका चरित्र उजागर,
गीता, वेद जिसका संस्कार हैं।

दिक्-दिगंत के शेष-अशेष में,
सुख-समृद्धि से दुःख-क्लेश में,
हर स्थिति, काल, हर परिवेश में,
निहित है जो सर्व-समावेश में,
पूरी वसुधा जिसका परिवार है।

शक्ति से नहीं सत्ता अभिलाषा,
ज्ञान-शोध जिसकी परिभाषा,
कहीं से कोई आये,उसमें समा जाए,
बिना भेद-भाव नस्ल, रंग, भाषा,
सबके लिए सदा खुला उसका द्वार है।

सब सुखी, निरोग हों, सब शांत,
अंतरिक्ष में भूत, सब प्राणी, प्रांत,
सर्व मंगल-कामना की प्रार्थना,
सतत रीति रही जहाँ बिन भ्रांत,
सत्यमेव जयते जिसका आधार है।

पाप-बोध नहीं रहा जहाँ सृजन,
अहम-ब्रह्म का हो समग्र चिंतन,
गुरु-पितृ, अतिथि सब देव-तुल्य,
अनुपम अद्वितीय, एक जीवन-दर्शन,
फल नहीं, जहाँ कर्म अधिकार है।

धर्म जहाँ मत नहीं, कर्तव्य है,
सत्य ही एक सबका गंतव्य है,
कहे जन्म-मृत्यु काल-चक्र परे,
जो सनातन है, वही द्रष्टव्य है,
उस संस्कृति को शत नमस्कार है।

बसता है देश मन-प्राण में,
रहता सबके सतत ध्यान में,
बदले चाहे वेश, खान-पान में,
समर्पित मगर सदा सम्मान में,
भले कोई समुन्दर सात पार है।

भारत का किसान

उर्मिला देवी चौधरी
दुबई, यू.ए.ई.

वह पक्ष बतलाऊँ जिससे, थे तुम अब तक अनजान।
बहुमुखी प्रतिभाशाली, आज के भारत का युवा किसान।।
पूर्वाग्रहों से मुक्त हो पूर्णतया, तुम उसे दो नयी पहचान।
बेरोज़गार कृषक को कहने वालो, अब उसका करो सम्मान।।
चिकित्सक सैनिक इंजीनियर, बनता वह तत्काल।
रूप अनेकों धरता हमारा, वर्तमान भारत का लाल।।

नई तकनीकें हुई विकसित, मशीनों का आधुनिक दौर।
उत्तम फसल उत्पादन और, गुणवत्ता पर भी पूरा ज़ोर।।
जुताई बुवाई सिंचाई कटाई, भंडारण अब नहीं कठोर।
इंजीनियर से कम नहीं कृषक, जिसके हाथ यह बागडोर।।

अनगिनत फसल के रोगों का, रखता बारीकी ज्ञान।
चिकित्सक की भाँति उनका, करता भी वही निदान।।
रोटी कपड़ा और मकान, जीवन में पाता जो इंसान।
मत भूलो तुम इतनी बात, उसके मूल में है किसान।।

जेठ की तपती दुपहरी हो, या हो जाड़े की सर्द रात।
तत्पर यह रहता सैनिक, कोई भी समस्या अकस्मात।।
ओला-पाला-तूफान कभी, कभी पड़ती सूखे की मार।
जिनसे बचने के उसके, होते विफल प्रयत्न हज़ार।।

फसल बीमा का लाभ भी, पाते हैं सीमित कृषिकार।
नहीं पहुँचता उस तक जो, वास्तव में उसका हकदार।।
भाव की भारी मार सदा, मोलभाव का नहीं अधिकार।
मन मसोस कर रहता, जब बिकती उसकी पैदावार।।

कृषक तो बदला लेकिन, ज़माने पर नहीं उसका ज़ोर।
बहुमुखी प्रतिभा फिर भी, भविष्य अंधकार की ओर।।
आहत हुआ अब हृदय उसका, गड़गड़ाहट जिसकी चहुँओर।
नहीं दिखाना चाहता अपने, बच्चे को कृषक की भोर।।

जाग जाओ अब तो इंसान, अन्नदाता भारत का प्राण।
प्राण विकल शरीर का, अस्तित्व होता समान पाषाण।।
पूर्वाग्रहों से मुक्त हो पूर्णतया, तुम उसे दो नयी पहचान।
बेरोज़गार कृषक को कहने वालो, अब उसका करो सम्मान।।

उमड़ आया है सबका प्यार खुलकर फिर से होली में

कमलेश भट्ट कमल
ग्रेटर नोएडा वेस्ट, उत्तर प्रदेश, भारत

उमड़ आया है सबका प्यार खुलकर फिर से होली में,
हुए जाते हैं रंगों पर निछावर फिर से होली में!

कोई समझे अगर दुश्मन तो उसकी अपनी फ़ितरत है,
सभी को हमने समझा है सहोदर फिर से होली में!

किसी का क़द हो कैसा भी, किसी का पद हो कैसा भी,
बड़े-छोटे नहीं हम सब बराबर फिर से होली में!

कोई पहचान में आए भी तो आए भला कैसे,
हर इक चेहरे में दस चेहरे उजागर फिर से होली में!

चलेगी रस के इस मौसम में कैसे चाल नफ़रत की,
है छलकी हर तरफ ही प्रेम-गागर फिर से होली में!

छँटे हैं सारे के सारे ही बादल धीरे-धीरे फिर,
हुआ है पूरा ही अंबर दिगंबर फिर से होली में!

उड़ी है धूल रंगों की, गुलालों का धुआं उट्ठा,
फ़िज़ा का इन्द्रधनुषी है कलेवर फिर से होली में!

करो कुछ और चाहे ना करो हे होलिका माता,
मिटा दो द्वेष हर मन के जलाकर फिर से होली में!

हिंद देश

कुलवंत सिंह
मुंबई, भारत

दुनिया में है सबसे प्यारा।
हिंद देश है सबसे न्यारा॥

धरती पर है देश निराला,
जग को राह दिखाने वाला,
कोटि नमन करते इस भू को,
ले गोदी सबको है पाला,

योग अहिंसा, ज्ञान, ध्यान की
बहती पावन निर्मल धारा।
हिंद देश है सबसे न्यारा॥

भाँति-भाँति के फूल खिले हैं,
इस धरती के रंग में ढले हैं,
गोरे, काले या हों श्यामल,
दिल के लगते सभी भले हैं,

जप तप पूजा धर्म न्याय की,
दिलों में बहती अमृत धारा।
हिंद देश है सबसे न्यारा॥

मिलन अनोखा संस्कृति का है,
भाषा, वाणी, बोली का है,
सबको दिल में बसाता देश
ऋषियों, मुनियों, वेदों का है,

सत्कर्मों से, सद्भावों से,
मानवता का बना सहारा।
हिंद देश है सबसे न्यारा॥

देवों की है महिमा गाता,
हर जन मंदिर मस्जिद जाता,
इस धर्म धरा पर कर्मों से
पुण्य प्रगति की अलख जगाता,

पर्वत, नदियों घाटी ने मिल,
इस भू को है खूब सँवारा।
हिंद देश है सबसे न्यारा॥

दीवान-ए-‘आम’

देवयानी ‘रानी’
दुबई, यू.ए.ई.

यह आम है बड़ा ख़ास,
बेहतरीन जो है इसकी मिठास,
फलों का ये राजा कहलाता,
साल के कुछ दिनों की, इसकी मेहमानवाज़ी में
मैं अपने आप को खुशनसीब पाता।

लखनऊ का दशहरी हो या लंगड़ा बनारस का,
शुक्र है ये आम आदमी के है बस का,
मुंबई के अल्फोंसो की नहीं कोई तुलना,
जो सोचें इस फल को ‘आम’, उनका ऐसा क्यों है भला कहना?

खासियत यह हर प्रांत की,
आमतौर पर बादामी और नीलम है पसंद सबकी,
रसीला है केसर, तोतापुरी या चौसा,
खाये सब इसे, हर उम्र का, बालक, दादा, या मौसा।

रंग इसका कभी हल्का या कभी गहरा,
न तज इसे खाना, जब है न कोई बंधन न पहरा,
मिले ये कभी डाल का या कभी पाल का,
इसकी भीनी महक दे आनंद पूरे साल का।

ग्रीष्म ऋतु की ऊष्मा व नमी में चहचहाये चिड़िया,
शाखों पर है मंजरी, कैरी और अमिया,
इन वृक्षों के पत्तों से सुसज्जित हो हमारी पूजा,
फलों के जगत में न लगे प्यारा और कोई दूजा।

आम के आम और गुठलियों के दाम,
सही है ये कहावत,
हमने न पाली कोई और चाहत,
क्योंकि फलों का राजा आम है
और हमारे इस राष्ट्रीय फल का दुनिया में नाम है।

वसंत ऋतु

मंजु तिवारी
दुबई, यू.ए.ई.

नव कोंपलों का मौसम आया,
शीत ऋतु का अब अंत हुआ।
सुनहरे उगते सूरज के संग,
प्रस्फुटित वसंत हुआ।।

आमों पर बौर हैं आये,
कोयल कूँ-कूँ गाये।
तितली मचल-मचल कर,
फूल-फूल पर इतराये।
ठंडी ठंडी बयारों का,
कैसा सुनहरा अंत हुआ।
नव कोपलों का मौसम आया,
प्रस्फुटित वसंत हुआ।।

महकी पीली सरसों धरा पर,
दूर गगन मुस्काये।
प्रकृति अपने नव-यौवन पर,
मंद-मंद शरमाये।
महके वन-उपवन देखकर,
हर जीवन उन्मत्त हुआ।
नव कोंपलों का मौसम आया,
प्रस्फुटित वसंत हुआ।।

देखो! धानी चुनर ओढ़कर,
धरती फिर मुस्कायी है।
आशा की किरणें फैलीं,
हर ओर खुशहाली छायी है।
जीवन है निरंतर परिवर्तन,
वसंत ऋतु यही गुनगुनायी है।
मस्त पवन के झोंकों से,
मन आनंदित मदमस्त हुआ।
नव कोपलों का मौसम आया,
प्रस्फुटित वसंत हुआ।।

त्योहारों का रेला

मधु गोयल
लखनऊ, भारत

पूरे वर्ष चला करता है,
त्योहारों का रेला।
यह भारत ही है जिसमें होता,
हर दिन खुशियों का मेला।

कभी मनाते ईद,
कभी होती है दीवाली।
गुरुपर्व, रक्षाबंधन की तो,
है बात ही निराली।

गिले-शिकवे सब दूर भागते,
जब खेली जाती होली।
त्योहारों में सज जाती,
हर द्वार पर रंगोली।

आता है जब तीज-पर्व,
सजते बागों में झूले।
कर सोलह श्रृंगार 'नार',
अपने सब दुःख-सुख भूले।

क्रिसमस, नववर्ष का है अपना,
अलग ही अंदाज़।
विजयादशमी-पर्व भी,
होता है यहाँ ख़ास।

स्वतंत्रता-गणतंत्र-दिवस तो,
हिन्द-महापर्व हैं।
गांधी-शास्त्री के जन्म पर
बच्चे-बच्चे को गर्व है।

सर्वधर्म-सद्भाव यहाँ पर,
सदियों से ही पलते हैं।
ऐसे संस्कार तो केवल,
भारत में ही मिलते हैं।

भारतीय नारी शक्ति

ममता उपाध्याय
वाराणसी, भारत

भरत भूमि ने तुमको कल की
लक्ष्मी, पदमावत माना है
उठ तुमको अपना कीर्ति ध्वज
पर्वत पर लहराना है।

चल बेटी! बेजान पंख में,
पुनः जोश और प्राण भरो।
फिर से पावन-पुण्य धरा पर,
स्वचरित्र निर्माण करो।

सहज सरल व्यवहार कुशल हो,
मृदु रस रखना बातों में।
अपने कुल की आन-बान और,
शान को रखना हाथों में।

विषम समय है फौलादी,
हौसलों से आगे बढ़ना है।
प्रेम भँवर में फँस कर देखो,
फाँसी पर ना चाढ़ना है।

सुनो बेटियों! कभी न पड़ना,
जिहादियों के प्यार में।
वरना एक दिन बिकना होगा,
बिना भाव बाजार में।

अग्नि-परीक्षा दे ना सकोगी,
लक्ष्मण रेखा पार न कर।
लज्जा चीर बचानी है तो,
उपहासों से वार न कर।

रानी पद्मा के जौहर की,
लाचारी को याद करो।

रानी लक्ष्मी के साथ हुई,
उस गद्दारी को याद करो।

रहना सजग; ये दुष्ट दुःशासन,
चीर ना तेरा लूट पाये।
जब तक जीना गर्व से जीना,
शान न तेरी घट जाये।

खुले चक्षु रख; गांधारी-सी,
पट्टी अब ना बाँधो तुम।
गंगापुत्र पितामह जैसे,
मौन नहीं अब साधो तुम।

मूक, बधिर की महासभा में,
बेटी अब लाचार ना हो।
खुद को सक्षम करो बेटियों,
ताकि तुमपे वार ना हो।

रचे गए हर चक्रव्यूह का,
तोड़ तुम्हारे पास हो।
तुम पर आँख उठाने वाले,
का तत्क्षण ही नाश हो।

आगे बढ़ के निकल पड़ो,
कल्पना, किरण की राहों में,
मैरीकॉम और उड़न परी सी,
सपने बुनो निगाहों में।

'ममता' की कविता से लेकर,
अपना फर्ज निभाओ तुम।
स्वर्णिम अक्षर में गरिमामय,
गाथा दर्ज कराओ तुम।

आज का भारत

विनीत कुमार
गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

आज का भारत, बुद्ध के अरमानों का भारत,
आजाद, भगत सिंह, चंद्रशेखर के सम्मान का भारत,
देश के ऊपर शहीद हुए, हर एक के सपनों का भारत,
ऐसा होगा मेरा आज का भारत....

भिन्न-भिन्न धर्मो का अपना देश यह है,
विविध संस्कृति व सभ्यता का समावेश यह है,
पहाड़ों, नदियों का यहाँ है अदभुत नजारा,
मस्जिद की अज़ान, मंदिरो की घंटियों का संगीत यहाँ है
होकर अलग-अलग भी हम, सभी एक यहाँ हैं,
आज के भारत का सुंदर परिवेश यहाँ हैं।

तकनीकी के इस दौर में दिल में भावनाओं को संजोता भारत,
आपसी कलह के इस युग में शांति का पाठ पढ़ाता भारत,
स्वार्थ व द्वेष के अंधकार में मानवता की लौ जलाता भारत,
आओ! दिखायें तुमको अपना आज का भारत....

विश्व रूपी आँगन में निर्मल कमल खिला हुआ,
मातृरूपी माथे पर जैसे सौंदर्य बिंदी-सा सजा हुआ,
हृदय में है पवित्र करुणा निस्वार्थ प्रेम भरा हुआ,
ऐसे भारत के सम्मान में 'विनीत' कोटि कोटि तेरा सर झुका हुआ।

भारत और सर्वधर्म

शुभदा भार्गव
अजमेर, राजस्थान, भारत

अनेक धर्मों का है जो धाम,
उस देश का ही तो है 'भारत' नाम।
हर पवन का झोंका सरसराता है,
जैसे दिल को अंदर तक सहलाता है।
दरवाजा खोलते ही सर्व धर्म की बाहों में,
भरते हैं प्यार आलिंगन में निगाहों में।
इसकी ही खुशबू बिखर कर,
सहज और सरल प्यार से मदमाती है।
धार्मिक-मितभाषी वही भारतीयता कहलाती है।
भोर की दुल्हन सूरज संग सज आती है,
मंदिर की घंटी मीठा राग सुनाती है।
गुरुद्वारे की सुरीली गुरबाणी,
लंगर का खाना और गंगा का निर्मल पानी।
दरगाह से निकली दुआ व अज़ान,
जहाँ कोई भी तो नहीं है अंजान।
चर्च के घंटे का टन-टनाता स्वर,
राग द्वेष मिटा देता है प्यार भर,
श्वेतांबर और दिगंबर जैन धर्म के दो रूप,
हमारी चंचलता बनती निर्मलता का स्वरूप।
जहाँ मानते आग को ही भगवान है,
वह पारसी धर्म भी बहुत महान है।
तितली रंग-बिरंगे पंखों वाली,
हर फूल से रस पीती मतवाली।
मधु का रंग तो वही स्वाद भी मीठा,
ऐसा ही सर्वधर्मी मेरा भारत है अनूठा।
शीतल सुगंधित पवन,
नहीं पूछती कौन-सा उपवन।

ऐसे ही यहाँ जो भी पवित्र धर्म हैं,
उनका आदर करना ही भारत का कर्म है।
जहाँ गंगा-जमुनी की तर्ज है,
तभी तो हर धर्म भारत में मर्ज है।
यहाँ बहुतायत में जन शाकाहारी,
सभी धर्मों के प्रति हैं उपकारी।
अनेक धर्म हैं फिर भी सभी का यहाँ मान है,
तभी तो गिनती में मेरा भारत देश महान है।

गर्विता

सीमा जोशी मूथा
जोधपुर, राजस्थान, भारत

कौन कहता है,
बेटियों में दम नही होता!
इतिहास के पन्ने खोल के देखो,
किसको गर्व नही होता!

युद्ध मैदान में,
वीरांगना लक्ष्मी बाई।
तो कही अंतरिक्ष में,
कल्पना चावला छाई।
खेलकूद में पी टी उषा ने,
ऊँची छलाँग लगाई।
तो कही मदर टेरेसा ने,
कइयों की जान बचाई।
कौन कहता है,
बेटियो में दम नही होता!
इतिहास के पन्ने पलट के देखो,
किसको गर्व नही होता!

हर पन्ने में,
महादेवी वर्मा समाई।
तो कहीं रानी पद्मावती के,
बलिदान की महिमा बताई।
राजनीति में इंदिरा गांधी ने,
अपनी धाक जमाई।
तो कहीं सरोजिनी नायडू,
भारत की कोकिला कहलाई।
कौन कहता है,
बेटियो में दम नही होता!
इतिहास के पन्ने-पन्ने में देखो
किसको गर्व नहीं होता!

अहिल्या बाई ने,
धर्म क्षेत्र मे अपनी पहचान बनाई।
तो कही लता मंगेशकर,
स्वर-माधुर्य की साम्राज्ञी कहलाई।
बेटी का मिलना,
वरदान से कम नही होता।
किताब का पन्ना,
इनके बिना पूरा नही होता।

भारत की बेटियाँ

सीमा शर्मा
दिल्ली, भारत

बेटी करे करुण पुकार,
क्यों नहीं मिलता मुझको प्यार।
बेटों को रखते हो दिल में,
हमको मिलता क्यों तिरस्कार।।

क्यों पैदा होने से पहले,
गर्भ में मारी जाती बेटियाँ।
क्यों पैदा होते ही पैरों में,
मेरे डाली जाती बेडियाँ।।

अगर नहीं होंगी बेटियाँ,
परिवार कैसे बढ़ाओगे।
गर नहीं होंगी बेटियाँ तो,
बहू कहाँ से लाओगे।।

हक नहीं क्या मुझको,
अपने सपने पूरे करने का।
क्यों पाठ पढ़ाया जाता मुझको,
हर किसी से डरने का।।

मैं मन लगाकर पढ़ती हूँ,
हर क्षेत्र में आगे बढ़ती हूँ।
घर के कामों में हाथ बँटा,
पढ़ाई पूरी करती हूँ।।

दुख-सुख में देती साथ सदा,
करती हूँ सारे फर्ज अदा।
फिर क्यों करती माँ फर्क इतना,
मुझे प्यार चाहिए भाई जितना।।

क्यों बढ़ने नहीं दिया जाता,
कई जगह आज भी बेटियों को।
क्यों पढ़ने नहीं दिया जाता,
गाँव में आज भी बेटियों को।।

बदल रहा है समय आज,
सोच भी सबको बदलनी होगी।
बेटा बेटी है एक समान,
शिक्षा सबको पूरी करनी होगी।।

मैं कापुरुष क्यों हो गया

सुभाष चन्द्र बन्सल 'साहिल'
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

अकर्मण्य और असहाय, निस्तेज मैं क्यों हो गया
पंगुल बन निश्चल पड़ा मैं, कापुरुष क्यों हो गया।।

अनाचार, अत्याचार, व्यभिचार सारे कर्म तुच्छ
गूँगा बहरा बना बैठा, कर न पाता पर मैं कुछ
पनपती बाड़ें काँटों की और झरते पुष्प गुच्छ
गदहे घुड़सवारी करते, स्वान खींचे हस्ती पुच्छ
संत कारागृह मे, गुंडे ताल ठोंककर ऐठें मूँछ
अनचाहे, पर देखता, मैं कर्महीन क्यों हो गया।

अकर्मण्य और असहाय, निस्तेज मैं क्यों हो गया
पंगुल बन निश्चल पड़ा मैं, कापुरुष क्यों हो गया।।

निर्लज्जता प्रविष्ट घर-घर में हूँ मैं देखता
शर्मो हया घूँघट उठा चौपालों पर मैं देखता
प्रसव पीड़ा सहती, बिन ब्याही हुई मैं देखता
और वासना साम्राज्ञी बनी, बैठी हुई मैं देखता
लक्ष्मी ही लक्ष्मी के हाथों, बिक रही मैं देखता
न जाने क्यों आँखें चुरा, बैठा हुआ है देवता।

निर्लज्ज हो साक्षी बना, मैं भी त्रसुर क्यों गया
पंगुल बन निश्चल पड़ा, मैं कापुरुष क्यों हो गया।।

गिर रहा भाषा का स्तर, देश में दिन रात है
संकुचित हो रहे विचार, खो गये जजबात हैं
शालीनता के शब्द, गायब हो रहे बेबात हैं
सीमा लाँघती अश्लीलता, संवादों में आघात हैं
अर्थ सारे वर्ण शंकर, कर रहे प्रतिघात हैं
पर मन ये उफ़नता नही, मैं कायर क्यों हो गया।
अकर्मण्य और असहाय, निस्तेज मैं क्यों हो गया

पंगुल बन निश्चल पड़ा मैं, कापुरुष क्यों हो गया।।
हो गये सारे अनैतिक, अवैधानिक भाव हैं
सम्मानित हो रही, नयी गालियाँ हर गाँव हैं
धर्म की आड़ में, फैला हुआ अलगाव है
लुटती हुई संस्कृति, खाती अनेकों घाव है
सरकती जा रही ज़मीन और नंगे पाँव है
हूँ स्वयं भी उत्तरदायी, कि कापुरुष मैं हो गया।

अकर्मण्य और असहाय, निस्तेज मैं क्यों हो गया
पंगुल बन निश्चल पड़ा मैं, कापुरुष क्यों हो गया।।

खादी

सोना अग्रवाल

जयपुर, भारत

खादी! सिर्फ एक शब्द नहीं,
देशप्रेम का भाव है, अपनेपन का एहसास है,
खादी आत्मनिर्भर भारत की पहचान है।

खादी! सिर्फ एक कपड़ा नहीं,
एक संस्कार है, एक संस्कृति है,
खादी स्वावलंबन की प्रवृत्ति है।

खादी! सिर्फ बुना हुआ वस्त्र नहीं,
सशक्त भारत के सपनों का ताना-बाना है
खादी गांधीजी द्वारा प्रेरित स्वतंत्रता संघर्ष का आईना है।

खादी! सिर्फ एक पोशाक नहीं,
लाखों लोगों का रोजगार है, उनके सपनों की उड़ान है,
खादी देश के बुनकर का गुमान है।

खादी! सिर्फ भारत ही नहीं,
आज सम्पूर्ण विश्व का परिधान है,
खादी फैशन के इस दौर में गुणवत्ता की पहचान है।

खादी! सिर्फ भारत का गौरव ही नहीं,
आज विश्व में भारत के स्वाभिमान का आगाज़ है,
खादी कैप्टन हुक जैसे विदेशी कलाकारों का श्रृंगार है।

खादी! भारत की आत्मा है,
सकारात्मकता एवं आत्मसंयम से बँधी हिंदुस्तान की कमान है,
खादी महज एक कपड़ा नहीं, भारत की आन-बान और शान है।

प्रवासी भारतीय! सुन जाना तुम!

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

इस माटी से विकसा तन, मन जुड़ा इसी प्रकृति से,
इस भू से है नाल जुड़ी, विचार पोषित हैं संस्कृति से,
माता-पिता के संस्कारों को हरदम शीश नवाना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

सात-समुंदर पार की धड़कन, यहाँ स्पंदित होती है,
देवी-आशीष को फलता देख, धरिणी आनंदित होती है,
शीश-शीर्ष बिठाया पुत्र, हृदय से न झर जाना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

सुविधा-संपन्न विदेशी मकान, बड़ी खुशी की बात है,
देशी घर में छूटे जिनकी, वय ढलती जर्जर गात है,
राह टकटकी बाँधे आँखें, फिर-फिर के घर आना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

शिक्षा ने आधार दिया, धन-संचय का व्यापार दिया,
खाने-ओढ़ने का सामान, बहु प्रकार अपरंपार दिया,
स्वदेस के पिछड़े हुओं को, आकर गले लगाना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

परदेश में बहुत तरक्की है, देश में धक्का-मुक्की है,
रक्त-स्वेद की आय से, चलती घर भर की चक्की है,
लहू में बहते लाल वर्ण को श्वेत न कर जाना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

धोती छोड़ पहन ली पैंट, फूल छोड़ छिड़के हैं सैंट,
वृद्धों के चरण-स्पर्श करो, तो न आन में मानो डैंट,
ऋतु बदले, बदलें विचार, लेकिन बदल न जाना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

बच्चे भी घर से दूर हुए, भले दृग के कोहिनूर हुए,
दादी-नानी बुआ-मौसी सब, मिलने से मजबूर हुए,
अंग्रेज़ी गिट-पिट करें मगर, हिंदी भी सिखलाना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम

प्रवास वहीं आवास वहीं, पर जीवन का विश्वास यहीं,
समृद्धि है प्रसिद्धि भी, आनंद-उपजी न श्वास कहीं,
काम हेतु परदेश बसे, पर देश के काम भी आना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

विदेश-स्तुति कितनी-करो, स्वदेश-निंदा जितनी करो,
मात्र उन्नति के हित तोल, वाणी प्रयोग उतनी करो,
सहार कर अर्थ का ढाँचा, रीढ़ सुदृढ़ करवाना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

लक्ष्य-संधान अभी करना, जी-भर काम सभी करना,
मातृभूमि की गोद में, थक के विश्राम कभी करना,
इस धरती की उर्वरा में, अंत में रम जाना तुम!
देश का नाम बढ़ाना तुम, देश का मान बढ़ाना तुम।

पासपोरट अमरीकन मेरो

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

पासपोरट अमरीकन मेरो, पर रंगत हिंदुस्तानी।
आज सुनाऊँ तुमको प्यारे, अपनी रामकहानी॥

छोड़ो भारत मैंने भैय्या, डॉलर में मन ललचायो।
जब-जब देखी चाट-पकोड़ी, मोंह में पानी आयो॥

दीवाली पर दीप जलाऊँ, होली पर खेलूँ रंग।
व्हिस्की वाइन मोय न भावे, पीतो अब भी भंग॥

कैसे होंगे भारत के नेता, मैं करतो भारी चिंता।
देश पड़ो संकट में मेरो, कृपा करो हनुमन्ता॥

पूजूँ अब भी राम किशन, जाऊँ मैं मंदिर हर संडे।
फ़ोकट में मिलतो जब भोजन, संडे है जातो फन-डे॥

ज्ञानी-बाबा आयें देश से, जब देने मुझको ज्ञान।
आँख मूँद के, ना कुछ पूछे, करतो उनको सम्मान॥

हेम्बर्गर अब भी नहीं भावे, भाती मोय कचोड़ी।
जैसो जब भी मौको आयो, टोपी वैसी मैंने ओढ़ी॥

जब मैं जाऊँ देश को अपने, खाऊँ लड्डू और इमरती।
कहतो खुद को हिंदुस्तानी, पर अमरीका मेरी धरती॥

कहने को बहुत है भैय्या, थोड़े को समझो काफ़ी।
बुरा-भलो लागो जो तुमको, माँगू नतमस्तक माफ़ी॥

मैं भारत हूँ भारतवंशी

कौशल किशोर श्रीवास्तव
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

मैं भारत हूँ भारतवंशी, विश्व भ्रमण का अनुरागी,
हाथों में लहराए तिरंगा, वाणी में है "जन गण मन ..."
भ्रमण करूँ मैं यहाँ वहाँ, पर तन में भारत की मिट्टी है,
बोलूँ मैं दुनिया की भाषा, पर हिंदी मेरी जननी है।
मैं भारत हूँ भारतवंशी, जहाँ प्राणों से प्यारी आज़ादी,
सात समंदर पार से देखूँ, लाल किला पर ऊँचा झंडा,
आज़ादी का जश्न मनाए, गाँव-गाँव और शहर-शहर,
उद्वेलित मन से बोल उठा, "झंडा ऊँचा रहे हमारा"।
मैं भारत हूँ भारतवंशी, जहाँ देशप्रेम है अनुरक्ति,
आज़ादी की वर्षगाँठ, हर्षित हैं नर-नारी,
जयहिंद का अनुपम गुंजन, हमें सुनाई देता है,
बीच-बीच में 'वंदे मातरम', रोमांच हमें दे जाता है।

मैं भारत हूँ भारतवंशी, मातृभूमि है प्यारी,
दूर गगन से दिखता है, भारत माता का अनुपम आँचल,
जिसमें शोभित है शुभ्र तिरंगा, गौरव की मधुर कहानी,
जिसके धागों में बसती है, अमर शहीदों की कुर्बानी।
मैं भारत हूँ भारतवंशी, पावन है यह धरती,
सात दशक और पाँच वर्ष, 'अमृत महोत्सव' आज़ादी का,
इतना ही हम दीप जलाएँ, जयहिंद का पर्व मनाएँ,
दूर-दूर पहुँचेगी दीप्ति, फैले सुख शान्ति और समृद्धि।

मैं भारत हूँ भारतवंशी, जहाँ कृष्ण बजाते बाँसुरी,
धर्म कर्म और ज्ञान का सागर, सत्य अहिंसा न्याय का धारक,
विश्व मंच का एक सितारा, मानवता का पोषक,
जिसकी नीति 'वसुधैव कुटुम्बकम', जनतंत्र का आभूषण।
मैं भारत हूँ भारतवंशी, जहाँ चर्चित है राम कहानी,
मैं भारत का एक अंश हूँ, ज्ञान दीप का सेवक हूँ,
'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का शंखनाद करता हूँ,
भारत की गौरव गाथा को कलम स्याही देता हूँ।

प्रवासी भारतीय

कौसर भुट्टो
दुबई, यू.ए.ई.

निकले घर से आजीविका के बेहतर अवसर तलाशने,
अब स्वयं संभावनाओं व अवसरों की जन्मभूमि है।

देश छोड़ा करने को नौकरी, उद्योग और व्यापार,
याद आता है माँ का आँचल और पिता का दुलार।

भारतीय बने बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अधिकारी,
जहाँ भी गए स्थापित किए सफलता के कीर्तिमान,
बने विदेशों की कानून व अर्थव्यवस्था का हिस्सा,
अंतर्राष्ट्रीय पटल पर भारत का बढ़ाया मान।

उभरे नई ताकत बनकर,
भारत का वैश्विक कद बढ़ाया,
अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से,
देश का परचम विश्व में फहराया।

बरगद की भाँति अपनी जड़ों से गहराई तक जुड़े रहते हैं,
विदेशों में दिखलाते भारत से ज्यादा भारतीयता
और वतन की खुशबू बिखेरते हैं।

जहाँ भी रहते हैं अपनी अलग पहचान बनाते हैं
देश के लिए प्रेम, अभिमान कभी ना भुलाते हैं।

प्रवासन सीमित नहीं भौगोलिक सीमाओं तक,
यह तो भौगोलिक सीमाओं का विस्तार है,
प्रवासी हैं परिवर्तन के वाहक,
भारत को समेटे रहते अपने अस्तित्व में और सहेजते संस्कार हैं।

ऐ मेरी भारत भूमि

ज्योति सागर 'सना'
दिल्ली, भारत

ऐ मेरी पावन भूमि! ऐ मेरी भारत भूमि!
तुझे फिर से गले लगाना है।
दूर बहुत हैं, मजबूर बहुत हैं, हम इस बरस,
अगले बरस आकर वहीं बस जाना है।

जब चले थे हम घर से,
पिताजी की नसीहतें साथ थीं।
हाथ थे खाली मेरे मगर,
माँ की दुआएँ मेरे साथ थीं।
ऐसा नहीं कि बातें मयस्सर नहीं,
पर अब वो प्यार से तरबतर नहीं।

अब वहीं आकर जी भर बतियाना है,
ऐ पावन भूमि! तुझे फिर से गले लगाना है।

आँखों में रुआब लाये थे,
बड़ा बनने का ख्वाब लाये थे,
कुछ कर दिखाने का जज़्बा,
अपने अन्दर बेहिसाब लाये थे।
ऐसा नहीं कि पैसे नहीं कमाये,
ऐसा नहीं कि दोस्त नहीं बनाये।

वहाँ आकर पुराना दोस्ताना निभाना है,
ऐ मेरी पावन भूमि! तुझे फिर से गले लगाना है।

छूट गया पीछे जो मेरा आधा जीवन,
अब तक बसा है मेरे तन-मन,
वो पेड़ नीम का, गुलमोहर का,
बारिश में महकता घर का आँगन।
ऐसा नहीं है यहाँ मेरा मकान नहीं है,
पर इस चारदीवारी में जैसे जान नहीं है।

वहाँ आकर घर की छत को पक्का करवाना है।
ऐ मेरी भारत भूमि! तुझे फिर से गले लगाना है।

दूर बहुत हैं, मजबूर बहुत हैं हम इस बरस,
अगले बरस आकर वहीं बस जाना है।
ऐ मेरी भारत भूमि! तुझे फिर से गले लगाना है।

जहाज़ी बंडल

दीप्ति अग्रवाल
दिल्ली, भारत

चाहे हुगली से चले
या मद्रास पोर्ट से
चाहे आए अवध से या बिहार से
मद्रास से या नागपुर से
हिन्दू थे या मुसलमान
ईसाई थे या भील
मकसद सबका एक था
पेट की आग बुझाना
काले पानी की लंबी, अजानी समुद्री यात्रा
पास में छोटी सी गठरी
जिसे नाम दिया 'जहाज़ी बंडल'
किसी में हनुमान चालीसा तो किसी में रामायण का गुटका
किसी में सदारंगा, बैताल पचीसी या कुरान की आयतें
किसी में फल सब्जी के बीज तो किसी में चाँदी के जेवर
किसी में एक आध फोटो काली सफ़ेद
जहाज की यात्रा में
लड़ते झगड़ते दुख सुख सहते
बने सब 'जहाज़ी भाई-बहिन'
भूल गए जात पाँत
बो दिये बीज कुली लेन में रहते हुए
उग आए आम, जामुन, तुलसी
आल्हा, बिरहा, रामायण से बन गई संस्कृति की पौध
और आ गया भारत वही पर
त्योहारों में, संस्कारों में
भाषा में, व्यवहारों में
साथ ही चला वो देश भी
जिसने रोटी दी, जिसके हम वासी हैं
और हमें गर्व हैं दोनों देशों पर।

प्रवासी भारतीय

निर्मला सिंह

लखनऊ, भारत

स्वागत है, ऐ प्रवासी भारतीयो आपका!
भारत माता के मन मंदिर में
बात सभी करते देश की
पर, काम नहीं कर पाते हैं।

भारत का दिल-दिमाग आप हैं
पुकार रहा है देश आपको
हाथ आप के द्वार प्रगति का
पतवार प्रगति की आप चलायें।

आप भारत माता के अर्जुन, अंगद
अर्जुन गये थे दिव्यास्त्र को
आप गये थे अर्थाटन को
तपस्या आपकी सफल हुई
विश्व में भारत मजबूत हुआ है।

सरकार खडी़ है पक्ष में आप के
आस जगी है देश वासियों को
बहनें कहतीं मत रो भैया
भाई आता उद्धार को।

स्वागत है भारतीयो आपका!
भारत के नव निर्माण में
यूँ तो ध्येय हमारा 'वसुधैव कुटुम्बकम' है;
पर देश हमारा प्राण है।

ज्ञान की किरणें विकीर्ण करें
भारत के चहुँमुखी विकास में
सरकार खड़ी है साथ आपके
परिवार को भी इंतजार है।

आखिर क्या नहीं है देश में आप के
बल, बुद्धि, जनसंख्या भारी
प्रबंधन की कमी है केवल
वो आप के पास है
पुकार रहा है देश आपको
ओ भारत के प्रवासियो !

लौट आओ तुम घर अपने
देश को तुम्हारा इंतजार है।

प्रवासी भारतीय

रीना काकरान
मोदीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

जो दूसरे देश में जा बसे,
होते वो प्रवासी भारतीय।
विदेश में रहकर भी,
रखते वो सम्बन्ध आत्मीय।।

तन से दूर होकर भी,
मन से वो दूर नहीं होते।
भारतीय सांस्कृतिक विरासत के,
विदेश में भी नूर वही होते।।

देश के उन्नत विकास में,
देते जो योगदान महान।
प्रवासी भारतीय दिवस को,
पाते प्रवासी भारतीय सम्मान।।

नौ जनवरी, सन् उन्नीस सौ पन्द्रह को,
महात्मा गॉंधी जी स्वदेश वापस आये।
अहिंसावादी देशभक्त के सम्मान में,
प्रवासी भारतीय दिवस के भाव समाये।।

नौ जनवरी, सन् दो हजार तीन को,
प्रथम प्रवासी भारतीय दिवस मनाया।
स्वर्गीय श्री लक्ष्मीमल सिंघवी ने,
इसकी संकल्पना को था सजाया।।
देश में त्रिदिवसीय कार्यक्रम होते आयोजित,
प्रवासियों के महान कार्य होते प्रायोजित।
देश के प्रधानमन्त्री के कर-कमलों से,
प्रवासी भारतीय सम्मान से वो होते विभूषित।।

प्रवासी भारतीय होने पर होता है गर्व,
भारतभूमि में मन रहा जैसे जन्म-पर्व।
जीवन को हमने कर दिया सार्थक,
प्रवास करना नहीं होता निरर्थक।।

देश की माटी से हम नहीं छूटे हैं,
अपने कर्तव्यों से हम नहीं रूठे हैं।
भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सम्भाले हैं,
देश के उन्नत विकास के सपने पाले हैं।।

भारत का रक्त रगों में समाया है,
हमने जो ठाना वो कर दिखाया है।
स्वदेश को हम कभी ना भूल पायेंगे,
देश की उन्नति के सदा दीप जलायेंगे।।

दिल में अपना देश लिये

रीना कुमारी
नई दिल्ली, भारत

मन में उम्मीदों का संसार लिये,
यादों के सन्दूकों में घर बार लिये।
देश प्रेम को अपने साथ लिये,
वो जाते तो हैं परदेश,
पर दिल में अपना देश लिये।।

स्वर्णिम जीवन का स्वप्न लिये,
अपनी मिट्टी की खुशबू संग संस्कार लिये।
संस्कृति के रंग, बड़ों का आशीष लिये,
वो जाते हैं परदेश दिल में अपना देश लिये।।

कुछ फर्ज अधूरे रह जाते हैं,
पर कर्ज चुकाने कुछ जाते हैं।
अपनों से दूर एक नई दुनिया बसाते हैं,
वो जाते हैं परदेश दिल में अपनों का एहसास लिये।।

परदेश की जमीं किस्मत को आजमाती है,
चकाचौंध में भी अपनों की याद नहीं धुँधलाती हैं।
सपनों की दुनिया मन तो भरमाती है, पर
यादें दिल से कब अलग हो पाती हैं।
सपनो में अपनों को साथ लिए
जाते हैं परदेस दिल में अपना देश लिए।

जाति, धर्म से दूर बस भारतीय बन जाते हैं,
कुछ रिश्ते वहाँ पर भी जुड़ जाते हैं।
नये भारत से सबको मिलवाते हैं,
परम्परा दोनों देशों की मिलकर निभाते हैं।
जाते हैं परदेश दिल में अपने देश लिये।।

तमन्ना हमेशा रहती है वापस सबसे मिल पाने की,
फिर जल्दी से लौट कहाँ वो पाते हैं।
पर उम्मीदें हमेशा पंख सजाती हैं, एक बार लौट आने की।।
हर वक्त रहते हैं वो एक संदेश लिये,
हम आये हैं परदेस दिल में अपना देश लिये।।

क्यों याद आती है आज भी वह माटी

रेखा भाटिया
शार्लिट, नॉर्थ कैरोलिना, यू.एस.ए.

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
क्यों नेह की बाँसुरी बज उठती आज भी
उसका नाम सुन दिल की धड़कनें बढ़ जाती
स्वप्नों में, यादों में छवि महकती न्यारी

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
बचपन की धुंधली यादों में उसकी गर्माहट
माँ के आँचल में उसकी मिट्टी की गंध
चलते कदमों को उसकी भूमिति याद है

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
हर लहराते झंडे में तीन रंग नज़र आते
सिर झुक जाता, हाथ दिल को थाम लेता
राष्ट्रधुन बजती कोई भी जन-गण मन गाता

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
पास्ता में सेव डाल पोहा समझ खाते
पुडिंग, केक की क्यों खीर से तुलना करते
पैनकेक से पराठा बेहतर सोच बेमन से खाते

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
सूनी सड़कों पर नज़र खोजती भाई-बहन
कारों के शीशों के पीछे से झाँकते नन्हें मन
देख वह स्वच्छंद आवारागर्दी याद आती

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
ग्रैंड केनियन की श्रृंखलाओं में शिवलिंग
झरनों के उफान में गंगा की पुलकित धारा
पैक प्रसाद में चिरौंजी का दाना क्यों ढूँढते हैं

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
चुनाव के फंडे, मिडिया के गोरख-धंधे
कोई अप्रिय वाकया हृदय में दंश बन चुभता
उसकी सलामती के लिए मन सदा चिंतन करता

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
उसकी छोटी-छोटी उपलब्धियाँ मान बढ़ाती
उसकी बड़ी उपलब्धियों से मन गुमान करता
खुद की उपलब्धियों का श्रेय उसी को जाता

क्यों याद आती है आज भी वह माटी
थैंक्स, वेलकम कहना जबान सीख गई
हाथ मिलाना, गले लगाना हम सीखे
हाथ जोड़कर आज भी क्यों सिहरन आती!

क्यों याद आती है आज भी वह माटी...

एक भारत यहाँ भी है बसा

रेखा भाटिया
शारलॉट, नॉर्थ कैरोलिना, यू.एस.ए.

देश छूटा, देशप्रेम तो नहीं
घर छूटा, माँ के प्रति प्यार तो नहीं
हुआ प्रवास विदेश में मनोरथ से
योग था पूर्वनिर्धारित प्रारब्ध से

जब हम छोड़ आए मातृभूमि
सपनों का क्या, फर्ज़ भी थे
सूनापन जीवन में ओढ़ आए थे
झूठी मुस्कराहट होंठों पर ओढ़े

माँ की आँखों की नमी देखकर
मन का आँगन भीग गया था
पिता की आँखों में आशंका
मन के खेत लगा हो गए बंजर

कुछ दोस्तों का हुजूम था
कुछ पड़ोसियों का जश्न था
जाम-पकवान महफिलों की शान
सभी से जल्दी हो गई रंगीन विदाई

होनहार, योग्य भारत का कुशल युवा
कार्यबल में शामिल हो बने योद्धा
न अर्जुन का धर्मसंकट, न राम का वनवास
अपने ही सपने बुलंदियों के, चुना प्रवासन

सावन के झूले, मेले में सर्कस
खेतों में भुने भुट्टे, रेढ़ी के गोलगप्पे
शेखचिल्ली से बड़े दोस्तों के गप्पे
दो रुपये की झकझक रिक्शावाले संग

गरबा की धूम, होली के रंग
तिरंगे के गीत, कान्हा के भजन
गणेश की झाँकी, राखी का बंधन
छोड़ आए पीछे दिवाली के धमाके

दादी-नानी का जादू-सा लाड़
दादाजी की झिड़की में प्यार
बहन का चुगलखोर स्नेह
बंदकर अटैची में साथ लाये परदेस

तरुणाई दुनिया में झीलें, झरने, समुंदर
गाते पंछी, ओस में भीगी खिली सुबहें
मीलों वन हरित कालीन से सजी वसुधा
असंख्य गिरी, लम्बी रातें छोटे दिन

दस फ़ीट के कमरे की ऊँची खिड़कियाँ
सूने आँगन, अज़नबी मुस्कराहटें
खून जमाती ठंड में तरसता मन
गर्म पकौड़े, चाय की चुस्कियों के लिए

सोचते सैनिकों के उन संघर्षों को
सान्निध्य से कोई हाथ थामे समेटे
ठंडी ब्रेड, बर्गर, पिज्ज़ा, पास्ता
गर्म रोटी, परिवार को मन ललचाता

परायी भाषा तब कहें कैसे मनव्यथा
बिन माँ हिंदी कैसी होगी प्रवास यात्रा
मानो ऊपर अंधकार, नीचे प्रलय धार
देवकी, यशोदा मान अपना लिया दोनों को

मुगलों से राज, अंग्रेजों के सितम
जीती प्रत्येक जंग बने रहे भारतीय
जिस पर गर्व हमें योग्य संतान धरा की
गणित, विज्ञान, अहिंसा, गीता का ज्ञान दिया

भारत माँ के पूत भारत के प्रवासी वीर
तन विदेश में हृदय का प्रवास देश में
अस्तित्व की जंग लड़ी जीते कौशल से
सभ्यता, संस्कृति की विरासत सहेजे

संघर्षों में भी लिख दी नई कहानियाँ
कई कुर्बानियाँ, देते रहे संस्कृति की सीख
संतानों से करवाया परिचय सगर्व कला का
पुरातन काल से आधुनिक भारत का

माँ-पिता आये देस से परदेस में घर
आँसू, आशंका बदली सुकून-उल्लास में
पुलकित हुए देख अनेकता में एकता
हर प्रान्त का वासी यहाँ है केवल भारतीय

रामायण, महाभारत, गीता की ज्ञान गंगा
तीज-त्योहारों की रौनक, नृत्य, संगीत
प्रगाढ़ रिश्ते, भाईचारा, शांति, प्रेम यहाँ पर
गर्व से कहते एक भारत यहाँ भी है बसा!

तिरंग फहरा लो

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

तारा है वो, सितारा है वो
झिलमिल आँखों में
चंदामामा सा प्यारा है वो
जागती आँखों का सपना
देश वो हमारा है
तस्वीर यह आँखों में सजा लो,
तिरंग फहरा लो।

दूर हैं तो क्या
मजबूर हैं तो क्या
मन में कुछ यादे हैं
वादे और इरादे हैं
इरादों को आजमा लो,
तिरंग फहरा लो।

मिट्टी वह पुरखों के खून सनी
मिट्टी वह जिससे यह देह बनी
मिट्टी वह अपनी पहचान है
मिट्टी वह पूजनीय
माथे से लगा लो
तिरंग फहरा लो।

सूखा कहीं, बाढ कहीं
भूखे कई, नंगे कई
लालच और गुर्बत के मारे हैं
अपने पर सारे हैं
अपनों को बचा लो
तिरंग फहरा लो।

तन मन धन सब अर्पण
यही तो पूर्वजों का तर्पण
माँ का आवाहन है
वादों का जल दो
कर्मों की आहुति
जीवन एक यज्ञ बना लो
तिरंग फहरा लो।

भारत प्यारा

अर्चना प्रकाश
लखनऊ, भारत

भारत प्यारा देश हमारा,
दुनिया के न्यारों से न्यारा।
दिल्ली दिल है भारत का,
केंद्र विदेशी आकर्षण का।
लाल किला कालिंदी तीर,
अभिज्ञान शाही जज्बे का।
सुख समृद्धि शांति भंडारा!
भारत प्यारा देश हमारा।

भव्य अतीत भविष्य वर्तमान,
देश की राजधानी ऊँची शान।
झूमर बेजोड़ राजस्थान का,
अति मोहक वेश बांधनी का।
शिखरों पर बने किले निराले,
शौर्य पिटारे हल्दी घाटी के।
राणा के रणका खेल ये सारा!
भारत प्यारा देश हमारा।

देती नमक भर भर अंजुरी,
माटी संदली गुजरात की।
कला अनोखी मीनाकारी की,
रणोत्सव मनभावन क्रीड़ाएँ।
सागर भव्य ललाम किनारा,
भारत प्यारा देश हमारा।

वाहे गुरु पंजाब खालसा,
वीरो की माटी करे पुकार।
भांगड़े की थाप शत्रु को मारा
प्यारा भारत देश हमारा।
मध्य प्रदेश भारत की धड़कन
धर्म कर्म तप त्याग विशेष।
झांसी रानी के शौर्य अशेष
विक्रमादित्य का न्याय पिटारा।
भारत प्यारा देश हमारा।

देवभूमि उत्तराखंड पावन,
कर्म धर्म आस्था अर्पण का।
वानप्रस्थ ऋषि कुंड अपार,
योग साधना परलोक सुधारा
भारत प्यारा देश हमारा!

गया बोध बिहार गया भी,
मृत्योपरांत भी जन्म सँवार।
गौतम तथागत का ज्ञान अपार
रिद्धि सिद्धि का तंत्र सारा,
भारत प्यारा देश हमारा।

सब कौशल बंगाल समाया,
बुद्धि विवेक भंडार ज्ञान का।
रामकृष्ण,विवेकानंद कीर्ति
बिगुल बजा आज़ादी का न्यारा।
भारत प्यारा देश हमारा,
दुनिया के न्यारों से न्यारा।

भारत महान

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

देश हमसे, हम देश से
रहेंगे ऋणी, हम देश के
देश गौरव हमारा
देश सर्वस्व हमारा
देश हमारी पहचान
देश हमारी शान
देश से हमारा विकास
देश ही हमारी आस
युगों-युगों तक नील गगन में
सिर उठा तिरंगा फहराये
हरीतिमा प्रतिबिम्बित धरा पर
खेतों में लहलहाये
केसरिया रंग गगन में
भोर की आस ले कर आये
गर्वोन्नत शुभ्र हिमालय
धरा-गगन का सेतु बनाये
नदी की बहती कल-कल धारा
समय चक्र सी बहती जाये
रहे समर्थ, स्वतंत्र देश
यही एक आकांक्षा अशेष
जय हिन्द जय भारत महान
तुमको मेरा शत शत प्रणाम।

नील गगन का तारा

अलका प्रमोद
लखनऊ, भारत

भारत अपना नील गगन का
एक चमकता तारा है
मार गिराया है दुश्मन को
जब उसने ललकारा है।

कन्याकुमारी से कश्मीर
एक डोर में बँधा हुआ
अनेकता में एकता मिले
प्रेम भाव में सधा हुआ।

धर्म जाति से परे एक हम
हिन्दुस्तान हमारा है
है नफरत की ना जगह यहाँ
प्रेम हमारा नारा है।

कभी न करना नज़र इधर हम
सहन नहीं कर पाएँगे
नहीं सोचना बँटवारे की
मिल कर तुम्हें हराएँगे।

घर में या हो बाहर दुश्मन
किसी को न हम छोड़ेंगे
भूल करी छूने की हमको
टुकड़ों में हम तोड़ेंगे।

डटे हुए सीमा पर प्रहरी
उनका मान बढ़ाएँगे
जय जवान जय किसान नारा
आज सभी मिल गाएँगे।

कर्म वतन का धर्म बनेगा
विकसित देश बनाएँगे
हाथ मिलेंगे शक्ति बढेगी
ऊँचा नाम कमाएँगे।

चाँद हो या फिर मंगल ग्रह हो
झंडा अपना फहरेगा
आगे बढ़ते जाएँगे हम
कदम न अपना ठहरेगा।

गौरव है यह भारत अपना
हो तिरंगा शान अपनी
करना हो कुर्बान अगर तो
दें खुशी से जान अपनी।

भारत अपना नील गगन का
एक चमकता तारा है
मार गिराया है दुश्मन को
जब उसने ललकारा है।

यूँ ही नहीं

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

यूँ ही नहीं कहलाता इसका, तेजस्वी ललाट विशाल है,
हिमालय मुकुट बन सजा हुआ, मेरी मातृभूमि के भाल है।
पगाश्रय पाता हिंद महासागर, नतमस्तक तरंग उत्ताल है,
उत्तरी गोलार्ध में स्थित, जम्बु महाद्वीप में गिरिशाल है।
देवतुल्य धरती पर शतदल, जो प्रफुल्लित उषाकाल है,
उपमहाद्वीप दक्षिण भाग, ज्यों तड़ाग मध्य मृणाल है।

कर्क रेखा को राह दिलाता, ठहरा है ऊपर विषुवत से,
उपनिषद्काल में आर्यवर्त, था वेद वाणी शाश्वत से।
पराक्रमी महा शूरवीर वे, शार्दूल क्रीड़ा अणुव्रत से,
भारत नाम से जग ने जाना, सम्राट भरत अनुद्वत से।
सिंधु घाटी से सिंध हुआ, सिंध से हिंद कहावत से,
इंडस वैली से बना इंडिया, जब दूर हुए सारस्वत से।

तीस प्रतिशत भू-टुकड़े पर, बसते हैं कई सारे देश,
क्षेत्रफल में सातवाँ नाम, तुलना में अधिक छ: विदेश।
ग्यारह लक्ष मीलवर्ग ज़मीं, भाँति-भाँति के रूप-वेश,
सातहज़ार की तटीय रेखा, नहीं किसी से तनिक क्लेश।
बांग्लाभू-लंक-भूटान-बर्मा, पाक-चीन-नेपाल को संदेश,
प्रेम को प्रेम, अरि को अरि, निर्देश मानो, चाहे उपदेश।

सर्वधर्म समभाव अनुगामी, वसुधैव कुटुम्ब आधार है,
संस्कृति, सभ्यता, मान्यता, भारत की अपरिहार है।
संविधान में बाईस भाषाएँ, सहस्रों बोलियाँ अवतार हैं।
संस्कृत इन सबकी माता, सब माने इसका उपकार हैं।
आदि महापुरुषों के उद्गार, दोहराता अब संसार है,
यूँ ही नहीं समस्त विश्व में, भारत की जयजयकार है।

भारत है क्या? है कौन?

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

भारत है महान
हम कहते हैं, सुनते हैं,
बड़ा अच्छा लगता है!
पर, भारत है क्या? है कौन?
क्या यह महज़ देश का नाम है?
या फिर, नाम है पर्वतों -
हिमालय, नीलगिरी, सतपुड़ा का?
या फिर, नदियों -
गंगा, गोमती, कावेरी, साबरमती का?
या फिर धर्मों -
हिन्दू, इस्लाम, यहूदी, जैन का?
या फिर, प्रांतों -
गुजरात, त्रिपुरा, केरल, बिहार का?
या फिर, वर्णों -
ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, शूद्र का?
आदि, आदि, आदि...

तो क्या है भारत?
कौन है भारत?
कौन है महान?
ये सब व अन्य भारत में हैं,
इन सब में भी भारत है।
भारत है - मैं, तुम, हम सब!

जैसे परमात्मा में हर आत्मा है,
जैसे हर आत्मा में परमात्मा है,
वैसे ही हम सब में भारत है,
और भारत में हैं हम सब।
तुलसी ने मानस में कहा है
'राम और सीता भिन्न नहीं हैं'
वैसे ही, भारत और हम अभिन्न हैं।

यही वह अद्वैत सोच है,
जो ऋषि-मुनियों की देन है।
भारत तब महान होगा,
जब हम महान होंगे।
हम महान होंगे कब,
जनहित कार्य करेंगे जब।
'अहं ब्रह्मास्मि' न भूलें हम
भारत हैं हम, भारत हैं हम।

तो आओ मित्रो!
आज हम प्रतिज्ञा करें,
आज से महान कार्य करें,
स्वयं हों महान, और
देश को महान करें।

बहुत खूबसूरत हमारा वतन

कामिनी व्यास रावल

उदयपुर, राजस्थान, भारत

बहुत खूबसूरत हमारा वतन
हमें जान से भी है प्यारा वतन

हमें याद रखनी शहादत सभी
लहू दे के सबने सँवारा वतन

नज़र कोई बद डाल सकता नहीं
है आँखों का सबकी ये तारा वतन

सभी मज़हबों को यहाँ चैन है
जगत भर में है अपना न्यारा वतन

है ख़्वाहिश हमारी यही इक ख़ुदा
मिले यह ही हमको दुबारा वतन

करूँ शीश अर्पण मैं अपना सदा
करे जब भी मुझको इशारा वतन

खिलें फूल कलियाँ ही चारों तरफ़
हो तेरा हसीं हर नज़ारा वतन

धरा राम की है कहे 'कामिनी'
बने राम मय ही ये सारा वतन।

मेरा भारत वर्ष

केदार शर्मा 'निरीह'
टोंक, राजस्थान, भारत

मेरे भारत का फिर से अब, खोया गौरव लौटाना है,
चेतो सपनों के ओ राही! मौसम अब बेगाना है।
अलसाए से इन सिंहो को, अब झकझोर जगाना है,
रचना तुम्हे रचनी है जहाँ, मंजिल वहीं बनाना है।
चाणक्य सा बोध जगाकर, सद्विवेक जगाना है,
अपने संकल्पों के बल पर, अनुशासन मनवाना है।

तन से कुछ कमजोर समझकर, अबला जिसने माना है,
बनकर काली टूट पडो माँ, असुरों को गरियाना है।
दूषित जल दूषित है शस्या, दूषित है वायु-आकाश,
चित्त में सद्बुद्धि की धारा, इनमें भरना नव सुवास।
कोरोना ने बदली दुनिया, पहन मौत का बाना है,
पहले से सक्षम होकर के, सब का हाथ बँटाना है।

आत्मज्ञान की अलख जगाकर धर्मध्वजा फहराओ ना,
अष्टावक्र मुनिन-से योगी, भारत भू पर आओ ना।
गुरु नानक, महावीर बुद्ध, ने अज्ञान मिटाया था,
लात मारकर सुख-सुविधा को, तप का पथ अपनाया था।
मानव में देवत्व जगाकर, भू को स्वर्ग बनाया था,
अपने दीपक खुद बन जाओ, यह विश्वास जगाया था।

ऐसे मुनिन तपस्वी दधीचि, दान अस्थियाँ कर डालीं,
वज्र बनाकर टूट पड़े सुर, विपदाएँ सब हर डालीं।
राजा शिवि को याद करो तुम, शरण कबूतर आया था,
बचा बाज के पंखो से तब खुद का मांस खिलाया था।
याद करो तुम रंतिदेव को, कई दिनों के बिनखाए,
अपना हिस्सा खिला दिया जब, अतिथिगणन सम्मुख आए।

याद करो गोरक्ष नाथ को, योग साधना सिखलाई,
गुरु बनकर के दिया सहारा, जन-जन ने थी अपनाई।
भूल गए क्या माँ लल्ली को, जो कश्मीरी मीरां थी,
गली-गली में गीत गूँजते, रही दिगम्बर धीरां थी।
याद करो योगी भृतहरि को, राज-पाट सब छोड़ दिया,
योग-साधना अपना करके, जीवन का रुख मोड़ दिया।

याद करो धारानगरी में, राजा विक्रम जो आया,
सर्व हुणों को हरा भगाया, नवसंवत्सर चलवाया।
याद करो हाड़ी रानी को, अपने सिर को काटा था,
युद्धक्षेत्र में योद्धा पति के, मोह राग को छाँटा था।
याद करो ओशो को जिनने, ध्यान की अलख जगाई थी,
उपनिषदों के गूढ़ तत्व में, रोचकता भर आई थी।

याद करो तुलसी बाबा को, आस्तिकता का भाव भरा,
रामचरित मानस ने घर-घर राम नाम को किया हरा।
पंडित श्रीराम शर्मा ने, घर-घर अलख जगाई है,
विचार-क्रान्ति के माध्यम से, जन में जागृति आई है।
याद करो अरविंद घोष को, आत्मज्ञान के साधक थे,
तप से विघ्न हटाए जो भी, आज़ादी में बाधक थे।

जेल कोठरी में रहकर भी, ऐसी ऊर्जा फैलाई,
आज़ादी के आंदोलन में, नई चेतना भर आई।
बिस्मिल, आजाद, भगतसिंह, आज़ादी के दीवाने,
सुखदेव सहित कई वीरों ने, इसके खातिर दी जानें।
याद करो तुम राष्ट्रपिता को, जिनको बापू कहते हैं,
जिनके चिंतन-दर्शन के नव, स्वर्णिम सोते बहते हैं।
धैर्य करो अब धारण मन में, नई इमारत बनने तक,
तोड़ खंडहर जर्जर सारे, नव झोंकों के छनने तक।
अमृतमयी महाअवसर पर, इन सब को हम याद करें,
'निरीह' बनी भारत भूमि को, देवों से आबाद करें।

मेरा प्यारा देश

कैलाश गिरि गोस्वामी
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

अवसर पाकर रावण आते, धारण कर छद्मवेश।
आततायियों से जूझ रहा है, मेरा प्यारा देश।।

भगत सिंह ने चूमा हँसकर, फाँसी का वह फंदा।
महात्मा गाँधी ने भी छोड़ा, वकालत का धंधा।।
गौतम बुद्ध का घर-घर पहुँचे, शांति भरा संदेश।
आततायियों से जूझ रहा है, मेरा प्यारा देश।।

राष्ट्र हित में तजना होगा, सबको गोरख-धंधा।
फिर से पैदा हो भारत में, सुभाष जैसा बंदा।।
विवेकानंद की वाणी पहुँचे, देश और विदेश।
आततायियों से जूझ रहा है, मेरा प्यारा देश।।

दधीचि और कर्ण सरीखा, पैदा हो कोई दानी।
या महावीर-सा जगत में, हो जाए कोई ध्यानी।।
मन-मन्दिर को पावन कर, मिटाओ सारे क्लेश।
आततायियों से जूझ रहा है, मेरा प्यारा देश।।

कदमों में नौजवानों के, अंगद जैसा खम हो।
और शरीर में बाँकुरों के, बजरंग जैसा दम हो।।
एक बार फिर आ जाओ, दया-सिंधु अवधेश।
आततायियों से जूझ रहा है, मेर प्यारा देश।।

झाँसी में फिर रानी जन्मे, कोई लक्ष्मी-सी मर्दानी।
या मेवाड़ धरा पर उतरे, प्रताप स्वाभिमानी।।
विघ्नहर्ता वंदन करूँ, जय-जय श्री विघ्नेश।
आततायियों से जूझ रहा है, मेरा प्यारा देश।।

मेरा भारतवर्ष

जय कृष्णा मिश्रा 'चैतन्य'
दुबई, यू.ए.ई.

कीर्ति यश की महागाथा, माँ भारती अब नित्य है,
विश्व को दर्पण दिखाए, भारतीय साहित्य है।

दण्डी का हो दशकुमारम, मेघदूतम कालिदास का,
विनय पत्रिका, कवितावली व रामयणम तुलसीदास का,
हर्ष की प्रियदर्शिका मीरा के पद अनमोल हैं,
कबीरवाणी अतिसुन्दर जीवन का मेल-जोल है,
अति पावन, अति सुंदर अद्भुत धरा के कृत्य हैं,
विश्व को दर्पण दिखाए, भारतीय साहित्य है।

जयदेव रचित गीत-गोविन्द, सर्ववर्मा कातंत्र,
कर्पूरमंजरी राजशेखर, विष्णु रचित वो पंचतंत्र,
नागसेन मिलिंदपन्हों, अश्वघोष सौंदरानंद,
अमरसिंह का अमरकोश, रसभरा और अति आनंद,
स्वर्ण अक्षर में लिखी हर एक रचना उत्कृष्ट है,
विश्व को दर्पण दिखाए, भारतीय साहित्य है।

हर्षवर्धन की रत्नावली, नागानंद प्रियदर्शिका,
चाणक्य का अर्थशास्त्र, शूद्रक की मृच्छकटिका,
वात्स्यायन कामसूत्र, अमीर खुसरो की आशिका,
प्रेम और सौंदर्य जीवन का अति सुंदर रासिका,
कण कण में बसता बौद्ध, यहाँ लेखनी जाग्रत है,
विश्व को दर्पण दिखाए, भारतीय साहित्य है।

सादर नमन है आपको, वंदन सदा ही आपका,
जय-जय माँ भारती, अभिनन्दन सदा ही आपका,
अभिमान है और मान है, अपना उन्नत सांस्कृत्य है
विश्व को दर्पण दिखाए, भारतीय साहित्य है।

एक ऐसी भूमि

डी. पी. सिनालि नदीपमा पतिरण
केगाले, श्रीलंका

पृथ्वी पर बसी है
एक ऐसी सलोनी भूमि,
जहाँ लहलहाते हैं,
हरियाले तरुवर धीरे-धीरे।
जहाँ चहचहाते हैं,
आज़ाद के परिंदे उल्लास से।

पृथ्वी पर बसी है
एक ऐसी समृद्धशाली भूमि,
जहाँ उठकर झूमते हैं, अनगिनत पौधे।
जहाँ मुकुट बनकर हँसता है,
'हिमालय' उस भूमि में।

पृथ्वी पर बसी है
एक ऐसी मनमोहक भूमि,
जहाँ बिखर रही हैं,
हल्के सूरज की सच्ची किरणें।
जहाँ बहती रहती हैं,
सुधा की धारा यमुना, गोदावरी में।

पृथ्वी पर बसी है
एक ऐसी निराली भूमि,
जहाँ सुमन खिलते हैं,
एक ही तिरंगे के तले।
जहाँ उफ़नती रहती हैं,
एकता के समंदर की लहरें।

पृथ्वी पर बसी है
एक ऐसी अनोखी भूमि,
जहाँ चमकते रहते हैं
संगमरमर के टुकड़े 'ताजमहल' नाम से।
जहाँ मुस्कान फैलती है,
हवा पर बैठकर वसंत ऋतु में।

पृथ्वी पर बसी है
एक ऐसी खूबसूरत भूमि,
जहाँ टपक पड़ती है,
सुकून की बूँदें शरद के मौसम में।
जहाँ बिछायी गयी हैं,
पीली चादरें सरसों के खेतों में।

पृथ्वी पर बसी है
एक ऐसी सुहावन भूमि,
जहाँ मंद पवन बहता है,
टकराकर नीलगिरि के वृक्षों से।
जहाँ सबके मन ठंड हो जाती है,
कावेरी, नर्मदा के उत्तम अमृत जल से।

पृथ्वी पर बसी है
एक ऐसी देखने लायक भूमि,
जहाँ छिपाकर रखी गयी हैं,
प्रकृति की सैकड़ों देनें।
वहाँ से सुनाई देता है,
एक ही शब्द, वह 'हिंदुस्तान' है।

महिमा का गुणगान

दीप्ति मिश्रा
वापी, गुजरात, भारत

आज़ादी के वर्ष पचहत्तर, हैं अपना अभिमान।
अखिल विश्व कर रहा देश की, महिमा का गुणगान।

नव गति, नव लय, नये ओज से, बढ़े प्रगति के पथ पर।
ज्ञान और विज्ञान शक्ति ले, चढ़े सुयश के रथ पर।
संघर्षों में सतत साधना, के अनुपम अभियान।

वैज्ञानिक शुचि सोच हमारी, गढ़े नवल प्रतिमान।
कर डाले तय कितने हमने, उन्नति के सोपान।
नव विकास की नई धारणा, नई सोच द्युतिमान।

अभिनव साधन, आना-जाना, सुलभ समंदर में।
पैदल चलने वाले उड़ते, फिरते नीले अंबर में।
अंतरिक्ष के रहस्य खोजते, द्रुतगामी अति यान।

मन विनोद के साधन हों या, क्षेत्र चिकित्सा हो।
कृषि उत्पादन, बिजली, जल, संचार व्यवस्था हो।
करता है विज्ञान अनूठे, प्रतिपल अनुसंधान।

कम्प्यूटर ने घर-घर ला दी है, अपूर्व-सी क्रांति।
करें अगर उपयोग विवेकी, नहीं रहे कुछ भ्रांति।
पल में होता संदेशों का, है आदान-प्रदान।

प्रौद्योगिकी उन्नत तकनीकें, जीवन सरल हुए।
क्षमता का संवाहक अपनी, पग-पग सफल हुए।
नवल दृष्टि नव जागृति दे दी, है विज्ञान महान।

प्रबल शक्ति विज्ञान हमारी, शुचित साधना है।
नहीं बने अभिशाप कभी भी, यही कामना है।
मर्यादित उपभोग रहे तो, है सदैव वरदान।

मैं भारत हूँ

नीना छिब्बर
जोधपुर, राजस्थान, भारत

मैं भारत हूँ
हर काल में नई गाथा लिखता
देखे मैंने कई मंज़र खंजर वाले
कौरव-पांडवों की शौर्य गाथाएँ
मामा शकुनि की कुटिल चालें
सखा कृष्ण की हर नीति का मैं गवाह
श्रीराम की वचनबद्धता और धर्मपालन
धर्मयुद्ध, भातृ प्रेम और त्याग की कथा
कर्ण की दानवीरता और निष्ठा को जानूँ
विश्वकर्मा का कौशल है धरा पर इंद्रप्रस्थ
यमुना की लहरों का शांत और उग्र रूप
अनगिनत कहानियाँ, गाथाएँ, सीने में रखे
कश्मीर की रानी दिद्दा दिव्यांग पर हिम्मती महान
मैं भारत हूँ।

देखी मैंने मुगल, तुर्क ओर खिलजी की क्रूर बादशाहत
सीने में दफन मासूम, निर्दोष लोगों की चीखें
सहे मैंने अँग्रेजों के भी लाखों दिल दहलाने वाले फरमान
सन 1857 से सही मैंने गोरे सैनिकों की धमक
कटना, मरना, मारना, दंगे, आगजनी, फसाद
मेरा हर चौक, मोहल्ला इमारत है जीवित इतिहास
आज़ादी के दीवानों की दीवानगी मैंने देखी
देश हित में नौनिहालों की अनोखी कुर्बानी देखी
भारत की वीरांगनाओं का ज्वलंत इतिहास
सीने में दबाए कब से खड़ा हूँ मैं।
याद आ रही ईसवी सन् 385 की प्रभावती गुप्त
से सन् 1857 की छबीली झाँसी की रानी
अखंड भारत का शीष मुकुट रहा हिमालय ..

कश्मीर की रानी द्दिदा दिव्यांग पर हिम्मती महान
याद आती हैं रूद्रमा देवी, दुर्गावती, रज़िया सुल्तान
अहिल्याबाई होल्कर और मर्दानी झाँसी की रानी
तलवार की धनी और स्वतंत्रता की धधकती ज्वाला
मैं भारत हूँ।

आँखों में आँसू, मन में श्रद्धा आती अपार
जब याद आता भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु का
हँस कर सूली चढ़ जाना।
बाल, पाल, लाल का स्वराज्य सिद्धांत
गाँधी की अहिंसा, नेहरू का विश्व शांति संदेश
शास्त्री की निष्ठा, इंदिरा के शासन का वरदान
अटल का भारतीयता और भाषा प्रेम अभिमान
इक्कीसवीं सदी में दौड़ता, भूतकाल को सराहता
गंगा-यमुनी तहजीब वाला यह हिंदुस्तान।
ज्ञान-विज्ञान तकनीक बनी तिरंगे की शान
कला, संस्कृति, साहित्य की त्रिवेणी सदा बहती
आन बान शान संग विनम्रता सिखलाता
पर्व, उत्सव और त्योंहारों का देश,
रंगों और रागों का देश
हर ऋतु में नव रूप धरती धरा और आसमाँ का देश
गीत, भजन, गुरूबाणी, और अजानों का देश
साझे सुख दुख, साझी लोक संस्कृतियों का देश
एकता में अनेकता, योग और आयुर्वेद का देश
आत्मा में गाँव सजाता, कर्म में प्रगति संदेश
मैं भारत हूँ।

महान अजनाभवर्ष

नीलम झा
हैदराबाद, भारत

महान अजनाभवर्ष की संतान हम,
आइए, करें इसका गुणगान हम।
हैं इसके विविध नाम।

वो अजनाभवर्ष, जो जग को करता आलोकित,
वो आर्यावर्त, जो वटवृक्ष बन देता शीतल छाँव विस्तृत,
वो भारतवर्ष, जो करता जगत को शोभित,
वो हिन्दुस्तान, जो सबको करता विस्मित,
वो इंडिया, जिसमें है समन्वयता समाहित,
है वो मेरा अजनाभवर्ष महान,
है वो हमारा अजनाभवर्ष महान।

बहुआयामी प्राचीनतम संस्कृति हमारी,
चहुँ ओर मंजुल छटा बिखेरती प्रकृति प्यारी,
'अमरता', विशेषता इसकी है न्यारी,
क्रूर थपेड़ों को खाकर भी बलखाती-इठलाती,
अनेकत्व में एकत्व के विविध रूप दर्शाती।
है वो मेरा अजनाभवर्ष महान,
है वो हमारा अजनाभवर्ष महान।

आयुर्वेद के प्रणेता हम, शून्य के आविष्कारक हम,
'भारत काव्य पीयूष' में पिरोए साहित्य के साधक हम,
अजनाभवर्ष के आराधक हम।
आइए! करें, अब अपनी दिशा और दशा पर विचार हम,
सामाजिक विषमता, कालाबाजारी-बेरोजगारी से परेशान हम,
मेरा अजनाभवर्ष महान,
हमारा अजनाभवर्ष महान।

जनसंख्या वृद्धि ने किया अर्थव्यवस्था को लहूलुहान,
भाग्यवादिता, रूढ़िवादिता देख होती चुभन,
आकंठ डूबे इस दलदल में हो रही है आज बड़ी घुटन,
क्या हो सकता है इसका निदान?
क्या दूर करने का है इसे, कोई विधान?
मेरा अजनाभवर्ष महान,
हमारा अजनाभवर्ष महान।

हमारी जीवन्तता पर जब कोई प्रश्नचिह्न लगाता,
हो जाता छलनी-छलनी हृदय हमारा,
महान अजनाभवर्ष कहने से कतराता मन,
देख कुकृत्यों-कुविचारों को शर्माता मन,
अजेय-अमर अजनाभवर्ष न हो कलंकित-व्यथित,
इस बात का तो हमें ही रखना है ध्यान सुजान।

आइये, परस्परावलम्ब से करें इनका उन्मूलन,
आइये, परस्परावलम्ब से करें इनका उन्मूलन।
मेरा अजनाभवर्ष महान,
हमारा अजनाभवर्ष महान।

अखण्ड भारत दर्शन

पिंगलेश कचौले
इन्दौर, मध्य प्रदेश, भारत

स्वस्ति श्रीमन्नारायण के
प्रणत-अशेष-पराक्रम से।
उत्पत्ति स्थिति-लय कारण
जगत् निर्मितं विक्रम से।

श्रीमदनंत-वीर्य नारायण की
असीमित-शक्ति जलौघ-मध्य से।
अनेक-कोटि ब्रम्हांड नायक
व्यक्ताव्यक्त आवृत पंचभूत से।

ब्रह्मांड-खंड आधार-शक्ति
वराह-दंष्ट्राग्र-विराजत रहते हैं।
कूर्मानंत-वासुकि-तक्षकादि
अष्ट महानाग धारण करते हैं।

ऐरावत-पुंडरीक-वामन और
पुष्पदंत दिग्गज पर प्रतिष्ठित।
अतल-वितल-तल सुतल रसातल
पाताल लोक पर हैं परिलक्षित।

भूर्भुवर्स्वर्महर्लोक जन-तप
सप्तलोक के अधोभाग में।
सहस्त्र-फणा-मणि मंडल-मंडित
चक्रवाल-वलय-नग-मध्यभाग में।

अमरावती अशोकवती जहाँ
भोग-सिद्ध गांधर्ववती है।
अवंतिका काँची अल्का व
यशोवती सी पुण्यपुरी है।

सुरा-सर्पि-दधि लवण इक्षु सह
क्षीर उदक अर्णव से परिवृत।
जम्बू-प्लक्ष-कुश-क्रौंच शाल्मलि
पुष्कर शाक द्वीप से आवृत।

इन्द्र-कांस्य और ताम्र गभस्ति
चारण-नाग-सौम्य गंधर्व।
नवखण्डों से मण्डित भारत
देव मनुज सब करते गर्व।

सुवर्ण कर्णिका महागिरि सम
सरोरुहोपेत आकार विस्तीर्ण।
पंचाशत् कोटियोजन भूमंडल
गर्वित भारत अखण्ड उत्कीर्ण।

अयोध्या-मथुरा और माया
काशी कांची अवंतिका है।
द्वारावती पावन व प्रतिष्ठित
सप्तपुरी मोक्षदायिका है।

स्वर्ण-सुमेरु-निषध-त्रिकूट
रजतकूट हिम चित्रकूट है।
विंध्याचल महापर्वत श्रेणी
पुरा प्रतिष्ठित आम्रकूट है।

हरिवर्ष किम्पुरुष है दक्षिण
नौ हजार योजन-तक विस्तृत।
मलय-सह्य-विंध्याचल उत्तर
प्रहरी सजग रक्षा में अविरत।

स्वर्णप्रस्थ और चण्डप्रस्थ नित
सूक्तावंतक चान्द्र-महामणक।
पाञ्चजन्य सिंहल-लंका सह
नवखंडों से मण्डित रमणक।

गंगा-क्षिप्रा-यमुना कृष्णा
गोदावरी नर्मदा सुपावित।
पयोष्णी-सरयू-कावेरी
पुण्यानेक हैं नदी विराजित।

दण्डक-विंध्यक-चंपक बदरिक
महीलांगु इक्षुक और कदलिक।
देवदारु नैमिष अरण्य दश
भारत-वर्ष सकल-युत दैविक।

हे देवभूमि! हे वेदभूमि!
हे मातृभूमि! शत शत वंदन है।
धरा सकल है कुटुम्ब हमारा
प्राणिमात्र का अभिनंदन है।

अखण्ड भारत के हम वासी

मधु चतुर्वेदी
लखनऊ, भारत

हम अखण्ड भारत के वासी थे
अखण्ड भारत के लिये लड़ते-लड़ते
भू-खण्डों में कब बँट गए?

जाति-धर्म-भूगोल के खण्ड बना लिए
भाषा के नाम पर बँटवारे कर लिए
वो असल मुद्दे थे भी या नहीं
राजनैतिक मुनाफ़े के लिए
किसी के भी साथ हो लिये
और उन्हीं के नाम पर
अब हर दिन यूँ लड़ रहे।
एक ही खण्ड में रहने वाले
मुंड-मुंड खण्डित हो रहे।
जब बात अखण्ड भारत की थी
तो हम खण्डों में क्यूँ बँट गए?

अगर विकास अखण्ड भारत का था
तो खण्डित भारत के नारे क्यूँ गूँज रहे?
कैसी विडम्बना है अपनी
खण्डित भारत में अखण्ड भारत को ढूँढ़ रहे।
प्रकृति ने अखंड धरती दी
एक रोशनी, एक ही हवा
वही धूप-पानी सबको दिया
और हम उसी धरती-पानी के लिए
हर रोज खण्डित क्यों हो रहे?
जब बात अखण्ड भारत की थी
तो हम खण्डों में क्यूँ बँट गए?

‘लड़ना’ ही यदि कर्म है
उन ताकतों से क्यों न लड़ो
जो देश खंडित कर रहीं!
‘तोड़ना’ ही यदि कर्म है
तो अखंड भारत को तोड़ने वाली,
हर सोच को क्यों न तोड़ दो!
हम कैसे ये भूल कभी सकते
अंग्रेजों से जिनको भय नहीं था,
मौत से जिनको खौफ नहीं था,
अंग्रेज जिन्हें न तोड़ सके
उनके विचार न मोड़ सके
खण्ड-खण्ड जोड़कर वे
अखण्ड भारत हमें सौंप गए।
जब बात अखण्ड भारत की थी
तो हम खण्डों में क्यूँ बँट गए?

एक कर्ज बस अब बाकी है
आज़ादी हमने भोगी है, कीमत नहीं चुकाई है
माँ के बूँद-बूँद रक्त की करनी अब भरपाई है
एक फर्ज बस बाकी है
अखण्ड हम भारतीय, अखण्ड ही रहेंगे
इस अखण्डता के लिए सर्वस्व अर्पण कर देंगे।

सर्वश्रेष्ठ भारत

ममता उपाध्याय
वाराणसी, भारत

देश
महान
शक्तिमान
कण-कण में
शिव का निवास
मिट्टी में मिले सोना
पूजनीय हर कोना
राम-कृष्ण का आलय है
पूजित है नारी-शक्ति सीता
पावन गंगा, गौरी व गीता
वेद ऋचाओं का है ज्ञाता
नाम जगत में पाता
जिसकी ऊँची शान
वो देश महान
भारत मेरा
मेरी आन
नमन
उसे

केवल जश्न नहीं आज़ादी

मीरा सिंह 'मीरा'
बक्सर, बिहार, भारत

केवल जश्न नहीं आज़ादी यह तो जिम्मेदारी है,
इस पर कुर्बान होने की आज हम सब की बारी है।

विजयी विश्व तिरंगा झंडा लहर-लहर लहराता है
गाँधी-सुभाष, भगत के सपने याद दिलाता है।
जाति-मजहब की दीवारें ढाने में समझदारी है
केवल जश्न नहीं आज़ादी, यह तो जिम्मेदारी है।

मयस्सर हो सबको रोटी, सबके सिर पर इक छत
सुख-समृद्धि आज़ादी सबको मिले बराबर हक।
माटी का कर्ज चुकाने की आई सबकी बारी है
केवल जश्न नहीं आज़ादी यह तो जिम्मेदारी है।

निर्धन का होता शोषण, खुलकर होती हकमारी है
युवाओं में घोर निराशा मुँह फाड़ खड़ी बेकारी है।
सत्ता की खुमारी में भूले क्यों वादों की पिटारी है
केवल जश्न नहीं आज़ादी यह तो जिम्मेदारी है।

मुश्किल से मिली आज़ादी की करनी रखवारी है
कर्म सभी वे करने होंगे जो सबके हितकारी हैं।
गरीबी, भुखमरी, बेकारी से जंग अभी भी जारी है
केवल जश्न नहीं आज़ादी, यह तो जिम्मेदारी है।

सृष्टि आरम्भ से

मोती प्रसाद साहू
अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड, भारत

सृष्टि आरम्भ से जिसकी महिमा है मण्डित।
उसी भूमि का नाम 'भारत' है वर्णित।।
रहा विश्व का यह गुरु है पुरातन।
रही धर्म-संस्कृति सदा ही सनातन।।

ज्ञान-विज्ञान का यह पुरोधा सदा से।
'सोने की चिड़िया' कहे जग जुबाँ से।।
विश्व के पास था जब नहीं कोई साधन।
नहीं कोई पढ़ना नहीं कोई पाठन।।

तब से यहाँ वेद का ज्ञान भारी।
गुंजित सदा से है ऋषियों की वाणी।।
गणतंत्र भारत का पुष्पित सुगंधित।
जनता-जनार्दन से यह है सुपोषित।।

राणा शिवा हों या कि लक्ष्मीबाई ।
मंगल पाण्डे हों कि माँ पन्ना धाय।।
शिक्षा की ज्योति जलाकर के लाई।।
सावित्री फुले थीं वे मेरे भाई।।

वीरों प्रवर चन्द्रशेखर अटल थे।
भगतसिंह जैसे केहरि प्रबल थे।।
बाबू सुभाषा खुदीराम जैसे।
सभी नाम लाकर लिखूँ मैं भी कैसे।।

एकीकरण कर दिखाया करिश्मा।
सरदार बल्लभ पुरुष लौह उपमा।।
नमन राष्ट्र पुरुषों को मेरा है शत-शत
जीवन रहा जिनका निर्माण में रत।।

पृथ्वी केंद्र में जंबू द्वीप

रश्मि वार्ष्णेय
मुंबई, भारत

पृथ्वी केंद्र में जंबू द्वीप,
जंबू-केंद्र में भारतवर्ष।
भारत क्षेत्र के केंद्र में,
मिलता सुख-समृद्धि-हर्ष।।
पृथ्वी केंद्र ...

प्रियव्रत ने बाँटा भूलोक,
सात पुत्रों में सप्तद्वीप।
आग्नीध्र ने पाया जंबू,
भरत बढ़ाए वंश की रीत।।
पृथ्वी केंद्र ...

मेरु पर्वत के साये तले,
भारत सुख से पले-बढ़े।
दो पत्ते पीपल के हिला,
मुदित खरगोश संग खेले।।
पृथ्वी केंद्र ...

जंबू वृक्ष की फल-रस धार,
बहे द्वीप में बन जंबू नदी।
ललचे चखने को लवण सागर,
साक्षी इसकी अनेक शती।।
पृथ्वी केंद्र ...

ज्ञान-विज्ञान का केंद्र भारत,
तप-हवन की भारत भूमि।
जग के कल्याण को समर्पित,
सबको अपनाने वाली भूमि।।
पृथ्वी केंद्र ...

भारत का अमृत महोत्सव

रश्मि वार्ष्णेय
मुंबई, भारत

भारत का अमृत घट छलके।
हर्षित हो सब उत्सव मनाएँ।।
भारत का अमृत...

भारत करे संवाद विश्व से।
दुनिया सुने मुग्ध भाव से।।
भारत का अमृत...

एशिया हो या यूरोप वाले।
भारत बात करता सभी से।।
भारत का अमृत...

वैश्विक समाज भारत गढ़े।
सबके सुख-दुख बाँटा करे।।
भारत का अमृत...

हाथ मिला के एक दूजे से।
आगे बढ़ता जाए दुनिया में।।
भारत का अमृत...

सुरक्षा घेरा बनाए विश्व में।
कोरोना टीका लगाए बाँह में।।
भारत का अमृत...

भारत का तिरंगा सुरक्षा दे।
बाहर लाए युद्ध की भूमि से।।
भारत का अमृत...

सामरिक शक्ति सशक्त करे।
जल-थल-नभ तक प्रसार करे।।
भारत का अमृत...

आर्थिक शक्ति बन के उभरे।
कर्जमुक्त भारत समृद्धि चूमे।।
भारत का अमृत...

भारत निर्मित की माँग दिखे।
विश्व में भारत की साख बढ़े।।
भारत का अमृत...

भला करे योग-अध्यात्म से।
ज्ञान-विज्ञान भी साझा करे।।
भारत का अमृत...

विश्व राजनीति को दिशा दे।
परिपक्व भारत नेतृत्व करे।।
भारत का अमृत...

सोने के सिंहासन बैठी

रानी श्रीवास्तव

पटना, भारत

छप-छप करते ताल-तलैया
कल-कल बहती नदियाँ।
डगर-डगर कर चलती देखो
कागज की दो नैया।।

रिमझिम-रिमझिम वर्षा बरसे
चमक रहे हैं पत्ते।
खिड़की पर बैठे गौरेया
नैन मटक्का करते।।

मेघदूत का ले संदेशा
आई कोयल रानी।
याद पिया की भरकर
मीठी-मीठी तान गानी।।

हरी-हरीली चूनर ओढ़े
झूम रही हरियाली।
हँसती बरखा रानी
बैठी बादल की डोली।।

मन हर्षाए तन हर्षाए
छम-छम बरसे पानी।
सोने के सिंहासन बैठी
धान की बाली महारानी।।

बहुरंगे दिन मेरे तुम्हारे
निखरेगी तस्वीर।
बरखा की बूँदें बदलेंगी
हम सबकी तकदीर।।

भारत प्यारा देश महान

रीना काकरान
मोदीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत प्यारा देश महान है,
सबसे निराली देश की शान है।
हम सबकी देश ये जान है,
देश पर सब कुछ कुर्बान है।।

गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम है,
जल की धारा सुनाती सरगम है।
देश की माटी सौंधी-सौंधी पावन है,
प्राकृतिक छटा बड़ी मन भावन है।।

हवा देश की साँसों में समायी है,
खुशबू अमन की जग में महकायी है।
भारतीय संस्कृति जग में छायी है,
नमस्ते शब्द ने जग में धूम मचायी है।।

वीरों का भारत बगीचा है,
अपने खून से इसको सींचा है।
वीरांगनाओं की अमिट कहानी है,
शक्ति रूप की नारी निशानी हैं।।

एकता का परचम लहराता है,
भेदभाव का नहीं कोई नाता है।
सद्भाव, मैत्री, भाईचारा अपार है,
सारा भारत एक परिवार है।।

भारत माँ की हम सन्तान है,
तिरंगा झण्डा हमारी पहचान है।
मातृभाषा हिन्दी महान है,
हिन्दी है हम वतन हिन्दुस्तान है।।

स्वर्ग सा सुंदर देश हमारा

विजय गिरि गोस्वामी ‘काव्यदीप’
बाँसवाड़ा, राजस्थान, भारत

स्वर्ग सा सुंदर देश हमारा।
रूप अलौकिक इस धरती पर, देखे जग ये सारा।
स्वर्ग सा सुंदर देश हमारा।।

अंबर थाल उषा ले ‘कर’ में, करती कुमकुम टीका।
करे आरती रश्मि पुंज ले, ज्योतित दीपक घी का।
देवासुर गंधर्व प्रफुल्लित, नभ से ज्योंहि निहारा।।

मलयज मंद समीर सुवासित, विटप शिखाएँ नाचें।
पुष्पित उपवन अलिदल गुनगुन, वेद ऋचाएँ बाँचें।
आम्रकुंज कोकिल-वनिताएँ, करतीं गायन प्यारा।।

गिरि पठार मैदान मरुस्थल, तड़ाग नदियाँ झरने।
षट ऋतुओं के नवल वसन नित, देश हमारा पहने।
दिव्य रूप आलोकित करता, प्राची का उजियारा।।

सान्ध्य-परी अपने कदमों से, भू पर केसर घोले
पुनः नीड़ को आते पंछी, अपने ‘पर’ को तोलें ।
हेम-मुकुट नगराज सुशोभित, चरणन सिंधु किनारा।।

भारत की धरती

विनीता मिश्रा
लखनऊ, भारत

यह जो भारत की धरती है,
वो सबको धारण करती है।
ऊँच-नीच पहचाने ना,
सबको प्रेम से वरती है।
हाँ! यह भारत की धरती है।।

जब संताप सताता है,
और मन सबका घबराता है।
शरण में जो भी आ जाता,
संताप सभी का हरती है।
हाँ! यह भारत की धरती है।।

गीता का ज्ञान सिखाती है,
मंगल गीतों को गाती है।
नित नए-नए त्योहारों से
जोश यह जन में भरती है।
हाँ! यह भारत की धरती है।।

कौसानी में स्वर्ण सी दमके,
दक्षिण में रत्नों सी चमके।
संगीत सुरों से भरने को,
झरने सी झर-झर झरती है।
हाँ! यह भारत की धरती है।।

मेघालय में मेघ सदन,
अरुणाचल के अरुण नयन।
आसाम की लोहित लहरों में,
मेघ-मल्हार को रचती है।
हाँ! यह भारत की धरती है।।

दुर्दिन भी इस पर आते हैं,
काले बादल मँडराते हैं।
यह खून के आँसू रोती है,
मानवता जब-जब मरती है।
हाँ! यह भारत की धरती है।।

मैं भारत हूँ

विष्णु शास्त्री 'सरल'
चम्पावत, उत्तराखण्ड, भारत

मैं भारत हूँ आर्यावर्त कहा जाता था,
नाम विश्व में मेरा सर्वप्रथम आता था।

मेरी पुण्य धरा में कई विदेशी आये,
सदा उन्होंने स्वहित नियम-कानून बनाये।

कहकर हिन्दुस्तान मुझे तब गया पुकारा,
छीन लिया अतुलित वैभव-सुख अपना सारा।

बात नहीं कोई था मेरी सुनने वाला,
असहनीय ही होता गया हृदय का छाला।

जहाँ दुग्ध-दधि-घृत की सरिताएँ बहती थीं,
वेद-ऋचाएँ प्रतिपल ही गुंजित रहती थीं।

सुरसंस्कृति की जलने से नित ज्योति निराली,
दूर छिपी रहती थी दुःख की रजनी काली।

कालान्तर में अंग्रेजों ने की मनमानी,
फूट परस्पर देख हुई उनको हैरानी।

मुझे दासता के बंधन में था तब डाला,
मेरे अधिकारों में लगा सहज ही ताला।

अलग 'इण्डिया' सम्बोधन से गया पुकारा,
और उन्होंने हेय दृष्टि से मुझे निहारा।

धीरे-धीरे बढ़ी एकता परिजन जागे,
खड़े हुए सर्वस्व त्यागकर उनके आगे।

बलिवेदी पर चढ़े असंख्य वीर उत्साही,
नई क्रांति की राह युवाओं ने अपनाई।

सत्य-अहिंसा का भी अविरल लिया सहारा,
आज़ादी का लगा चमकने फिर ध्रुवतारा।

गाँधी जी ने बिना किसी आयुध ललकारा,
बहने लगी स्वदेश-प्रेम की पावन धारा।

बर्बर-कारा से स्वतंत्रता तब मिल पायी,
दिशा-दिशा, मेरे घर-आँगन खुशी समाई।

किन्तु स्वार्थ में किया गया मेरा बँटवारा,
मेरे हृदयस्थल पर शीघ्र चलाया आरा।

संविधान का रूप सामने सबके आया,
प्रजातंत्र का यहाँ नया परचम लहराया।

पुन: अहर्निश मैंने आगे कदम बढ़ाया,
अखिल विश्व को निज अर्जित वर्चस्व दिखाया।

संकट के तूफान कई आये, टकराया,
नहीं किसी के आगे मैंने शीश झुकाया।

जिस प्रतिवेशी ने भी मुझ पर आँख उठाई,
साहस उसका चूर हो गया मुँह की खायी।

कोरोना से लिया मोर्चा हार न मानी,
शक्ति अपरिमित निज संस्कृति की सबने जानी।

योग और अध्यात्म ज्ञान की व्यापकता ने,
किये स्वयं तय जीवन-जीने के पैमाने।

मैंने आज स्वावलंबन की अलख जगाई,
रोजगार की दूर हो रही है कठिनाई।

कोरोना का टीका भी है स्वयं बनाया,
उसे सहर्ष विदेशों तक भी है पहुँचाया।

मैं भारत हूँ, सबको आश्रय देता आया,
प्रेम-दया का सागर इस उर में लहराया।

पल-पल ही परहित में तत्पर मैं रहता हूँ,
रहो प्रेम से, रहने दो सबसे कहता हूँ।

मेरे हैं सब हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई,
रहते सदा परस्पर मिलकर भाई-भाई।

मेरा भारत

शुभ्रा माहेश्वरी
बदायूं, उत्तर प्रदेश, भारत

ऊँचे पर्वत औ शिखरों से आच्छादित है मेरा भारत।
मेरी आन-बान-शान है, पहचान है मेरा भारत।।
अभिमान, स्वाभिमान, सम्मान है ये मेरे लिए,
वीर औ' वीरांगनाओं की अनुपम खान है मेरा भारत।।

अभिनव संपदाओं का उपहार है मेरा भारत।
संवेदनाओं का स्पर्शीय अहसास है मेरा भारत।।
इसकी अनुपम छटा, अजब-गजब निराली है,
कवि, साहित्यकार, वैज्ञानिक सबका भंडार है भारत।।

हिमाचल, मध्य प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान औ गुजरात।
हरेक प्रदेश की छटा ही निराली है अजब मतवाली है।।
भारत की गाथा, महत्ता तो शब्दांकित हो नहीं सकती,
भारत की संस्कृति व सभ्यता अनुपमेय और निराली है।।

अकिंचन मैं

शैल अग्रवाल
बरमिंघम, यू.के.

ओ
देश
आसान
भी तो नहीं
संजो पाना यूँ
चुन चुनकर
भाव सुमन सारे
गूंथना फिर माला में
महकती गमकती जो
हो ही तुम्हारे वक्ष लायक
अर्पित तुम्हें आधी अधूरी
अर्चना यह नेह डूबी
मर्जी है अब तुम्हारी
स्वीकार लो या नहीं
शरण में आई
अकिंचन मैं
द्वार पर
खड़ी हूँ
कब
से...

वृक्षों में वट वृक्ष सदृश मैं भारत हूँ

संजीव वर्मा 'सलिल'
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

जड़ें सनातन ज्ञान आत्मा है मेरी
तन है तना समान सुदृढ़ आश्रयदाता।
शाखाएँ हैं प्रथा पुरातन परंपरा
पत्ता-पत्ता जीव, गीत मिल गुंजाता।
पंछी कलरव करते, आगत स्वागत हूँ,
वृक्षों में वट वृक्ष सदृश मैं भारत हूँ।

औषध बन मैं जाने कितने रोग हरूँ
लकड़ी बल्ली मलगा अनगिन रूप धरूँ।
कोटर में, शाखों पर जीवन विकसित हो
आँधी तूफ़ाँ सहता रहता अविचल हो।
पूजन व्रत मैं, सदा सुहागन ज्योतित हूँ,
वृक्षों में वट वृक्ष सदृश मैं भारत हूँ।

हूँ अनेक में एक, एक में अनगिनती
सूर्य-चंद्रमा, धूप-चाँदनी सहचर हैं।
ग्रह-उपग्रह, तारागण पवन मित्र मेरे
अनिल अनल भू सलिल गगन मम पालक हैं।
सेतु ज्ञान विज्ञान मध्य, गत-आगत हूँ,
वृक्षों में वट वृक्ष सदृश मैं भारत हूँ।

वेद पुराण उपनिषद आगम निगम लिखे
ऋषियों ने मेरी छाया में हवन करे।
अहंकार मनमानी का उत्थान-पतन
देखा, लेखा ऋषि पग में झुकता नृप सिंहासन।
विधि-ध्वनि, विष्णु-रमा, शिव-शिवा तपी-तप हूँ,
वृक्षों में वट वृक्ष सदृश मैं भारत हूँ।

विश्व नीड़ में आत्म दीप बन जलता हूँ
चित्र गुप्त साकार मूर्त हो मिटता हूँ।
जगवाणी हिंदी मेरा जयघोष करे।
देवनागरी लिपि जन-मन हथियार सखे!
सूना अवध सिया बिन, मैं भी दंडित हूँ,
वृक्षों में वट वृक्ष सदृश मैं भारत हूँ।

अनुपम भारत

सुलोचना शर्मा
बूंदी, राजस्थान, भारत

रूपल सोनल किरीट हिमालय
शांत सौम्य शीतल ये आलय
कण-कण औषध का देवालय
स्वागत प्रथम करे सवेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा...

सजग प्रहरी तुंग शिखर है
रिपु रौंदता थार प्रखर है
प्रबल वारिधि तिहुँ ओर है
पश्चिम घाट वनों का डेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा...

गुरु पुरखों से यही सुना है
सब ऋतुओं ने इसे चुना है
शरद, हेमंत, बसंत बुना है
शीत, ग्रीष्म, बरखा का फेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा...

सप्त भगिनी का गठबंधन
संपदा संस्कृति का आलिंगन
सुंदरवन करता अभिनंदन
मेघों का है यहाँ बसेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा...

कत्थक भरतनाट्यम् यहीं हैं
बीहू मोहिनीअट्टम यहीं है
राउफ कुटियाट्टम यहीं है
गरबा, भंगड़ा, घेर घुमेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा...

रामायण गीता गीतगोविंदम्
अष्टाध्यायी बुद्धचरित्रम्
राजतरंगिणी अर्थशास्त्रम्
धर्म,संस्कृति, ज्ञान घनेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा....

कहीं अहिंसा कहीं ताव है
कहीं धूप तो कहीं छाँव है
फिर भी मेरा यही ठाँव है
स्वदेश बिना जग लगे अँधेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा...

तीन रंग और चक्र एक है
अखण्ड देश संविधान एक है
धर्म जाति का मान नेक है
देश प्रेम ने हर मन घेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा...

बृहद् राष्ट्र गणतंत्र यही है
जन-जन प्रिय लोकतंत्र यही है
नहीं गुलाम स्वतंत्र यही है
जो हक मेरा वही है तेरा
ऐसा अनुपम देश है मेरा!

राष्ट्र गान

सुषमा नैय्यर
लखनऊ, भारत

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
अखंड तू, प्रचंड तू, शांत-शीतल तू सदा

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
डमग डमग डमग डमग प्रचंड तू शिव मंत्र-सा

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
विनाश है तू शत्रु का, मित्र तू हर अश्रु का

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
तू मेघ है, तूफ़ान है, तू गगन है इस धरती का

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
तू गान उच्च, तान उच्च, प्रतिबिंब तू सन्मार्ग का

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
तू है तो विश्वधर्म है, तू विश्वगुरु बनकर खड़ा

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
प्रचुर प्रताप से प्रच्छन्न प्रतिमान प्रभूत प्रदीप्त प्रभा

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
प्रशस्त प्रवीण अति प्रगल्भ मूर्धन्य ज्यों प्रतिपदा

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
तू प्राण रूप, प्राण सम, तू प्रच्छन्न प्राण सृष्टि का

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा
प्रतिबिंब है, प्रतिरूप है, प्रणेता विश्व का सदा

जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!
जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र हे, जय राष्ट्र तव नमन सदा!

मैं अपनों का भारत हूँ

सूर्यकांत सुतार 'सूर्या'
दार-ए-सलाम, तंजानिया

मैं सिर्फ़ लेखक की क़लम से
निकली स्याही नहीं
जो किताबों पर जम कर बैठ जाऊँ

मैं उन असंख्य भारतवासियों की
कल्पनाओं वाले शब्दभावों
में उमड़ते प्रेम सागर की
लहरों से जीवित हो उठने वाले
अलंकारों का संचार हूँ

अपने विचारों को उड़ान देकर
जीवन की असंख्य धरोहरों को
छूने की प्रेरणा हूँ

सादगी और सरलता से गढ़े
हुए एहसासों की आवृत्ति को स्पष्ट
आयाम देने वाला एक समाधान हूँ

खुशी का गीत हूँ, विरह का संगीत हूँ
बाबा का मीत हूँ, माँ की जीत हूँ
बहन की प्रीत हूँ, जीने की रीत हूँ

लेखक का ईमान हूँ, पाठक की जान हूँ
कमजोर की ताकत हूँ, जवानों की आन हूँ
सपनो के पंख हूँ, देश की शान हूँ

घटाओं का ढंग हूँ, इंद्रधनुष के रंग हूँ
फूलों की ख़ुशबू हूँ, चिड़ियों के संग हूँ
पूनम का चाँद हूँ, किरणों के अंतरंग हूँ

स्त्री का शृंगार हूँ, घमंड की हार हूँ
श्याम कि बंसरी हूँ, राधा का प्यार हूँ
अंतर्मन का आनंद हूँ, भविष्य का सार हूँ
दर्द का एहसास हूँ, सुख की आस हूँ
दुलहन की शहनाई हूँ, शरीर की प्यास हूँ
बच्चों की किलकारी हूँ, जीवन का अभ्यास हूँ

प्रेमियों का वंदन हूँ, सुधिजन का अभिनंदन हूँ
मुनियों की भस्म हूँ, राम का चंदन हूँ
क्रोधाग्नि की आग हूँ, द्वारिका का रघुनंदन हूँ

चीखती साँसों का उल्लेख हूँ, प्रतिकार का लेख हूँ
गिरते चरित्र का शोर हूँ, पाषाण पर उत्कीर्ण अभिलेख हूँ
दरिंदगी का बखान हूँ, अधर्मी का कर्मरेख हूँ

प्रकृति का बसंत हूँ, फूलों का वासंत हूँ
हवाओं की गंध हूँ, क्रियाओं का दुसंत हूँ
कोयल का राग हूँ, आदानों का भासंत हूँ

संवेदना का अनुवाद हूँ, सर्जन का गुणानुवाद हूँ
स्वयं सिद्ध की वर्तिका हूँ, प्रशंसा का साधुवाद हूँ
खेतों की लहलहाती फ़सल हूँ, कुतर्क के वितर्क का हेतुवाद हूँ

मानव जीवन की स्वाधीनता हूँ, कालक्रम की नवीनता हूँ
अविच्छन प्रवाह की लीनता हूँ, विरासत की प्राचीनता हूँ
नख से शिखा तक पहुँचने वाली अधीनता हूँ,

स्वाभिमान का अभिमान हूँ दिलों की मोहब्बत हूँ
हौसलों की उड़ान हूँ हिमालय-सी हिम्मत हूँ
वीरों की गाथा हूँ सैनिकों के चौड़े सीने की इबारत हूँ
दुश्मनों की बिखरती गारत हूँ ऐसा मैं अपनों का भारत हूँ

मैं अपनों का भारत हूँ...
मैं अपनों का भारत हूँ...

उठ खड़ा हिन्दोस्तां

हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'
भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

आज दुनिया के मुक़ाबिल है खड़ा हिन्दोस्तां।
विश्व का सिरमौर बनने जा रहा हिन्दोस्तां।

मुल्क आँकेंगे हमें सबसे बड़ी जम्हूरियत,
और हम साबित करेंगे है बड़ा हिन्दोस्तां।

स्वर्ग का कोना यहीं है, कायनाती नेमतें,
इस जहाँ की नज़्र में, खटका मेरा हिन्दोस्तां।

हम निभाते भाईचारा अम्न उल्फ़त दोस्ती,
दाँत विषधर तोड़ना भी जानता हिन्दोस्तां।

हिमगिरी की चोटियों पर है तिरंगा झूमता,
सागरों की कोख में अब घूमता हिन्दोस्तां।

वायुसेना है हमारी आसमां को मापती,
चाँद-मंगल पर भी देखो अब खड़ा हिन्दोस्तां।

मोड़ ली है अर्थ-ताक़त विश्व की अपनी तरफ़,
स्वर्ण-पंछी देश था फिर उड़ चला हिन्दोस्तां।

देश को आज़ाद करने दे गए जो जान तक,
उन शहीदों को भला भूलेगा क्या हिन्दोस्तां।

हैं भगत, आज़ाद, बिस्मिल, आज भी इस मुल्क में,
बोस का 'जय हिन्द' अब भी बोलता हिन्दोस्तां।

हम अमन का गान गाकर, शान्ति का सन्देश दें,
गीत-ग़ज़लें शौर्य की भी गा रहा हिन्दोस्तां।

गर उठाएगा हमारे मुल्क पर उँगली कोई,
तोड़ना 'हरि' हाथ उसके जानता हिन्दोस्तां।

तुझ पर है अभिमान

हरिहर झा
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

माटी में
जिसकी महक रहा,
त्याग और बलिदान
नमन उस देश के आयुध को,
तुझ पर है अभिमान।

तेरे सीने में,
भुजबल में
दिखे कई हिमालय;
गंगा बही हृदय से
संगम, जन सागर में तय;
पार हुई
दुर्गम घाटी की ऊँचाई, ढलान।

वेश रिपु का
कितना भौंके, अपनी बेगुनाही;
कौंधी विद्युत, वीरों की तो
फैलेगी तबाही;
ज्यादा चादर फैलाने के,
नहीं चलेंगे प्लान।

सोचा, क्या?
गलवान छेड़ लो
तो होंगे हम पस्त;
ईटों का उत्तर पत्थर से,
देकर कर दें त्रस्त;
देश बचाना धर्म हमारा,
क्यों ना रिपु को भान।

केवल गाँधी,
बुद्ध समझ कर,
मत टपकाओ लार
अजगर दुम दबा कर भागे,
ऐसा होगा वार
वीरों की धमनी में
बहती विद्युत का ऐलान।

वेदने! तू क्यों न रोई

हेम चन्द्र तिवारी

अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

वेदने! तू क्यों न रोई, मौन निःस्पृह क्यों न खोई?
सिंधु की गहराइयों में, व्योम की ऊँचाइयों में,
मग्न-सा, खोया हुआ सा, खोजता खुद को खुद ही में।
देखकर ये दृश्य निर्मल, बोलकर दो शब्द कोमल,
पीर तूने क्यों न खोई, वेदने! तू क्यों न रोई?

अहर्निश प्रहरी बने जो, देशहित डटकर तने जो,
छोड़कर सब व्यस्त बाना,देश का गौरव था थामा।
कपट फिर गंभीर खाई, देखकर उनकी विदाई,
तू भी विह्वल क्यों न होई, वेदने! तू क्यों न रोई?

शब्द भी बेचैन-से हैं, पर हमें क्या चैन से हैं,
फिर लगा दो चार नारे, बढ़ चलेंगे राह प्यारे।
हमारी इस हीनता पर, अकिंचन सी दीनता पर,
तू भी लज्जित क्यों न होई, वेदने! तू क्यों न रोई?

हमारे उत्सव भी होंगे, मित्र बांधव सब मिलेंगे,
पर हमें क्या देशहित, सर्वस्व अपना खोए कोई।
स्वार्थपूरित इस प्रवृत्ति पर, अवांछित इस विवशता पर,
तू अचंभित क्यों न होई, वेदने! तू क्यों न रोई?

यह अनुक्रम कब थमेगा, हृदय सबका कब जगेगा,
क्या भरेगी फिर गुलामी, सुस्त धमनी में रवानी?
बिना भागे कब लड़ेंगे, राष्ट्र चिंतन कब करेंगे?
देख भीरूपन, निबल मन, वेदने! तू क्यों न रोई?

देशहित मरना उन्हें है, देश का लेना हमें है,
एक वे जो लौ जलाएँ, एक वे जो लौ बुझाएँ,
एक वे जो लौ लगाएँ, देश के बस गीत गाएँ,
देख उनकी वीरगति फिर, वेदने! तू क्यों न रोई?

मूक क्या अब भी रहेंगे, सब नियति पर छोड़ देंगे,
कायरों सा जी के जीवन, देश पर भारी पड़ेंगे?
कुछ यहाँ हैं अवतरण से, देश को शब्दों से बेधें,
बस विरोधी मनःस्थिति पर, वेदने! तू क्यों न रोई?

क्या कभी सब एक होंगे, शत्रु को झकझोर देंगे?
देश पर डालें नजर जो, उनकी दृष्टि नोच लेंगे।
पर यहाँ हैं भीतरघाती, गिद्ध दृष्टि ना अघाती,
संकुचित मति,नीच गति पर, वेदने! तू क्यों न रोई?

मातृभूमि से भी बढ़कर, है यहाँ क्या स्वर्ग सुन्दर,
राष्ट्रहित सर्वस्व जीवन,प्राण-पण,तन और दृढ़ मन।
खोखला जो कर रहे हैं, देश को कुछ तुच्छ दीमक,
उन अभागों की विमति पर, वेदने! तू क्यों न रोई?
वेदने! तू क्यों न रोई, मौन निःस्पृह क्यों न खोई?

हम बन सकते हैं राम!

ओमप्रकाश गुप्ता
ह्यूस्टन, यू.एस.ए.

क्या तुम बन सकते हो राम!
हाँ, तुम बन सकते हो राम!

कर लो राम-से काम तुम,
नहीं हो मर्यादा से वाम तुम,
पूरे सारे कर्त्तव्य करो,
बन जाओगे राम तुम!

दुष्टों का राम ने नाश किया,
जाकर मन में तब वास किया,
मन के दोषों का नाश करो,
यदि बनना चाहो राम तुम!

छोटों को मित्र बनाया था,
सबको प्रभु ने अपनाया था,
छोटों से जो तुम करो प्यार,
बन जाओगे राम तुम!

ऊँच-नीच का नहीं किया भेद,
शबरी को दीने भक्ति, वेद,
यदि केवट को अपनाओ,
बन जाओगे राम तुम!

राम भगवान नहीं जन्म से,
विश्व पूजता किये कर्म से,
उनके जैसे जो कर्म करो,
स्वतः राम का रूप धरो!

क्या, हम बन सकते हैं राम!
हाँ, हम बन सकते हैं राम!

घर लौटे श्री राम

कौशल किशोर श्रीवास्तव
मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया

अवधपुरी में आई दिवाली, रामलला लौटे घर आँगन,
सदियों का वनवास बिताकर, जन्मभूमि आए रघुनन्दन,
मन्दिर बने अयोध्या में, स्थापित होंगे प्रभु राम,
तीर्थ बनेगा प्रांगण फिर से, पावन पूजित धाम।
यह वर्ष है स्वाभिमान का, राम मन्दिर बन रहा,
पत्थरों के शिलाखंड पर 'सियाराम' है खुद रहा,
खोया हुआ वह ध्रुव तारा, नई ज्योति लेकर आ रहा,
विश्वास के स्तम्भ पर, गौरवशाली परिसर बन रहा।

विरासत का पुनर्जन्म है, अनुभूति है रोमांच की,
"जय श्री राम" की ध्वनि देवलोक तक जा रही,
पावन अयोध्या की धरा पर पुष्प वर्षा हो रही,
जिन्दगी सार्थक हुई, रामलीला हो रही।
दीपावली सजकर आ गयी, ऋतु उमंग की दिख रही,
लाखों दीपों की रश्मि गाथा, नभ-मंडल में फैल रही,
धर्म विभेद की दु:खद रात्रि, दीप शिखा में भस्म हुई,
देशप्रेम की लहर में, राजनीति भी सहम गई।

ऊँच-नीच का भेद भुलाकर जन-समूह उल्लसित है,
भारत की गरिमा की गूँज क्षितिज पार तक जाती है,
पुलकित हुई अयोध्या नगरी–पूजा निष्ठा अध्यात्म,
सदियों से विस्थापित थे, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम।
राम बसेंगे अपने घर में, हम भी पुष्प चढ़ाएँगे,
रामायण का पाठ सुनेंगे, मानव धर्म समझ पाएँगे,
युगों-युगों की यही धारणा, भारतवंशी की पहचान,
मन्दिर का हर पत्थर होगा, 'राम नाम' का गान।

मैं भारत का एक अंश हूँ, सागर पार बसेरा,
श्रद्धा सुमन मैं अर्पित करता, राम नाम है प्यारा,
राम कथा अमृत वाणी है, तुलसीदास की लेखनी,
आज उन्हें भी करूँ नमन, शाश्वत है राम कहानी।

महाकाल शिव

फूल चंद्र विश्वकर्मा
लुधिआना, पंजाब, भारत

हे देवों के देव महाशिव करते हैं अभ्यर्चन।
हे त्रिपुरारी हे अविनाशी महादेव हर हर वंदन।।

बारह ज्योतिर्लिंग विराजित रुद्र महेश विश्वेश्वर।
शीश गंग धर कंठ वासुकी विषपायी भोले शंकर।।

काल सदाशिव अष्टांगी से आदिदेव हो आए।
हुए स्वयंभू और अजन्मे भूतनाथ कहलाए।।

शीश चन्द्रधर तन बाघम्बर गल रुद्राक्ष की माला।
शूलपाणि डमरू सह सोहे वेश अनूप निराला।।

जग कल्याण हेतु विष पीकर नीलकंठ विख्याता।
सूत्र चतुर्दश पाकर पाणिनि व्याकरण के उद्गाता।।

अर्द्ध स्वरूप सती को देकर नारि-महत्त्व सिखाया।
कार्तिकेय लंबोदर-से सुत परिजन नेक बनाया।।

मूषक सर्प मयूर साथ में हैं विपरीत स्वभावी।
फिर भी एक साथ रहते हैं गुण आचरण प्रभावी।।

परिवारी मर्यादा में बँध कर्म निरत कर गहता।
वह ही शिव जो हर स्थिति में समभावी हो रहता।।

हो स्वभाव में भोलापन पर शक्तिवान जो नर है।
मन मस्तिष्क संयमित जिसका पीता वही ज़हर है।।

आज विश्व पीड़ित अनेक विष भ्रष्ट आचरण उग्रवाद से।
आतंकी गतिविधि चतुर्दिक नशा और युद्धोन्माद से।।

हे शिव शंकर हे अभयंकर इस जग में फिर से आओ।
वमन कर रहे विष नागों को पकड़ विश्व को आज बचाओ।।

सत्यवादी राजा हरिश्चंद्र

शालिनी वर्मा 'शिवा'

दोहा, क़तर

सत्य, निष्ठा, विश्वबंधुत्व मूल्य भारत के आभूषण हैं
कहीं न ताले लगते जहाँ, प्राचीन भारत की विरासत हैं।
नैतिक मूल्य की अद्भुत बातें, दुनिया को सिखाते हैं
जन-जन के मन में जो बसते वे संस्कार हमारे हैं।।

सदियों से पूजन करते उनका जो हमारी मान प्रतिष्ठा थे
पुराणों में पढ़ते थे कभी जो वह हमारी शान बदौलत थे।
संस्कृति के रक्षक थे वे क्षत्रिय इक्ष्वाकुवंशी सूर्यवंशी थे
हुआ न कोई फिर ऐसा, त्रिशंकु पुत्र राजा हरिश्चंद्र थे।।

महादानी ऐसे नृप थे वे, अद्वितीय वीर, सत्यनिष्ठ थे
सकल प्रजा, ब्राह्मण, नर और नारी सबके पालनहार थे।
सत्यवती-सी पत्नी तारामति और पुत्र रोहिताश के सहारे थे
सुखी जीवन था उनका पर व्यवधान कई जो आने थे।।

ऋषि विश्वामित्र नगर में आए, नृप ब्राह्मण के पग पखारे
दुनिया कहती बड़े हो दानी तुम, ऋषि कह साक्ष्य जो माँगे।
इस ब्राह्मण को क्या दे सकते हो, कह नृप को ऋषि निहारे
दानवीर ऐसे थे राजा जिनको कभी कोई लालच न घेरे।।

दानी राजा ने तनिक न सोचा, जो भी बोलें वह दे दूँगा
ले लो मेरा पूरा राज्य तिनका भी अब मैं साथ न लूँगा।
पत्नी पुत्र संग देश को छोड़ा राजपाट सब पल में छोड़ा
दक्षिणा ऋषि की अब भी बाकी कैसे चुकाएँ यह था रोड़ा।।

पत्नी पुत्र ब्राह्मण को बेच, खुद चांडाल के हाथों बिके थे
देकर खुद का मूल्य बाज़ार, ऐसे ऋषि की दक्षिणा चुकाई।
विपदा अभी अनेक थीं आनी तभी नियति यहीं न रुकी
देनी थी अभी और परीक्षा, समाप्त हुई थी एक-एक पाई।।

राजा जो थे हरिश्चंद्र आज श्मशान में शवों को ढोते
शमशान कर मालिक को देते दिनरात संस्कार वे करते।
होनी ने फिर रंग दिखाया राजा को तारा से मिलवाया
सर्प दंश ने रोहिताश को छीना कैसा समय है आया।।

श्मशान की चौखट पे पुत्र के शव को साथ में लाए
पुत्र शोक में डूबी रानी पुत्र का अंतिम संस्कार हो जाए।
‘कर’ के बिना अंतिम संस्कार न होगा ऐसा डोम कहाए
स्वामी का आदेश है करना पूरा, कैसे भी ‘कर’ चुकाए।।

सेवक धर्म या पिता धर्म विवश नृप धर्म संकट में ऐसे
हारी रानी, साड़ी फाड़ी, बोली मैंने यहाँ ‘कर’ चुकाया ऐसे।
दुखी राजा-रानी ने पुत्र संग आत्मदाह की कर ली तैयारी
आकाशवाणी ने उनको रोका राजन यह परीक्षा थी तुम्हारी।।

देवगण सब सामने आए धर्म बने डोम को साथ में लाए
पुत्र तुम्हारा जीवित है राजन तुमसा न कोई दानी हो पाए।
युगों-युगों तक पृथ्वी पर सत्यवादी हरिश्चंद्र एक ही कहाए
कहानी ये हमको धर्म से ऊपर नैतिकता का पाठ सिखाए।।

सिद्धार्थ बुद्ध हुए!

स्मृति चौधरी
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

अंतर्मन में कितने द्वंद्व हुए।
सिद्धार्थ तभी तो बुद्ध हुए।।

वैभव-सुख जिसको अथाह,
निवृत्ति दुःखों से यही चाह,
अपनाई तन्मय दिव्य राह,
करुणा जागी सुन क्रंदन कराह,
सुखी मनुजता को करने फिर,
निज सुख से मुक्त विरक्त हुए,
सिद्धार्थ तभी तो बुद्ध हुए।

जीवन का सत्य समझने को,
प्रश्न जटिल हल करने को,
आत्मदीप बन जलने को,
मुक्तिपथ वह वरने को,
बंधन माया के काटे थे,
कब मोह पाश में अनुरक्त हुए,
सिद्धार्थ तभी तो बुद्ध हुए।।

आर्यसत्य को खोज लिया,
जग को आष्टांगिक मार्ग दिया,
मानव को मानव समझ लिया,
धम्म, संघ का मंत्र दिया,
करुणा और अहिंसा छलकी जब,
कितनों के जीवन शुद्ध हुए,
सिद्धार्थ तभी तो बुद्ध हुए।

हिंसा को जीता करुणा से था,
जन-मन जीता समता से था,
संबंध आत्मा की शुचिता से था,
जीवन की व्यावहारिकता से था,
चल पड़े भिक्षु बन उनके पीछे,
मन जिनके आत्म-निरुद्ध हुए,
सिद्धार्थ तभी तो बुद्ध हुए।।

मातृभूमि के कण-कण पर...

अमित कुलश्रेष्ठ
तारापुर, महाराष्ट्र, भारत

पंचशील के धवल कबूतर, हमने खूब उड़ाए थे,
जीओ-जीने दो के नारे, हमने खूब लगाए थे,
न रुकने की, न झुकने की,अब हमने कसम उठा ली है,
हिमगिरि के शिखरों से रणभेरी पुन: बजा ली है,
हर नापाक कदम सरहद से कतई हटा देंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

सूर्यपुत्र हम सदियों से शक्ति की महिमा जानते हैं,
भय बिन नहीं होती प्रीत, यह मूलमंत्र पहचानते हैं,
चंद्रगुप्त की सीख चाणक्य नीति यह कहती है,
तलवारों की धारों पर ही शांति सुरक्षित रहती है,
दुस्साहस मुजाहिदीन का हम सख्ती से दबा देंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

हम शांति प्रवर्तक, शांतिदूत, शांति के ही अनुगामी हैं,
हिंसापूरित संस्कृति के कभी न हम तो हामी हैं,
हम रहते हैं चुप, मगर अंदर से तूफ़ान हैं,
दया–नम्रता के भाव मगर नहीं दुर्बलता का नाम है,
गर वे समझे तोप की भाषा, वह भाषा सिखला देंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

पुरुषार्थ आँकने यदि भारत का घुसपैठी कोई आया है,
सिकंदर महान या गौरी सबने शीश झुकाया है,
तुम-सा नहीं कापुरुष, हम सीने पर गोली हैं झेलते,
अब्दुल हमीद का देश यही है,जो जिंदे टैंक दफन कर देते,
लिए तिरंगा हाथ में तेरा नामो-निशाँ मिटा देंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

अंग–भंग कर तूने पशुता का नंगा नाच किया,
फिर भी हमने धैर्य और संयम का ही साथ दिया,
तेरे इन कुकृत्यों से क्या धर्म ध्वजा का कहीं रुका है,
काफिला ये शेरों का है, श्वानों से ये कब रुका है,
हर बच्चे को कैप्टन कालिया और बत्रा हम बना देंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

अरे, नारी यहाँ की क्षत्राणीं और वीर राजपूतानी है,
जाने कितनी लक्ष्मीबाई, कितनी हाड़ारानी हैं,
भारत की ये अग्निशिखाएँ काली-दुर्गा की अवतार हैं,
जो हँसकर बलि कर देतीं अपना प्रेम-दुलार हैं,
रणक्षेत्र इनके जौहर का हम अग्निकुण्ड बना देंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

जोश युवा का वीर शिवा–सा थर्राता आकाश है,
पहन बसंती चोला वह तो करता अट्टहास है,
सुभाष-भगत से वीरपुत्र इस मातृभूमि की शान हैं,
राणा के रणधीरों से सुवासित धाम हैं,
यदि जरूरत पड़ गई तो हम घास की रोटी खा लेंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

इस मिट्टी का कर्ज है हम पर, आओ चलो उतार चलें,
भस्म शहीदों की मलकर, हम अपना भी शृंगार करें
किया समर्पित कल जिन्होंने कि आज हमारा बचा रहे,
सुहाग माता-बहनों का सदा माँग पर सजा रहे,
अपने भाल पर लहू शहीद का, चंदन समझ लगा लेंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

हमें कसम है उन सैनिकों की, जो सेज छोड़ चले जाते हैं,
हमें कसम है उन वीरों की, जो लौट के घर न आते हैं,
हमें कसम है उन आँखों की, जो इंतजार में भूखीं हैं,
हमें कसम है उस मेंहदी की, जो अब तक न सूखी है,
हमें कसम है भारतमाता के चरणों पर शीश चढ़ा देंगे।
मातृभूमि के कण-कण पर हम अपना रक्त बहा देंगे।।

भारत माता

आभा मेहता 'उर्मिल'
अहमदाबाद, भारत

भारत माता की सुंदरता से, हर्षित मेरा प्रतिपल है।
वृक्षों से आच्छादित धरती, हरियाला जिसका आँचल है।

हेमंत, बसंत, शिशिर जैसी, ऋतुएँ जन में आह्लाद भरें।
वैविध्य पूर्ण फसलें इसकी,पालन पोषण कर पुष्ट करें।
कल-कल करते मीठे झरने,उन्मुक्त घटा भी श्यामल है।

घाटी फूलों से सुरभित है,पर्वत-पर्वत हुँकार भरें,
बहते हैं मंद समीर यहाँ,भँवरे मधुरिम गुँजार करें।
गंगा निर्मल अरु स्वच्छ बहे, पावन सुमिरन यमुना जल है।

हैं तीन महासागर घेरे,अरु मुकुट हिमाचल निर्भय है।
बहुमूल्य खनिज हीरे माणिक, औ' रत्न प्रसूता की जय है!
इसके वैभव से गर्वित हूँ, देवों का प्रिय क्रीड़ास्थल है।

मातृ भारत

आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

हे
मातृ
भारत!
मेरा दिल मेरे प्राण,
और अरमान हो मेरे।
आशा तुम, अभिलाषा भी हो,
जीवन-मूल्यों की परिभाषा हो।
मुख में मीठा बताशा भी हो।
और हो पहचान मेरी,
मेरी रग का लहू हो,
अंत:श्वास-बहु हो।
नाम-काम-धाम,
निष्काम मेरे,
हो स्पंदन,
चंदन,
ज्योति
हो।

भारत माता

चंद्रेश कुमार छतलानी
उदयपुर, राजस्थान, भारत

तेरे नयनों में भर आये नीर,
तो लहू मैं बहा दूँ माँ।
न्योच्छावर तुझपे जीवन करूँ,
क्या जिस्म क्या है जाँ।

तू धीर गंभीर हिमाला को,
मस्तक पे धारण करे।
तू चंचल गंगा जमुना का
प्रतिक्षण वरण करे ।
विविध भी एक है, देख ले चाहे जहाँ।

जब उठा के लगा लें,
हम मस्तक पे धूल।
बसंत है चारों तरफ,
खिलें मुस्कान के फूल।
नफरत भी बन जाती है, प्रेम का समाँ।

तेरे बेटों की ओ माँ!
बस यही है आरजू।
माटी को महकाने की,
करें हर पल जुस्तजू।
प्रेम की बरसात करें, अगर नफ़रत का उठे धुआँ।

भारत माँ-मातृभूमि-वंदन

चन्द्रकान्त पाराशर
झाकडी, शिमला, भारत

सदा ऋणी इस पावन धरा का
करता भारत माँ-मातृभूमि-वंदन।

माँ की ममतामयी गोद-सा मेरा वतन
जिसमें साँस शुरु कर आँखें खोलीं, हाथ पाँव पसारे,
एक और आत्मा ने जीव रूप मानव देह धरा
धन्य हुआ, जन्मों के कर्मों का सुफल मिला।

ममतामयी माँ का आत्मिक संचार पाकर
खिल उठा साँसों का ताना-बाना,
सुकोमल मखमली आगोश की गर्माहट
पलक झपक कर करुणामयी को निहारा,
और निश्चिंत हो पलक मूंद कर सो गया
गहरे और गहरे, मानो कोई चिंता नहीं रही
दुनियावी सरोकारों की।
इसी माटी-गोद में बसता रस लावण्य का,
छिपा है अमृत-रस ममता से सराबोर।
असंख्य बिम्ब गुरु-गरिमा से युक्त आख्यानों में,
जैसे हो एक पूरी किताब परंपरा-संस्कारों की।

वात्सल्य भरा कोमल स्पर्श,
करुणा भरी पर-दुःख-कातर दृष्टि।
बुरी हवाओं से बचाते दृढ़ हाव-भाव,
अदृश्य दृष्टि से बींधती सृष्टि-वितान को,
माँ व मातृभूमि सदैव हैं एक, रहेंगी एक।

सदा ऋणी इस पावन धरा का
करता भारत माँ-मातृभूमि-वंदन।

आज़ादी

रचना चतुर्वेदी
हैदराबाद, भारत

मैं 'आज़ादी' बोल रही हूँ,
राज़ अनोखे खोल रही हूँ।
आज बुढ़ापे में मैं अपने,
मन की बातें बोल रही हूँ।
क्या खोया क्या पाया मैंने,
अपने दिल में तोल रही हूँ।

भारत माता की बेटी मैं,
बड़े जतन से जन्मी थी।
खून बहाया वीरों ने तब,
मैंने आँखें खोलीं थीं।
मुझे देखकर हर्षित होकर,
पुलक उठा था सबका मन।
जो चाहा था, वह पाया है,
यही सोचता था जन-जन।

किंतु नहीं मैं थी 'मंज़िल' जो,
पाकर कोई रुक जाता।
ना ही मैं 'मनमानी' थी जो,
सबके मन को भा जाती।
ना मैं थी 'कठपुतली' केवल,
ताकतवर के हाथों की।

मैं जन्मी थी अपनी माँ की,
सच्ची सेवा करने को।
उसके जन-मन में विकास की,
इच्छा अमर जगाने को।
सबका हो उद्धार ज्ञान से,
इसकी ज्योति जगाने को।

हर बालक जब भारत माँ का,
नहीं रहेगा भूखा-नंगा।
और जिएगा अपने बल पर,
बिना किसी सहारे के।
तब मेरे घावों पर मन के,
मरहम-सा लग जाएगा।
हाँ, मरहम-सा लग जाएगा।
मुझमें नवजीवन आएगा।

भारत माता की संतान

रचना चतुर्वेदी
हैदराबाद, भारत

भारत माता देख रही है,
मन ही मन यह सोच रही है।
मेरे चिंटू मिंटू सारे,
कितने सुंदर, कितने प्यारे।
दो रंगों की आँखों से ये,
सपने देख रहे सतरंगी।
सपनों को सच करने को ये,
आकुल, आतुर, व्याकुल से।
रंग खोजते, कलम खोजते,
गली-गली में भटके से।
कभी निराशा से लड़ते ये,
कभी अभावों से बाज़ी।
सपनों के कनकौए कटते,
कभी डोर कम पड़ जाती।
कभी नाव में छेद हुआ तो,
कभी धार ही बढ़ जाती।
पर मेरे ये चिंटू मिंटू,
हारे हैं ना हारेंगे।
सपनों को सच करने का दम,
मन के भीतर खोजेंगे।
नए दौर की नई कहानी,
नई कलम से लिखेंगे।

देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे

शुभ्रा ओझा
डिअरफील्ड, इलिनॉइ, यू.एस.ए.

रहें कही भी हम दुनिया में
हमेशा दिल में तुमको रखेंगे।
भूल जाएँ भले सारी बातें
तेरा नाम जबाँ पर रखेंगे।
देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे!

तुम्हारी शान में लिखेंगे गीत कई
बच्चों को सुनाया करेंगे।
परदेश में बताएँगे आर्यावर्त की गौरव गाथा
सम्मान में तुम्हारे सदैव सिर उठाएँगे।
देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे!

सभी त्योहारों के संग राष्ट्रीय पर्व
हर साल हम मनाएँगे।
रहें भले अपनी माटी से दूर
राष्ट्र-गान ससम्मान हम गाएँगे।
देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे!

तीन रंगो को सँजोएँगे दो चक्षुओं में
लाखों के बीच तिरंगे को चीन्ह जाएँगे।
याद रखेंगे वीरों की कुरबानियाँ
हर हाल में भारत का मान बढ़ाएँगे।
देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे!

निभाएँगे हर धर्म भारतीयता का
पूरे विश्व को कुटुम्ब बनाएँगे।
बना रहे भारत से रिश्ता हर हाल में
इसलिए भारतवंशियों को संस्कृति समझाएँगे।
देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे!

सात समंदर पार रहकर भी
घरों को अपने देशी चीजों से सजाएँगे।
ढूँढ लेंगे अपनों को इस सरज़मीं पर
कुछ इस तरह हम रिश्ते बनाएँगे।
देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे!

कर्मभूमि हो भले कोई राष्ट्र
मातृभूमि से ही सदैव जाने जाएँगे।
कहीं से, कभी भी पुकार लेना तुम
हर हाल में भारत की बेटी का फ़र्ज निभाएँगे।
देश मेरे, तुझे अपनी माँ कहेंगे।

भारत माता! कोटि प्रणाम

श्याम बहादुर श्रीवास्तव
जालौन, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत माता! कोटि प्रणाम!
अनगिन सुषमाओं संवेष्ठित तेरी कीर्ति ललाम।

अमृत नीर निर्मल सरितायें,
खेलें गोद धान्य उपजायें,
फल-फूलों-औषधियों वाले बाग-वनों की धाम।

है भाषा हिन्दी दिव्यात्मा,
पावन संस्कृति गौरव-गरिमा,
सभी धर्म-भाषाओं की हो परम रम्य आयाम।

धन्य-धन्य हैं भाग्य हमारे,
भारत माँ! हम लाल तुम्हारे,
ऋषि-मुनि-देव-महापुरुषों की हो पुनीत अभिराम।

माँ! असीम उपकार तुम्हारे,
हैं जीवन-आधार हमारे,
होगा जन्म सार्थ यदि आयें रंच तुम्हारे काम।

धर्म-कर्म वीरों की माता,
सकल विश्व सिर तुम्हें झुकाता,
वर दे, हम हों सभी एक मन, भारतीय हो नाम।

भारत माँ को नमन करें

संजीव वर्मा 'सलिल'
जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

आओ, हम सब एक साथ मिल
भारत माँ को नमन करें।
ध्वज तिरंगा मिल फहराएँ
इस धरती को चमन करें.....

नेह नर्मदा अवगाहन कर,
राष्ट्र-देव का आवाहन कर।
बलिदानी फागुन पावन कर,
अरमानी सावन भावन कर।

राग-द्वेष को दूर हटाएँ
एक-नेक बन, अमन करें।
आओ, हम सब एक साथ मिल
भारत माँ को नमन करें......

अंतर में अब रहे न अंतर
एक्य कथा लिख दे मन्वन्तर।
श्रम-ताबीज़, लगन का तंतर
भेद मिटाने मारें मंतर।

सद्भावों की करें साधना
सारे जग को स्वजन करें।
आओ, हम सब एक साथ मिल
भारत माँ को नमन करें......

काम करें निष्काम भाव से,
श्रद्धा-निष्ठा, प्रेम-चाव से।
रुके न पग अवसर अभाव से
बैर-द्वेष तज दें स्वभाव से।

'जन-गण-मन' गा नभ गुंजा दें
निर्मल पर्यावरण करें।
आओ, हम सब एक साथ मिल
भारत माँ को नमन करें......

जल-रक्षण कर पुण्य कमाएँ,
पौध लगायें, वृक्ष बचाएँ।
नदियाँ-झरने गान सुनाएँ,
पंछी कलरव कर इठलाएँ।

भवन-सेतु-पथ सुदृढ़ बनाकर
सबसे आगे वतन करें।
आओ, हम सब एक साथ मिल
भारत माँ को नमन करें......

शेष न अपना काम रखेंगे,
साध्य न केवल दाम रखेंगे।
मन-मन्दिर निष्काम रखेंगे,
अपना नाम अनाम रखेंगे।

सुख हो भू पर अधिक स्वर्ग से
'सलिल' समर्पित जतन करें.
आओ, हम सब एक साथ मिल
भारत माँ को नमन करें......

भारत भूमि

सुषमा नैय्यर
लखनऊ, भारत

है
भूमि
भारत,
देखी जहाँ
भक्ति नवधा,
कुटुंब वसुधा,
नवग्रह, नौ रस,
नवरत्न परस्पर,
जुड़ी हुई जीवन रेखा,
निर्देशों और नियमों पर,
जीवन-पर्यंत, मृत्योपरांत
सब निर्दिष्ट है जहाँ पर।
चंद्र-रवि, दिन व रात,
ओंकार का दिशा नाद,
षड्ऋतुओं का स्वाद,
आहार-विहार,
योग व मंत्र,
अनुसार
नियम
सब
है।

मातृभूमि मेरी!

स्मृति चौधरी
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

हे मातृभूमि मेरी,
हे पितृभूमि मेरी।

हिमगिरि महान तेरा,
कितना विशाल घेरा।
गंगा की धार पावनी,
घाटी सुखद सुहावनी।
आभा नगेन्द्र विस्तृत,
चेतन फुहार संचित।
रचना सुदिव्य तेरी,
हे मातृभूमि मेरी।

दक्षिण महान सागर,
जलनिधि अथाह आगर।
प्राच्य हिन्द संज्ञा,
प्रख्यात विश्व प्रज्ञा।
इतिवृत्त दिव्य चिन्मय,
अध्यात्म तत्त्व निश्चय।
मण्डल अवनि बिखेरी,
हे मातृभूमि मेरी।

गाथा महान अनुपम,
संस्कृति प्रवाह संगम।
वैदिक प्रखर ऋचाएँ,
ऋषियों का गान गाएँ।
चैतन्य तत्त्व वैभव,
योगाग्नि दिव्य संभव।
कथाएँ आदर्श उकेरीं,
हे मातृभूमि मेरी।।

गीता हमें सिखाये,
निज कर्मपथ बताये
जीवन का ज्ञान सारा,
गीता का है हमारा।
नीति न्याय सतपथ,
दर्शन विचार आव्रत।
गाथा महान तेरी,
हे मातृभूमि मेरी।।

करुणा, अहिंसा, संयम,
अष्ट योग संगम।
बुद्ध की जो वाणी,
पाते हैं शांति प्राणी।
सूत्र सब निराले,
हैं शांति के उजाले।
संस्कृति महान तेरी,
हे मातृभूमि मेरी।।

स्वर्णिम किरीट आभा,
गौरव से उच्च माथा।
कवियों ने गीत गाये,
रस प्राण सब समाये।
नानक, कबीर, मीरा,
रसखान भक्ति हीरा।
अद्भुत कहानी तेरी,
हे मातृभूमि मेरी।

बलिदान की कथाएँ,
कण-कण यहाँ सुनाये।
राणा महान कितने,
गोरा-बादल वीर अपने।
नेता सुभाष त्यागी,
आजाद क्रांति साथी।
निराली शान तेरी,
हे मातृभूमि मेरी।

अनुपम प्रकृति सलोनी,
वसुधा हरित सुहानी।
नदियों की है कहानी,
पावन पवित्र पानी।

ऋतुराज जब उतरता,
परिवेश नव सँवरता।
आभा पीत तेरी,
हे मातृभूमि मेरी।

समता का भाव जागे,
दुर्भाव दैन्य भागे।
भर दो प्रकाश सब में,
जन के विचार मन में।
हो अखंड राष्ट्र अपना,
साकार हो यह सपना।
हो समृद्धि की उजेरी,
हे मातृभूमि मेरी।

कवि सूची

अमित कुलश्रेष्ठ	2, 205
अम्बे कुमारी	22, 58
अर्चना प्रकाश	156
अलका प्रमोद	4, 157, 158
अवधेश प्रसाद	123
आभा मेहता 'उर्मिल'	207
आरती 'लोकेश'	6, 140, 159, 208
इन्दु गुप्ता	7, 86
उर्मिला देवी चौधरी	24, 124
उषा अवस्थी	87
ओमप्रकाश गुप्ता	1, 45, 142, 160, 199
कमलेश भट्ट कमल	126
कलणि विहंगा पनागॉड	25
कामिनी व्यास रावल	60, 161
काशवी दत्ता	73
कुलवंत सिंह	127
केदार शर्मा 'निरीह'	162
कैलाश गिरि गोस्वामी	164
कौशल किशोर श्रीवास्तव	143, 200
कौसर भुट्टो	144
चंद्रेश कुमार छतलानी	209
चन्द्रकान्त पाराशर	210
जय कृष्णा मिश्रा 'चैतन्य'	165
जीवन सिंह दानू इरेश	88
ज्योति सागर 'सना'	145
डी.पी.सिनालि नदीपमा पतिरण	166
दीप्ति अग्रवाल	147
दीप्ति मिश्रा	167
दुर्गा सिन्हा 'उदार'	89, 90
देवयानी 'रानी'	128
नमिता सिंह 'आराधना'	9, 26
नितीन उपाध्ये	10, 46
नितेश शाह	92
निर्मला सिंह	148
निहाल चन्द्र शिवहरे	93
नीना छिब्बर	168
नीलम झा	27, 170
नीलम भास्कर	29
नीलिमा तिग्गा	30
पायल गुप्ता 'पहल'	31
पिंगलेश कचौले	94, 172
पुरुषोत्तम श्रीवास्तव 'पुरु'	11
पूनम मिश्रा	32
प्राची पाठक	61
प्रेम लता कोहली	74
फूल चंद्र विश्वकर्मा	201
बृजबाला गुप्ता 'अर्चना'	48
मंजु तिवारी	129
मंजु शर्मा जांगिड़ 'मनी'	49
मधु गोयल	33, 95, 130

मधु चतुर्वेदी	50, 174
ममता उपाध्याय	62, 131, 176
महेश चंद्र द्विवेदी	63
महेश पँचाल 'माही'	96
माणक तुलसीराम गौड़	34
माया बंसल	98
मीनू पाण्डेय नयन	13
मीरा सिंह 'मीरा'	177
मोती प्रसाद साहू	178
रचना चतुर्वेदी	211, 212
रशीद ग़ौरी	101
रश्मि रंजन	102
रश्मि वार्ष्णेय	179, 180
राकेश मल्होत्रा	35, 64
राजेश कुमार मिश्रा	76, 85
रानी श्रीवास्तव	181
राम नेमा 'राज'	66
रामकृपाल 'कृपाल'	103
रीना काकरान	149, 182
रीना कुमारी	150
रूपा पारीक	15
रेखा भाटिया	152, 153
रेखा शर्मा	52, 53
रेणु चन्द्रा माथुर	104
रेणुका श्रीवास्तव	55, 105
वनिता शर्मा	69, 77
वर्षा शर्मा	70
विजय गिरि गोस्वामी 'काव्यदीप'	106, 183
विनीत कुमार	132
विनीता मिश्रा	107, 184
विष्णु शास्त्री 'सरल'	108, 185
वीणा पाठक	78, 109
शालिनी वर्मा 'शिवा'	202
शालोम मेंडोंसा	71
शुभदा भार्गव	133
शुभ्रा ओझा	213
शुभ्रा माहेश्वरी	187
शैल अग्रवाल	79, 111, 113, 155, 188
श्याम बहादुर श्रीवास्तव	114, 215
संगीता राजपूत 'श्यामा'	17
संजीव कुमार विश्वकर्मा	36
संजीव वर्मा 'सलिल'	189, 216
संतोष भाऊवाला	37
संदेश जैन संदेश	72, 115
सवि शर्मा 'सावित्री'	80
सारा हुसैन	19
सी. कामेश्वरी	38, 116, 117
सीमा जोशी मूथा	135
सीमा शर्मा	39, 136
सीमा हरि शर्मा	40
सुभाष चन्द्र बन्सल 'साहिल'	56, 137
सुरभि दत्त	118
सुलोचना शर्मा	191
सुषमा देवी	42
सुषमा नैय्यर	81, 119, 192, 217

सुषमा 'सौम्या'	43
सूर्यकान्त सुतार 'सूर्या'	193
सोना अग्रवाल	139
स्मृति चौधरी	204, 218
हरिवल्लभ शर्मा 'हरि'	195
हरिहर झा	21, 82, 83, 196
हरीश चंद्र सिंह गनोड़ा	84
हिरेन अरविंद जोशी 'अबोध'	120, 122
हेम चन्द्र तिवारी	197

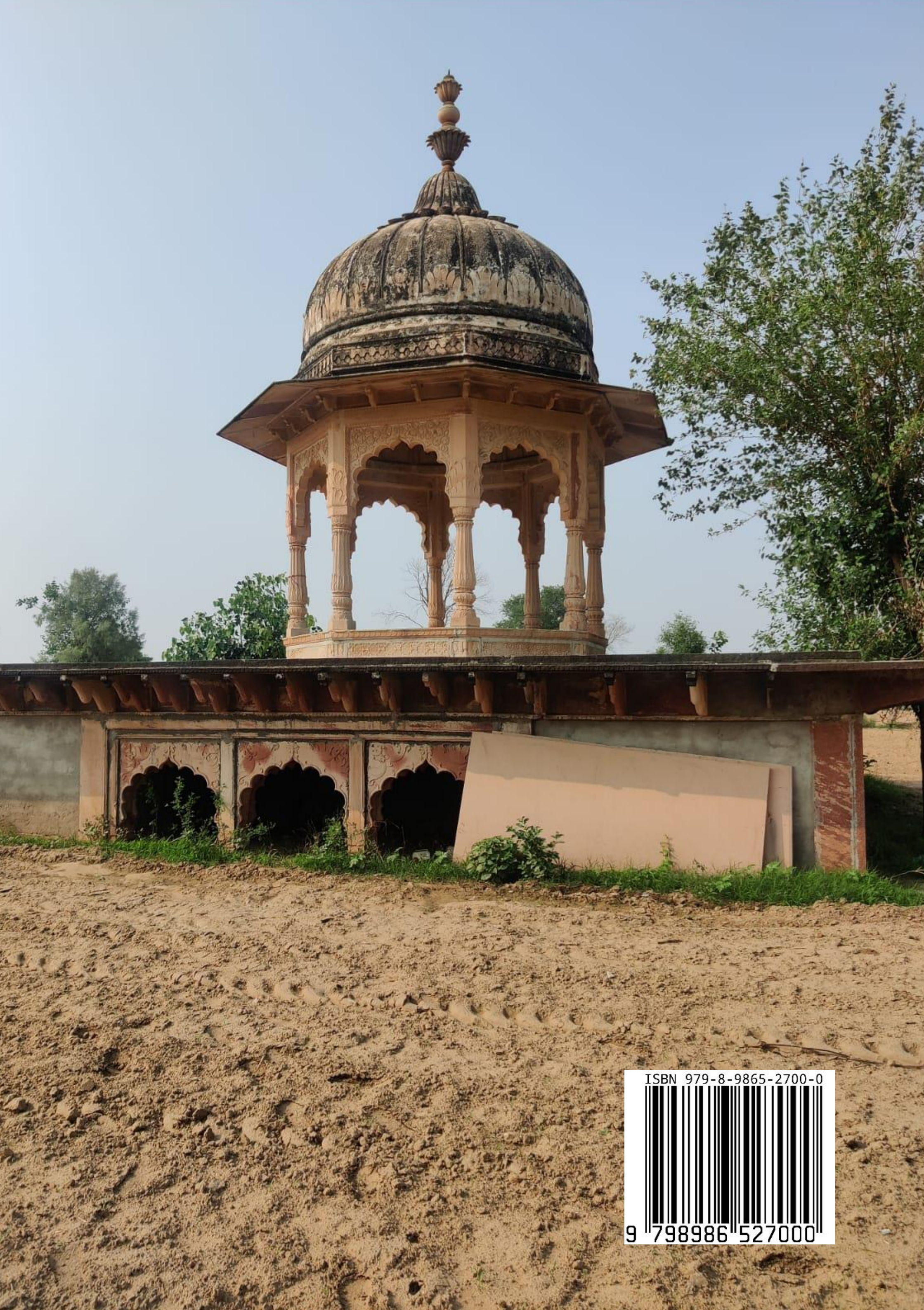

ISBN 979-8-9865-2700-0
9 798986 527000